भूमिका.

देखिये सुहृद्वर्ग— बहुत दिनोंसे मेरा विचार था. कि कोई ऐसा छोटासा ग्रन्थ खा जावे, कि जिससे सुगमतापूर्वक वर्षपत्री बन जावे, और प्रायः परमावश्यक म्पूर्ण आशय उसमें आजावै, सो आज दिन परमात्माकी कृपासे यह 'वर्षपत्री-ोपक' नाम ग्रन्थ ताजिक ग्रन्थोंमें अत्यन्त सुगम लिखकर प्रकाशित किया है, समें वर्षपत्री लिखनेका क्रम पूर्ण रीतिसे दर्शाय दिया है.

जैसे प्रथम मंगलश्लोक, आशीर्वादश्लोक, वर्षप्रवेशसमय, अनन्तर र्षकुण्डली, जन्मकुण्डली, सूर्यादि ग्रह स्पष्ट, तन्वादि द्वादशभावस्पष्ट, भाव-लित, भावविंशोपकबल, पंचवर्गी बलसाधन, वर्षविश्वा, वर्षेश व मुंथा फल, पताकी चक्र, मुद्दादशा, अन्तर्दशा, मासदशा, योगिनीमुद्दादशा, भावफल, हफल, अरिष्ट, अरिष्टभंग, मासप्रवेश, मासप्रवेशसारणी, दिनप्रवेश, प्रश्नो-रिवर्षप्रवेशसाधन इत्यादिक परमावश्यक बातें इस ग्रन्थमें लिखी हैं जो थम इस ग्रन्थका सूचीपत्र देखकर समझलीजोये, आवश्यक बात कोईभी हीं छोडी है, और जो क्रम वर्षपत्री बनानेका है, यद्यपि उसी क्रमसे जन्म-त्रीभी, बनाई जाती है. (केवल भावफल व दशाक्रम दूसराहै,) तथापि ज-मपत्री बनानेका दूसरा पुस्तक 'जन्मपत्रीप्रदीप' नामसे लिखकर प्रका-ात करूं गा, मैने विचार किया था कि वर्षपत्री व जन्मपत्री दोनोंका क्रम लसहित एकही ग्रन्थमें लिखूं गा, परन्तु केवल वर्षपत्रीकाही क्रम इतना ढगया कि ग्रन्थ कुछ बडाहोगया, अब वर्षपत्री विषयमें जो द्वादशवर्गी ग-ितागत ग्रह दृष्टि, षोडशयोग, सहम, मासप्रवेश, दिनप्रवेश, फल, आदिक तें शेष रहगई हैं, उनको दूसरे भागमें पूर्ण करेंगे, यदि विचार किया जावै ी आवश्यक बातें तो इस प्रथमही भागमें आगई, जैसे अग्निरूपदीपक को ाथमें लेकर उसके प्रकाशसे घरमेंका रक्खा हुआ सम्पूर्ण पदार्थ ढूंढ लिया ासकताहै, इसी प्रकार इस वर्षपत्री दीपकके द्वारा वर्षभरका पुरा हाल प्र-काशित किया जासकताहै, यह ग्रन्थ प्राचीन ग्रन्थोंके आधारसे लिखा गयाहै. यहांपर एक बात लिखना परमावश्यक हैं, कि वह यह ज्योतिषके प्राचीन ग्रन्थ प्रायः ज्योतिषियोंके यहां प्राप्त होंतेहैं और केवल ज्योतिषीही होनेके कारण वे ग्रन्थ उनके ारा लिखते इतने अशुद्ध होगये हैं, कि यदि व्याकरणरीतिसे उनमें अशुद्धियां देखी ावैं तो कोईभी श्लोक शुद्ध नहीं मिलता इस प्रमाणमें एक श्लोक स्मरण आयाकि-

वैयाकरणकिरातैरपशब्दमृगाः क्व यान्ति संत्रस्ताः ।
नटभटगणकचिकित्सकमुखानि यदि नो कपि [illegible] स्युः ॥

अर्थः—(प्रश्न) वैयाकरणरूपी किरातों के भगाये हुये अपशब्द रूपी मृग भयभीत होकर कहां जाते हैं,(उत्तर) नट (नृत्यलीला करने वाले) भट (योधा) गणक (अश्विन्यादि नक्षत्र गणनाद्वारा जीविका करने वाले) इनकेमुख (उन अपशब्दरूपीमृगोंके शरण जानेकेलिये) गिरिकन्दरा (पर्वतगुफा) हुये. अर्थात् जो व्याकरणसे अनभिज्ञ हैं उनके मुखमें अशुद्धियोंका निवास रहताही है ॥

यद्यपि मुझको व्याकरणमेंभी अभ्यास है और जहांतक होसका अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार श्लोकोंको शुद्धकर दिया है,तथा जहां जिन श्लोकोंका शुद्ध होना असम्भव देखा, वहां उसी आशय के नवीन श्लोक रचकर लिख दिये हैं। और सुगमतापूर्वक वर्षपत्री बनाने की इच्छा करनेवाले आप सज्जनोंके अर्थ भाषाटीका और उदाहरणभी ऐसीही सरलतासे लिख दिया हैं,कि पूर्ण प्रकारसे समझमें आजावै तथापि जहां कहीं समझमें न आवै उसको एकही बार पूछलेनेसे आपकी समझमें आजावैगा,यदि इस ग्रन्थमें पूर्ण अभ्यास हो जावै तो आप मुझकों सूचना देवै,जिससे इस ग्रन्थका दूसरा भागभी लिखकर मैं प्रकाशित करूं, और यदि आपको तत्काल आवश्यक होवै तो हमारी भाषाटीका करी हुई ' ताजिकनीलकण्ठी ' जो श्रीधरशिवलाल ज्ञानसागर छापाखाना बम्बईमें छपी है, उसको मँगाकर देखलीजिये, निश्चय है कि आपको वर्षफल कहनेमें पूर्ण शक्ति होजावैगी ॥ परन्तु आपको एक बात स्मरण रखना योग्य है कि—' पुस्तकेषु च या विद्या परहस्ते च यद्धनम् ॥ उपस्थितेषु कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ' ॥ १ ॥ अर्थात्—जो विद्या पुस्तकोंही पर रहती है और दूसरों के हाथमें जो धन रहताहै,काम पडजानेपर न वह विद्या है न वह धन है विद्या वही पूरा काम देती है जो कण्ठस्थहो, और धन वही काम देताहै जो पास हो. अन्तमें प्रार्थना है कि—यद्यपि मैंने इस पुस्तक को शुद्धतापूर्वक लिखा है, तथापि मनुष्यधर्मानुसार कहीं अशुद्धता रहगई हो,अथवा छापेके दोषसे कहीं त्रुटि रहगईहो उसको सज्जनजन क्षमा करेंगे इत्यलम् ॥

सप्त बाणाङ्कचन्द्रेऽब्दे मार्गे मास्यसिते दले ।
पंचम्यां रविवारे च ग्रन्थारम्भः कृतो मया ॥ १ ॥

सज्जनोंके प्रेमी—पं० नारायण प्रसाद मुकुन्दरामजी,
संस्कृत पुस्तकालयाध्यक्ष बांसबरेली और लखीमपुर अवध.

वर्षपत्रीदीपकविषयानुक्रमणिका.

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता.

श्रीः ॥

वर्षपत्रीदीपक.

भाषाटीकासहित ।

मङ्गलाचरण.

नत्वा गणाऽधीशपदारविन्दं नारायणाख्येन समादरेण ॥
प्रकाश्यते निर्म्मलवर्षपत्रीप्रदीपकं बालविबोधहेतोः ॥१॥

अन्वयः ॥ गणाधीशपदारविन्दं (श्रीगणेशस्य चरणकमलं) नत्वा (नमस्कृत्य) नारायणाख्येन (मिश्रनारायणप्रसादेन) समादरेण (सम्यक् आदरेण) बालविबोधहेतोः निर्मलवर्षपत्रीप्रदीपकं प्रकाश्यते इति संक्षिप्तदण्डान्वयः ॥

अर्थ—श्रीगणेशजीके चरणकमलको नमस्कारकरके ज्योतिर्वित्पण्डित नारायणप्रसादमिश्रने भलीभांति आदरपूर्वक बालबुद्धिजनोंको विशेषबोधकेहेतु निर्मल 'वर्षपत्रीदीपक' को प्रकाशितकिया अर्थात् जिनको वर्षपत्री बनानेमें अभ्यास न्यूनहै उनको वर्षपत्री बनानेमें अ[illegible]छे प्रकार बोधहोनेके निमित्त इस वर्षपत्रीदीपकनाम निर्मल ग्रन्थको प्र[illegible]शित कियाहै ॥ १ ॥

वर्षपत्रीलेखनप्रकार.

अथ शीघ्रावबोधार्थं वर्षपत्रस्य लेखनम् ॥
वक्ष्ये संक्षेपतः सम्यक् छात्राणां सुखदायकम् ॥ २ ॥

अर्थ—पहले (इस ग्रन्थके आरम्भमें) शीघ्रतापूर्वक बोधहोने के [अ]र्थ वर्षपत्रके लिखनेका अनुक्रम संक्षेपसे वर्णन करूंगा जो अनुक्रम [वि]द्यार्थियोंको भलीभांति सुखदेनेवालाहै ॥ २ ॥

आदिमो मंगलाः श्लोका आशीःश्लोकास्ततःपरम् ॥

गताऽब्दविक्रमाऽर्कस्य शालिवाहनभूपतेः ॥ ३ ॥ शकोऽयनर्तुमासश्च पक्षभेदतिथिस्तथा ॥ वारतारयुतिर्लेख्यो घटिका सपलान्विता ॥ ४ ॥ करणं दिनमानं च रात्रिमानं ततःपरम् ॥ गताऽर्कांशाऽथ भोग्यांशा ह्युदयाघटिका गता ॥ ५ ॥

अर्थ—वर्षपत्री लिखनेके समय प्रथम मंगल श्लोक फिर आशीर्वाद-श्लोक, अनन्तर महाराजा विक्रमादित्यके गतवर्ष अर्थात् सम्वत्, और शालिवाहनराजाके ॥ ३ ॥ शाके, फिर अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तथा तिथि, वार, नक्षत्र, योग, घटी पल सहितलिखना ॥ ४ ॥ फिर करण, दिनमान और रात्रिमान, तदनन्तर सूर्यके भुक्तांश फिर भोग्यांश, अनन्तर सूर्यके उदयसे वर्षप्रवेशसमय गतघटी अर्थात् इष्ट घटी पल संख्या लिखना ॥ ५ ॥

ततस्तात्कालिकं लग्नं श्रीयुतं स्वस्तिपूर्वकम् ॥ अधिकारान्वितं नाम वर्षभेदस्ततःपरम् ॥ ६ ॥ वर्षकुण्डलिका पश्चाज्जन्मकुण्डलिका ततः ॥ भयातं च भभोगं च गतैष्य दिवसादिकम् ॥ ७ ॥ सूर्यादयो ग्रहाः स्पष्टाः सजवास्तदनन्तरम् ॥ अयनांशाः सायनाऽर्कस्तस्य भोग्यांशकादि च ॥ ८ ॥ दिनखण्डं रात्रिखण्डं ततो लेख्यो नतोन्नतम् ॥ पश्चात्तन्वादयो भावाः क्रमाल्लेख्याःससन्धयः ॥९॥

अर्थ—फिर तात्कालिक लग्न लिखना. उपरान्त श्रीसहितस्वस्तिपूर्वक अधिकार और नाम वर्षभेदसमेत लिखना, तदनन्तर॥ ६ ॥ वर्षकुण्डली, पश्चात् जन्मकुण्डली, फिर भयात अर्थात् नक्षत्रगत घटीपल, और भभोग (सर्वर्क्ष) अर्थात् नक्षत्रकी समस्त घटी पल लिखना, और ग्रहोंके स्पष्टकरनेके अर्थ गत ऐष्य दिवस आदि अर्थात् वारादि

ऋणचालन अथवा धनचालन लिखना ॥ ७ ॥ फिर सूर्य आदिक स्पष्ट ग्रहगतिसहित लिखना. तदनन्तर अयनांश और सायनार्क और सायन सूर्यके भोग्य अंश आदिलिखना ॥ ८ ॥ उपरान्त दिनखंड, (दिनार्द्ध-घटीपल) रात्रिखण्ड (रात्र्यर्धघटीपल) फिर नत और उन्नत लिखना. पश्चात् तनुआदि द्वादशभाव क्रमपूर्वक सन्धियोंसहित लिखना॥९॥

ततो विंशोपकास्तेषां ग्रहाणां दृङ्निरूपणम् ॥ भावदृष्टिः समालेख्या ग्रहमैत्री ततःपरम् ॥ १० ॥ पञ्चवर्गीबलं पश्चाद्वर्षस्वामीविनिर्णयः ॥ तत्फलं भावभेदेन मुन्थाफलमतःपरम् ॥ ११ ॥ ततो भावफलं लेख्यं हर्षद्वादशवर्गिका ॥ सहमानां लिखेच्चक्रमरिष्टाऽरिष्टभंगकम् ॥ १२ ॥ सभंगराजयोगा श्च लग्नाद्भावविचारणम् ॥ ग्रहभावफलं पश्चात्सहमानां फलं ततः॥१३॥ दशागताविधानेन तत्प्रवेशाऽर्कलेखनम्॥दशाफलं मासफलं लेखनीयं क्रमाद्बुधैः॥१४

अर्थ—फिर उन भावोंके विंशोपक लिखना. फिर ग्रहोंकी दृष्टि निरूपण करना, उपरान्त भावदृष्टि भली भांति लिखकर ग्रहमैत्री लिखना ॥ १० ॥ फिर पंचवर्गी बलचक्र लिखना, पश्चात् वर्षके स्वामीका निर्णय करके भावभेदसे उसका फललिखना, तदनन्तर मुंथाफललिखना, ॥ ११ ॥ फिर भावफल लिखकर हर्षबल और द्वादशवर्गी चक्र फलसहित लिखना, फिर सहमोंका चक्र लिखकर अरिष्ट और अरिष्टभंग लिखना, ॥ १२ ॥ उपरान्त राजयोगभंगसहित राजयोगलिखना, और लग्नसे भावोंका विचार लिखना, अनन्तर ग्रहभाव लिखकर सहमोंका फल लिखना, ॥ १३ ॥ तदनन्तर विधानपूर्वक दशा बनाकर दशा प्रवेश समय सूर्य राशिआदि संयुक्तकर अर्थात् दशाप्रवेशकासमय निरूपणकरके लिखना, फिर दशाफल, मासफलआदि क्रमसे पण्डितजनोंको लिखना योग्यहै ॥ १४ ॥

यह वर्षपत्री लेखन प्रकार वर्णन किया, इसमेंसे प्रथम अत्यन्त अवश्यक बातें इस वर्षपत्रीदीपकके प्रथम भागमें लिखना योग्य समझाहै. यदि परमात्माकी कृपासे इस ग्रन्थमें रुचि स्थिर रहैगी, तो द्वितीय भागमें शेष विषयोंका उल्लेख किया जावैगा, अब आगे वर्षपत्र-सम्बन्धी परमावश्यक विषयोंका क्रमसे उल्लेख करतेहैं ॥ ॥

मङ्गलश्लोक.

यन्मण्डलं तपति विश्वजनीनमेतद्याङ्गाञ्च बिभ्रदखिलात्मगतस्य भानोः॥ भाभिर्वियद्विमलयत्सुरराजपूज्यं सन्मङ्गलं दिशतु तद्भजतां शरण्यम्॥ १ ॥ सजयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम् ॥ वासरमणिरिव तमसां राशिं नाशयति विघ्नानाम्॥ २ ॥ अतसीकुसुमोपमेयकान्तिर्यमुनाकूलकदम्बमूलवर्ती ॥ नवगोपवधूविलासशाली वनमाली वितनोतु मङ्गलानि ॥ ३ ॥ सजलजलदनीलं दर्शितोदारशीलं धृतकरतलशैलं वेणुवाद्ये रसालम्॥ व्रजजनकुलपालं कामिनीकेलिलोलं तरुणतुलसिमालं नौमि गोपालबालम्॥ ४ ॥ शिखण्डालंकारी युवतिपटहारी जलमुचां त्विषां गर्वध्वंसी सलिलतरवंशीवरधरः॥ यशोदामोदाब्धि वदनविधुलोकेन प्रथयन् स्वभक्ताज्ञापाली दिशतु वनमाली तव शिवम्॥ ५ ॥ ॥

आशीर्वादश्लोक.

नमस्ते रुण्डालं सुमुख शशिभालं मृगमदः त्रिनेत्रं दन्तैकं कुसुमरुणमालं हृदि लसन् ॥ विधाताविष्णुभ्यां विविध-

१ अस्मत्पक्षे (मम) इति पाठान्तरम्।

सुरपूज्यैः सुरपते गणाधीशं वन्दे हरतु तवे कष्टं सुखकरम् ॥ १ ॥ विघ्नेशो विधिरच्युतस्त्रिनयनो वाणी रमा पार्वती स्कन्दार्केन्दुकुजज्ञजीवभृगुजो मन्दश्च राहुशिखी ॥ नक्षत्रं तिथिवारयोगकरणं मेषादयो राशयस्तं रक्षन्तु सदैव यस्य विमला पत्री मया लिख्यते ॥ २ ॥ कल्याणं कमलासनः सभगवान्विष्णुः सजिष्णुः स्वयं प्रालेयाद्रिसुतापतिः सुतनयो ज्ञानं च निर्विघ्नताम्॥चन्द्रज्ञास्फुजिदाऽर्किभौमधिषणच्छायासुतैरन्विता ज्योतिश्चक्रमिदं सदैव भवतामायुश्चिरं यच्छतु॥३॥ गणनाथो रविमुख्यखेचराः कुलदेवीविधिविष्णुशंकराः ॥ उदयांशाधिपतिः प्रकुर्वतां चिरमायुः खलु यस्य पत्रिका ॥ ४ ॥ ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः कुर्याच्च सम्पदम् ॥ हरो रक्षतु गात्राणि यस्यैषा वर्षपत्रिका ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इन पूर्वोक्त मंगल व आशीर्वाद श्लोकोंमेंसे यथारुचि वर्षपत्रीके प्रारम्भमें लिखना, अब आगे वर्षसाधनके अनेक उपायोंमेंसे सरल उपाय लिखताहूँ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥

वर्षप्रवेशसमयसाधन.

सुरेंद्रप्रमुखैर्नतं तमसमाजनिर्मूलनं सरोजवनमोददं हृदि निधाय सूर्यं विभुम् ॥ करोमि शुभदं सतां श्रमहरं समासाधनं गुणेगुणगणीकृतं हरसमानहारेहरम् ॥ १ ॥ इष्टःशको जन्मशकेन हीनस्त्रिधा सपादो दलितश्च सार्धम्॥समन्वितो जन्मगवारपूर्वैः स्फुटाभवेदब्दनिवेशवेला ॥ २ ॥

अर्थ—वर्तमानशाके में जन्मकालीन शाकेको हीनकरै अर्थात् घटा-

---

१ पृ. ४ के नीचेकी टिप्पणी देखो.

यदेवै जो अंक शेषरहै, वही गत वर्ष जानना, उसको तीन स्थानमें स्थापित करै पहले स्थानमें सवाया, दूसरे स्थानमें आधा, तीसरे स्थानमें डेडढ़े करै फिर उसमें जन्म वार आदि (वार, घटी, पल) संयुक्तकरै तो वर्ष प्रवेश वेला (समय) स्फुट होवै है ॥ १ ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ वर्ष सवाया अर्ध करि, पुनि ड्योढ़ा करिदेय ॥ जन्मदिनादिक जोरिके, वर्षप्रवेश कहिदेय ॥ इसका उदाहरण आगे लिखैंगे ॥

वर्षसारिणी साधन.

भूमि १ पञ्चेन्दु १५ भूराम ३१ शून्य राम ३० तथैव च ॥
प्रत्यब्दचालनांकोयं वारादिधनसंज्ञकम् ॥ ३ ॥

अर्थ—एक, पन्द्रह, इकतीस, तीस, यह प्रतिवर्षके वारादि धनसंज्ञावाले चालनांक हैं अर्थात् १।१५।३१।३० यह वारादि अंक संयुक्त करता जावै तो सेकडों वर्षकी सारिणी बनजातीहै तहां सौवर्ष पर्यन्तकी आयु प्रायः मनुष्योंकी होतीहै इसकारण, यहां सौ वर्षकी सारिणी लिखतेहैं ॥ ३ ॥

वर्षसारिणी.

वर्षसारिणीमें प्रतिवर्षके नीचे चार अंक रक्खेहैं वार, घटी, पल, विपल, तहां ६० विपलका १ पल और ६० पलकी १ घटी तथा ६० घटीका १ वार अर्थात् दिन रात्रि जानना, जो विपल ६० से अधिक होवैं तो ६० का भाग देनेसे लब्ध फल पलोंमें संयुक्त करना, और शेष अंकोंको विपल संज्ञक जानना और जो पल ६० से अधिक होंतो उनमें ६० का भाग देकर लब्धांक को घटी संख्यामें युक्त करना और जो अंक शेष रहे सो पल जानना, और जो घटीसंख्या ६० अथवा ६० से अधिक होतो उसमें ६० का भाग देकर लब्ध अंक वार में युक्त करना

शेष अंक को घटीसंज्ञक मानना तथा जो वारसंख्या सात से अधिक हो तो उसमें ७ का भाग देकर लब्ध फलको त्याग देना और जो अंक शेष रहे, उस अंक को रवि आदिकवार मानना ॥

१ वर्षसे २५ वर्ष पर्यंतकी सारिणी.

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	००	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	८	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

२६ वर्षसे ५० वर्ष पर्यंतकी सारिणी.

गतवर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

५१ वर्षसे ७५ वर्षपर्यन्तकी सारिणी.

५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	गतवर्ष
१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	वार
११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	घटी
४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	पल
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	विपल

७६ वर्षसे १०० वर्ष पर्यन्तकी सारिणी.

७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	गत वर्ष
४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	वार
३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५८	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२	घटी
५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	पल
०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	विपल

गताऽब्दकोष्टकांकेषु जन्मवारादियोजनात्॥
वर्तमानाऽब्दवेशे च वारादिः स्यात्सुखान्वितम्॥ ४॥

अर्थ–वर्षसारिणीविषे गत वर्षके कोठे के वार आदि अंकोंमें जन्मवार आदि जोड देनेसे वर्तमान वर्षप्रवेश समय सुखपूर्वक वार आदि (वार घटी पल विपल) सिद्ध होतेहैं साठि ६० से अधिक अंक होनेसे पूर्वोक्त रीति अनुसार वारादिक जानना॥ ४॥

माससाधन.

तत्कालेऽर्को जन्मकालरविणास्याद्यतः समः॥
सएव मासो विज्ञेयो वर्षावेशे बुधैर्ध्रुवम्॥ ५॥

अर्थ–जन्मकालीन सूर्य के समान सूर्य जिस महीनोमें हो वही महीना वर्षप्रवेशका जानना ऐसा पण्डितोंने निश्चय कियाहै॥ ५॥

सूर्यांशशुद्धाशुद्धज्ञान.

स्युर्जन्मकालीनदिनाधिपांशैरंशाः समाना यदिवर्षभानोः॥ प्रामाण्यमस्मिंस्तत एवसिद्ध्येन्नोचेदशुद्धाजनि भास्करांशाः॥ ६॥

अर्थ–जन्मकालीन सूर्य अंशोंकरके यदि वर्षकालीन सूर्यके अंश समान हों, तो उसी समयको प्रमाणकरके उसी अनुसार सिद्ध करना, यदि समान नहों तो जन्मकालीन सूर्यांशोंको अशुद्ध जानना, भावार्थ यह कि जब जन्मकालीन सूर्यांश अशुद्ध जानपडैं तो प्रथम जन्मसमयके सूर्यांशोंको शुद्धकर लेवै, तब वर्ष साधन करनेकी इच्छा करै॥ ६॥

तिथिसाधन.

याताऽब्दवृन्दो गुणवेदरामै ३४३ र्निघ्नः कुरामै ३१ र्विहृतो दिनाद्यम्॥ घस्रैः सहोत्थैः सहितं खरामै ३० र्भक्तं च शेषात्तिथिरत्र वर्षे॥ ७॥

अर्थ–गतवर्षसमूहको ३४३ से गुणा करना, और ३१ से भाग देना, लब्ध दिन आदिक अंक आवेंगे अर्थात् जो अंक लब्धहों उनकी दिनसंज्ञा जानना शेष अंकको ६० से गुणाकर फिर ३१ से भाग देना लब्ध अंककी घटी संज्ञा जानना शेषको फिर ६० से गुणा करके ३१ से भाग देना लब्ध अंककी पलसंज्ञा जानना. इस प्रकार तीन अंक लेकर उनमें शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे जन्मतिथिपर्यन्त तिथिकी संख्या घटीपलसहित संयुक्त करना, और तीस ३० का भाग देना, भाग देनेपर जो अंक शेष रहै वही शुक्ल प्रतिपदासे गणनाकरके तिथि जानना, कभी कभी एक तिथि न्यून अथवा अधिकभी आतीहै. इसका कारण यहहै कि जो तिथि जन्मसमय ४५ घटीसे अधिक व्यतीत हो चुकीहो, उसकी गतसंज्ञा होजातीहै प्रवेशसमय जो वारहो उसदिन जो तिथिहो, वही तिथि ठीक जानना यह नियमहै, तिथि साधनका उदाहरण आगे लिखेंगे ॥ ७ ॥

नक्षत्र व योगसाधन.

व्योमेन्दुभिः१० संगुणिता गताब्दाः स्वशून्यवेदाश्वि
२४० लवैर्विहीनाः ॥ जन्मर्क्षयोगैः सहितापृथक्स्था
नक्षत्रयोगौ भवतो भ२७ तष्टौ ॥ ८॥

अर्थ–गतवर्ष संख्याको दश १० से गुणाकरै फिर दोस्थानमें स्थापितकरै, प्रथमस्थानवाले अंकोंमें २४० का भाग देकर लब्धांकको दूसरे स्थानवाले गुणांकोंमें घटायदेवै घटादेनेसे जो अंकहों उनमें अश्विन्यादि जन्मनक्षत्र संयुक्तकरके २७ का भागदेनेपर जो अंक शेष रहै सो वर्षप्रवेशसमय नक्षत्र जानना, और विष्कम्भादि योग जन्मयोग संयुक्तकरके २७ का भागदेनेपर जो अंक शेषरहे सो योग वर्षप्रवेशसमय जानना, इसका उदाहरण आगे लिखेंगे ॥ ८ ॥

उदाहरणार्थ जन्मसमय.

श्रीविक्रमार्कसम्वत् १९२० शालिवाहन शके १७८५ कार्तिक कृष्णएकादश्यां शनौ गतघटी ३५ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र गत

घटी ३६ वैधृतियोगः घटी ६ तत्र सूर्योदयादिष्टघटी १६ पल ५ दिनमान घटी २७ पल ३०रात्रिमान घटी ३२ पल ३०तुलाऽर्कगतांश २२ नैमिष पल-भा६मकरलग्न गतांश२३तदा मिश्र शोभारामात्मज नारायणप्रसादस्य जन्म.

जन्मांक.
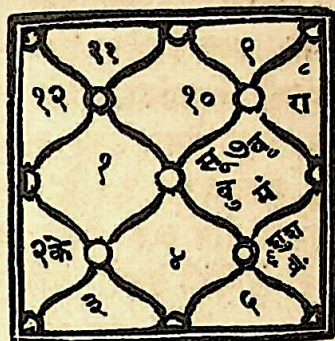
वर्षप्रवेशसमयसाधनोदाहरण.

जन्म समय शाके १७८५ वर्तमान शक १८२१ है तो वर्तमान शाकेमें जन्मकालीन शाकेको, अथवा वर्तमान संवत्[1] १८५६ में जन्मकालीन संवत् १८२० को घटाया, घटानेसे ३६ अंक शेष रहे, यहगतवर्षगण जानना, इसगतवर्ष ३६ को तीन स्थानमें स्थापितकिया, पहले स्थानमें सवाया करनेपर ४५ हुये. दूसरे स्थानमें आधा करनेपर १८ हुये. तीसरे स्थानमें ड्योढे करनेपर ५४ हुये, यहां पहले स्थानमें ४५ वारसंज्ञकहै उनमें ७ का भाग दियातो ३ शेष रहा, तो वार ३ घटी १८ पल ५४ यह वर्षसारिणी में ३६ वर्षके नीचे देखलो, इन वार, घटी, पल, ३।१८।५४ में जन्मकालीन शनिवार का अंक ७ घटी १६ पल ५ को संयुक्त कियातो १०।३४।५९ हुये वारांक १० में सातका भाग दिया शेषरहे ३ तीनेसे मंगलवार आया, तो मंगलवार को घटी ३४ पल ५९ पर सैंतीसवा वर्षप्रवेश भया ॥ ॥ ॥

तिथिसाधनोदाहरण.

गत वर्षसमूह ३६ को ३४३ से गुणा किया, तो पूर्वोक्त तिथिसाधनमें कहे अनुसार १२३४८ अंक हुये, इनमें ३१ का भाग दिया तो लब्धांक ३९८।१९ हुये, इनमें जन्मदिनादिक अर्थात् जन्मकालीन तिथि घटी संख्यासहित संयुक्त करै. तो जन्मतिथि घटी सहित शुक्लप-

---

१ संवत् विक्रमादित्यजीका है और शाका शालिवाहनका प्रसिद्ध है.

तिपदादिसे २६।६५ संयुक्त करनेपर अंक ४२४।८४ हुये यहां ८४अं
षट्यात्मक हैं सो६०से अधिक हैं इसकारण६०से भागदेनेपर लब्ध१अं
सो तिथ्यात्मक ४२४ में युक्त किया तो ४२५ हुये शेष २४ र
अब ४२५ में ३० का भाग दिया भागदेनेपर शेष अंक ५ शुक्ल प्रति
दासे पांचमीं तिथि पंचमी हुई, वर्षप्रवेशसमय पंचमी हुई,यहाँ उदाहरण
घटयात्मक २४ है, सोइष्टकाल घटयात्मक ३४ अंकसे न्यून है इ
कारण गततिथि चतुर्थी हुई अर्थात् शुक्लचतुर्थी मंगलवारको वर्षप्रवे
हुई ऐसा जानना ॥

नक्षत्र व योगसाधनोदाहरण.

गतवर्ष ३६ को १० से गुणाकिया, तो ३६० हुये, सो दोस्थान
स्थापितकिये, प्रथम स्थानवाले ३६० में २४० का भागदेनेपर लब्धां
१ को दूसरे स्थानवाले ३६० में घटाय दिया तो३५९ रहे, उन
जन्मकालीन नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी की अश्विन्यादिसे संख्या १
संयुक्त करनेपर ३७१ अंक हुये, इनमें सत्ताईसका भागदिया तो शे
अंक २० अश्विन्यादिसे गणना करनेपर वीसवा पूर्वाषाढ नक्षत्र भय
तो वर्षप्रवेशसमय पूर्वाषाढ नक्षत्र जानना, योगसाधनार्थ ३५८ ्
जन्मकालीन वैधृति योग विष्कंभसे गणना करनेपर संख्या २७ युक्त
किये तो ३८६ अंकहुये, इनमें २७ का भागदेनेपर शेष अंक
सोविष्कंभसे गणना करनेपर आठवाँ धृतियोग भया, तो वर्षप्रवे
समय धृति योग जानना, उदाहरणमें गणितागत वार, घटी, पल, तिथि
नक्षत्र, योग, ये सब जन्मकालीन सूर्यांशके दिन ठीक मिलते
इसकारण सूर्यांशभी ठीकहैं और तिथि वार नक्षत्रादिभी ठीकहैं, जन्म
कालीन तुलाके सूर्यके अंश २२ हैं वही तुलागत भानुके २२ अंश
कार्तिक शुदी ४ मंगलवार के दिन ठीक मिलतेहैं, अब ग्रह साध
प्रकार आगे वर्णन करेंगे, प्रथम लग्नसारिणी व दशमसारिणी
लिखतेहैं ॥

(नैमित मण्डले लग्नसारणीयम् पलभा ६ चरखंड ६०।४८।२०)

चाल नांकाः	अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मे	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
७	ष	३२	३९	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५
१६		३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०
०	वृ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
८	ष	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११
२२		४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०
०	मि	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
१०	थु	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०
६	न	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०
०	क	१६	११	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२
११	र्क	५२	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२२	३५	४६	५८	९	२१	३२	५४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६
२६		६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	३०
०	सिं	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
११	ह	३७	४८	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७
३४		५४	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०
०	कं	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
११	न्या	१८	२९	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३९	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३४	४५
१६		३६	५२	५	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	२६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०

०	तु	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९
११	ला	५६	७	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९
१६		३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०
०	वृ	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
११	श्चि	४०	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१२
३४	क	५४	२८	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	०	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०
०	ध	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
११	नु	२५	३६	४७	५९	१९	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०
२६		६	३२	५८	२४	५०	१६	४२	८	३४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०
०	म	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४
१०	क	४०	५८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	८	१७	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८
६	र	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	०	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०
०	कुं	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
८	भ	६	१५	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१०	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७
२२		४२	४	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०
०	मी	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२
७	न	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५
१६		३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०

यह लग्नसारिणी अयनांश २१ परसे निर्माणकी गई है जो नैमिषदेशीय पंचांगों में लिखी जाती है.

लग्न सारणीसाधन.

लग्नसारणी बनानेकी रीति वर्णन करताहूं, सो इस प्रकार कि अपने अपने देशके लग्नप्रमाणसे सारणी बनजातीहै, प्रत्येक साधारण पण्डितभी अपने अपने देशके राश्युदयसे विज्ञहै, अर्थात् सबको अपने२ देशका लग्न प्रमाण सूचितहै, इस कारण यहां प्रतिस्थानके लग्न प्रमाण लिखनेकी अवश्यकता नहीं, प्रथम पलभा बनाना फिर चरखंड साधनकर लंकोदयसे घटा बढाकर स्वदेशोदय बनाना. इसलिखनेसेभी यहां कुछ प्रयोजन नहीं. हमकोतो केवल राश्युदय प्रमाण परसे लग्न सारणी साधनकी रीति बतादेनाहैः—

यथा नैमिषमण्डले लग्नप्रमाण.

वस्विन्दु पक्ष २१८ शशिबाणपक्ष २५१ त्रिशून्यराम ३०३त्रि युगाग्नयश्च ३४३ ॥ सप्ताब्धिरामा ३४७ वसुराम रामा ३३८ क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ॥ ९ ॥

लग्नप्रमाणचक्र.

मे०	वृ०	मि०	क०	सिं०	क०	तु०	वृ०	ध०	म०	कुं०	मी०	राशि
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घटी
३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४३	३	११	३८	पल

अर्थ—मेषका उदय प्रमाण २१८ पल अर्थात् ३घटी ३८ पल, वृषका २५१ पल अर्थात् ४ घटी ११ पल, मिथुन का ३०३

पल अर्थात् ५ घटी ३ पल, कर्कका ३४३ पल अर्थात् ५ घटी ४३ पल, सिंहका ३४७ पल अर्थात् ५ घटी ४७ पल कन्याका ३३८ पल, अर्थात् ५ घटी ३८ पल, अब तुलासे उत्क्रम अर्थात् उलटा जानना, जैसे तुलाका उदय प्रमाण ३३८ पल, वृश्चिक का ३४७, धनुका ३४३, मकरका ३०३ कुंभका २५१ मीनका २१८ पल जानना, जिस राशिका जितने अंशपर सूर्य उदय होताहै वही लग्न उतने अंश सूर्योदय समय जानना, जितने पल सूर्योदयसे भुक्त होंगे उतने पल लग्नके भुक्त होवेंगे, जब लग्नके सम्पूर्ण पल भुक्त होजा वेंगे तब दूसरी लग्नका प्रवेश होवैगा, छः लग्न दिनमें और छः लग्न रात्रिमें व्यतीत होतीहैं अर्थात् रात्रि दिनमें बारहों लग्न व्यतीत होजातीहैं, एक राशिके तीस ३० अंश होतेहैं, सो अपने प्रमाणमें तीसों अंश व्यतीत होजातेहैं, यहां मेषका उदय प्रमाण २१८ पलहै इनको ३० अंशोंमें बाटदिया तो एक अंशपर ७ पल १६ विपल मेष लग्न रही, वृषराशिका उदय प्रमाण २५१ पलहै तो एक अंशपर ८ पल २२ विपल हुए इसी प्रकार मिथुन आदिके पलात्मक चालनांक जानने. यहां अयनांश २१ मानकर सारणी रचीगई है, निरयन लग्न सारणी बनानेकी इच्छासे मीनके दशगतांशसे प्रारंभ किया है, सो सारिणीमें स्पष्ट देखलो ७ पल १६ विपल से स्थापित है आगे तीस अंश अर्थात् मेष राशिके नौ गत दशवे अंश पर्यंत ७ पल १६ विपल संयुक्त करते चले गये हैं, तिसउपरांत वृषराशिके चालनांक ८ पल २२ विपल जोडना आरंभ कर दिया है, इसी प्रकार लग्न सारणी बनकर तैयार होगई, सो सारणी की ओर ध्यानदेकर देखनेसे सारणी बनानेकी रीति सुगमतासे समझमें आजातीहै ॥ ९ ॥

सारणीपरसे लग्न जाननेकी रीति.

इष्टाऽर्कराश्यंशतले घटीपले स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतं तथा ॥ यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलाऽनुमानतः ॥ १० ॥

अर्थ—इष्ट समय सूर्यराशिके अंशके नीचे घटी पल संख्यामें इष्ट-कालीन घटी पलको संयुक्त करै, संयुक्त करनेसे जो अंक आवै, वे अंक जिस राशिके अंशके नीचे स्थित होवैं वही कलाओंके अनुमानसे लग्न जानना, और उतनेही अंश जानना. यहां कला, अनुमानसे कल्पित करना. यह लग्न अंशसहित जाननेकी साधाण रीतिहै. जैसे—सूर्य तुला राशिके २२ अंशगतहैं, तो सारणीमें तुला राशिके २२ अंशके नीचे घट्यात्मकांक ३८।८।२२ हैं, इनमें वर्षप्रवेश समय इष्ट घटी ३४ पल ५९ को संयुक्त किया तो ७३।७।२२ यहां घटी ७३ अंक ६० से अधिक हैं इस कारण ६० से भाग लेनेपर शेष १३ रहे, तो १३। ७।२२ अंक मिथुन राशिके १० अंशके नीचे १३।३।२६ हैं यहां ३ पलसे ७ पल अधिकहैं अर्थात् ४ पल अधिकहैं. १० अंशपर सायन कर्कका प्रारंभहै, इस कारण कर्कके ११ पल २६ विपल एक अंशका भोग है तो ४ पलके २१ कला हुये. मिथुन लग्नके १० अंश २१ कला अनुमानसे व्यतीत हुये ॥ १० ॥ विशेष लग्न स्पष्टकी रीति उदाहरणसहित आगे लिखेंगे अब दशम सारणी लिखतेहैं ॥

दशमसारणी.

चाल नक्षत्रा:	अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	मे	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८
९	ष	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७
१६		५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	२८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८
०	वृ	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३
९	ष	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३
५८	भ	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	०२	४८	३४	२०	६
०	मि	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८
१०	थु	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६
४६	न	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६
०	क	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३
१०	र्क	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२
४६		५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८
०	सिं	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
९	ह	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६
५८		१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६
०	कं	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३
९	न्या	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४

०	तु	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८
९	ला	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७
१६		५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८
०	वृ	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३
९	श्चि	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३
५८	क	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	५८	३४	२०	६
०	ध	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
१०	नु	३३	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३४	४६
४६		५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६
०	म	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
१०	क	५६	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२
४६	र	५२	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८
०	कुं	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८
९	भ	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६
५८		१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६
०	मी	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३
९	न	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	८	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४
१६		५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६

दशमसारणी लंकोदयसे बनतीहै, कि जिसप्रकार लग्नसारिणी स्वदेशोदयसे बनतीहै सो क्रमपूर्वक कहचुकेहैं.

दशम सारिणीपरसे दशम लग्नसाधन.

यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम् ॥ प्रत्य
ग्नतेनाढ्यमिथान्विशेषो मध्यस्य सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः॥११

अर्थ—वर्षप्रवेशकालीन सूर्यराशिके अंशसमान कोठेमें जो घटी आदिक अंकहों, सो पूर्वनत घट्यादि अंकोंकरके हीन करना, और जो परनत होतो संयुक्त करदेना, तो हीनकिये अथवा संयुक्त किये अंक जिस राशि अंशके समान कोठेमें हों, वही दशम अथवा चतुर्थ लग्न जानना, दशमसे छठी लग्न चतुर्थ होतीहै और चतुर्थसे छठी लग्न दशम होतीहै, यह मध्य लग्नकी सिद्धि पंण्डितोंने कहीहै ॥११॥ जैसे वर्षकालीन सूर्य तुलाराशिके २२ अंशगत तेईसवें अंशपर वर्तमानहै, तो सारणीमें तुलाके २२ अंशगतके नीचे घट्यादि अंक ३६। ५७।३२ हैं यहां नवको इष्टकाल कल्पना किया जाताहै तो वर्षप्रवेशसमय रात्रिका पूर्वनत घट्यादि ८।३७।३० सो हीन किया, तो शेष २८।१५।२ रहे, सारणीमें सिंहकेगत २७ अंशके गत २७ अंशके नीचे २८।१८।४ हैं इसकारण यहां चतुर्थ लग्न सिंहके गतांश २७ हुये, चतुर्थ लग्नमें छः राशियुक्त करनेसे दशम लग्न होवैहै. तात्कालिक लग्नसे दशम लग्न कभी नवीं और कभी ग्यारहवींभी आवैहै ॥

वर्षप्रवेशसमय.

गणनाथे रविमुख्यखेचराः कुलदेवीविधिविष्णुशंकराः ॥
उदयांशाधिपतिः प्रकुर्वतां चिरमायुः खलु यस्य पत्रिका॥१

श्रीशुभ नृपवर विक्रमार्क सम्वत् १९५६ तत्र श्रीमच्छालिवाहन भूभर्तुश्शके १८२१ तत्रयाम्यायने भास्करे शरदृतौ मासोत्तमे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भौमवासरे घट्यः १६ पलानि ३१ (परतः पञ्चम्यां) मूल नक्षत्र घट्यादि ३०।३७ (तदुपरि पूर्वाषाढभे) सुकर्माख्ययोग घट्यादि २१।३७ तत्परतः धृतियोगः, बवनाम करणे,

वं परिशोधितपञ्चाङ्गशुद्धे तत्रदिनमानम् घट्यादि २७।१३ रात्रि-
माणम् घट्यादि ३२।४७ अहोरात्रम्
ष्टि ६० घट्यात्मकम् तुलाऽर्कगतांशाः२२
दिने श्रीसूर्योदयादिष्टं घट्यादि ३४।५९
दा मिथुनलग्नोदये स्वस्तिश्रीमत्पण्डितना-
यणप्रसादस्य सप्तत्रिंशतिसंख्याकाऽब्द-
वेशः ३७ गताब्दगणः ३६.

वर्षलग्नम्.
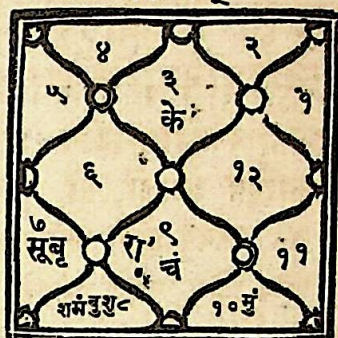
ग्रहसाधनार्थ चालन प्रकार.

प्रस्तारस्तुयदाग्रेस्यादिष्टं संशोधयेद्दणम् ॥
इष्टकालो यदाग्रेस्यात्प्रस्तारं शोधयेद्धनम् ॥१२॥

अर्थ—वर्षप्रवेश समय सूर्यादिग्रह स्पष्ट करनेके अर्थ प्रथम चाल- प्रकार लिखतेहैं, तिथि पत्र (पंचांग) में जो आठ २ दिन के सू- र्यादि ग्रह स्पष्ट किये होतेहैं उसको प्रस्तार और पंक्ति कहतेहैं, सो प्र- तार यदि इष्ट काल (वर्षप्रवेशसमय अथवा जन्मसमय) से आगे वै, तो प्रस्तारके वार घटी पलमें इष्ट समयका वार घटी पल घटादेवै. ो शेष रहे वह वारादि ऋण चालनहोताहै, तथा जो इष्टकाल आगे वै और प्रस्तार पीछे होवै तो इष्टकालात्मक वार घटी पलमें प्रस्तारका ार घटी पल घटा देवै, तो शेष अंक वारादि धन चालन होताहै॥१२॥

ग्रहस्पष्टीकरण.

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषड्हृता ॥
लब्धमंशादिकं शोध्यं योज्यं स्पष्टो भवेद्ग्रहः ॥१३॥

अर्थ—गत और ऐष्य दिवसोंकरके अर्थात् ऋणचालन व धन- ालनसे ग्रहोंकी गतिको गुणाकरै, फिर गोमुत्रिकारीतिसे साठि६० ा भागदेवै, भागदेनेसे जो अंश कला विकलात्मक लब्ध होवै, उसको

पंचागस्थ ग्रहोंमें घटावै वा युक्तकरै अर्थात् ऋणचालन होवै तो घटा[illegible] और धन चालन होवै तो संयुक्तकरे. युक्त करने व घटानेसे वह तात्का[illegible]लिक स्पष्ट ग्रह होताहै, यहां वक्रगतिवाला ग्रह और राहु, केतु [illegible] सबोंका चालन मार्गी ग्रहोंकी अपेक्षासे विपरीत जानना अर्थात् ध[illegible] चालनमें ऋणचालन और ऋणचालनमें धनचालन ऐसा [illegible] जानना ॥ १३ ॥

तथा च.

गतावधिदिनादिनाविगतमिष्टकालं धनं ऋणं तु खलु गम्[illegible] पंक्तिषु त्यजेत्स्ववाराद्किम् ॥ अनेनगुणिता गतिश्चखरै[illegible] र्हृदंशादिकं विपर्ययविलोमगेऽवधिग्रहैःस्फुटा संस्कृता ॥१४[illegible]

अर्थ–गत अवधिके दिन आदिकको इष्टकालमें घटायदेनेसे ध[illegible] चालन होताहै, और गम्यवाली पंक्तिमें अपने (इष्ट) वार आ[illegible]दिकको त्यागदेवै अर्थात् घटा देवै तो ऋणचालन होताहै. इस ऋण[illegible] चालन अथवा धनचालनको ग्रहकी गतिसे गुणादेवै, और गोमुत्रिका[illegible] रीति अनुसार ६० का भागदेवै, जो लब्ध अंशादिक आवैं उनको [illegible] चांगस्थ ग्रहमें युक्तकरै वा घटावै तो ग्रह स्पष्ट होजाताहै ॥ १४ ॥

ग्रहसाधनोदाहरण.

यहां प्रस्तार और इष्टकाल एकही दिनकाहै, परंतु प्रस्तार आगे है अर्थात् मिश्रमान अर्द्धरात्रिका ४३ घटी २३ पलपर ग्रहहैं. इष्टकाल घटी ३४पल५९ है. पंचांगस्थ वार घटी पल३।४३।२३ वर्षप्रवेशसमय इष्ट वार घटी पल ३।३४।५९ यहां प्रस्तार आगेहै. इष्ट काल पीछे है. अतः प्रस्तारमें इष्ट काल को घटाया. घटानेसे शेष ०।८।२४ यह

पंचांगस्थग्रह.

ति.४मं.मिश्रमान४३।२३दि.२७।१[illegible]								
उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	उ.रा[illegible]
सू	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	ग्र[illegible]
६	७	७	६	७	७	८	२	रा
२२	१०	१६	२८	७	२७	१	१	अं
२८	१०	४	३०	८	५८	३०	३०	क
०	५८	३	४९	१४	३१	२१	२१	वि
६०	४२	६०	१३	७४	६	३	३	ग
२४	४१	३७	४५	३१	३३	११	११	वि
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व.मा

वारादि ऋणचालनांक हैं ॥ सूर्यकी गति ६० कला, विगति २४ विकला. तो गति विगतिको ऋणचालनांक वारादि ०।८।२४ से गोमूत्रिकारीत्यनुसार गुणन किया तो ००।४८०।१६३२।५७६ यह अंक हुये.

प्रथम ५७६ में ६० का भाग दिया तो लब्ध ९ शेष ३६ सो ९ को १६३२ में युक्त किया तो १६४१ हुये इनमें ६० का भाग दिया तो लब्ध २७ शेष २१ सो २७ को ४८० में युक्त किया ५०७ हुये इनमें ६० का भाग दिया तो लब्ध ८ कलात्मकहुये शेष २७ अंक विकलात्मक हुये. यहां ऋण चालन है इस कारण पंचांगस्थ सूर्य राश्यादि ६।२२।२८।०० में लब्धांशादि ०।८।२७ को घटाया तो शेष राश्यादि ६।२२।१९।३३ यह स्पष्ट सूर्य राश्यादि भया, इसी प्रकार मंगल आदि की गति विगतिसे गुणाकर स्पष्ट करनेकी रीति जानना, यहां उदाहरणमें केवल सूर्य स्पष्टका उदाहरण लिख दिया है. ग्रह स्पष्ट करके चक्र आगे लिखेंगे, चन्द्र स्पष्ट करनेकी रीति दूसरी है सो आगे लिखते हैं ॥

	वार- ०	घटी- ८	पल २४	
ग.६०	०	४८०	१४४०	गुणनफल.
		०	८	२४
वि.२४		०	१९२	५७६ गु०फ०
योग	००	४८०	१६३२	५७६
	८	२७	९	३६
	कला	५०७	१६४१	
		२७	४४१	
		विकला	२१	

अं- कं. वि.
०। ८। २७ लब्धांशादि ॥
ऋणचालनहै अतः पंचांगस्थ ग्रहमें अंशादिलब्ध फल घटादिया ॥
६।२२।२८।० पंचांगस्थ रविराश्यादि।
०। ८।२७ लब्धांशादि।
६।२२।१९।३३
यह स्पष्ट सूर्य राश्यादि जानना.

चन्द्रसाधनार्थ भयातभभोगप्रकारः

गतर्क्षनाड्यः खरसेषु शुद्धा सूर्योदयादिष्टघटीषु युक्ता ॥

भयातसंज्ञा भवतीह तस्य निजर्क्षनाड्या सहिता भभोगः॥ चेत्स्वेष्टकालात्प्रागेव ऋक्षं यदि समाप्यते ॥ तदेष्टकालते ऋक्षनाड्यः शोध्या गतर्क्षकम् ॥ भभोगः पूर्ववत्कार्यः तत साध्यस्तु चन्द्रमाः ॥ १६ ॥

अर्थ—अब पंचांगस्थ नक्षत्रसे चन्द्रमाके साधन करनेका प्र वर्णन करतेहैं, तहां प्रथम भयातभभोग साधन कहतेहैं, कि— गतनक्ष घडियोंको साठिमें घटादेवै. जो घडी पल शेष रहें उनको सूर्योदयसे घडियोंमें जोडदेवै, जोडनेसे जो अंकहों उनकी भयातसंज्ञा होवे और अपने नक्षत्रकी घडियोंको साठिसे घटाईहुई नाडियोंमें जोडदे भभोगहोताहै ॥ १५ ॥ यदि इष्टकालसे पहलेही नक्षत्र समाप्त होव तो इष्टकालघडियोंमें नक्षत्र घटी पल घटादेनेसे भयात होताहै, अं गतनक्षत्रकी घडियोंको साठिमें घटाकर उसीमें परदिनवाले नाडिये जोडदेनेसे भभोग होजाताहै, इस प्रकार भयात व भभोग बना तत्काल जन्द्रमाका साधन करना ॥ १६ ॥

तत्कालचन्द्रसाधन.

गताभघटिका खतर्कगुणिता भभोगोद्धृता युता च भगतेन षं ष्टिगुणितेन द्विघ्नीकृता॥नवाप्तलवपूर्वके शशिभवेत्तुतत्पूर्व कैर्नभांबरवियद्गजाब्धि४८०००षु भजेज्ज्वाकीर्तिता ॥१७

अर्थ—नक्षत्रकी गतघटिका अर्थात् भयातको ६० से गुणा फिर उसमें भभोग अर्थात् इष्ट नक्षत्रकी सम्पूर्ण घडियोंसे भाग दे भाग देनेसे जो लब्ध अंक मिलैं उन घटी, पल, विपलात्मक स्पष्ट यातरूप अंकोंको साठि ६० से गुणेहुए अश्विनी आदि गत नक्ष संख्यामें जोड़देवै, और दूने करै अर्थात् दोसे गुण देवै, फिर नव भागलेवै. भाग लेनेपर जो लब्धांक मिलैं सो अंश जानै. शेष बचे हुये ६० से गुणाकरै, उसमेंभी नवका भाग देवै लब्धांकको कला जा

फिर शेष अंकको ६० से गुणाकर नवका भाग देनेपर लब्धांकको विकला जानै अंशोंमें ३० का भाग देकर राशि निकाललेवै, अब गति-ल्यावनेका प्रकार कहतेहैं कि ४८००० को ६० से गुणाकरके भभोगसे भागलेवै, भागलेनेपर जो लब्ध अंक मिलैं उनको चन्द्रमाकी गतिजानै, शेषको ६० से गुणाकरके भभोगसे भागलेवै, जो लब्धअंक मिलैं वह विगति जानै, इस प्रकार चन्द्रमाके स्पष्ट करनेका प्रकार वर्णन किया, आगे उदाहरण लिखतेहैं ॥ १७ ॥

चन्द्रमासाधनोदाहरण.

अब चन्द्रमाके स्पष्ट करनेका उदाहरण वर्णन करतेहैंः—वर्षप्रवेशसमय इष्टघटी ३४ पल ५९ मूल नक्षत्र घटी ३० पल ३७ यहां नक्षत्र इष्टकालसे पहलेही समाप्त होगया इसकारण इष्टघटी ३४ पल ५९ में मूलनक्षत्र घटी३० पल ३७ को घटादिया, तो शेष घटी४ पल २२ रहे॰ यह भयात हुआ॰ अर्थात् वर्षप्रवेशसमय पूर्वाषाढ नक्षत्रकी ४।२२ भुक्तघटी और पल जानना॰ अब भभोग अर्थात् पूर्वाषाढका सर्वर्क्ष ल्यावनाहै॰ तो गतनक्षत्र मूलकी घटी ३० और पल ३७को ६० में घटाया॰ शेष २९।२३ रहे॰ इनको परदिन पूर्वाषाढनक्षत्र घटी २७ पल ३७ में युक्तकिये तो ५७।०० हुये यह भभोग हुआ॰ अब भयात व भभोग घटीपलके पल बनाकर चन्द्रमाका साधन करना, भयातके पल २६२ और भभोगके पल ३४२० हुये अब चन्द्रसाधनार्थ भयात २६२ को ६० से गुणाकिया तो १५७२० यह भाज्यांक हुये॰ इनको भभोगसे उद्धृत किया अर्थात् इनमें भभोग ३४२० भाजकांकसे भाग लिया तो लब्ध ४ घट्यात्मक अंक हुये, शेष २०४० को ६० से गुणाकिया तो भाज्यांक १२२४०० हुये इनमें भाजकांक ३४२० से भागलिया तो लब्ध ३५ पलात्मक अंक हुये शेष २७०० को ६० से

गुणाकिया तो भाज्यांक १६२००० हुये इनमें भाजकांक ३४२०। भागलिया तो लब्ध ४७ विपलात्मक अंक हुये. अर्थात् ४।३५।४७ घट्यादि स्पष्ट भयात हुआ. इसमें अश्विन्यादिगतनक्षत्र (मूल) संख्या १९ को ६० से गुणाकर ११४० युक्त करनेपर ११४४।३५।४७ हुये इनको द्विगुणा किया तो २२८८।७०।९४ये अंक हुये यहां ९४ ६० से अधिकहैं इस कारण ६० से चढायातो शेष ३४ लब्ध १ को ७० में जोड दिया तो ७१ हुये इसमेंभी ६० का भागदिया तो शेष ११ लब्ध १ तो लब्ध १को २२८८ में जोड दिया तो २२८९ हुये, अब २२८९में ९का भागदिया तो लब्ध २५४ अंशात्मक अंकहुये शेष३को ६० से गुणाकरके ११ जोड दिये तो १९१ हुये इनमें ९ का भाग दिया तो लब्ध २१ कलाहुये शेष २ को ६० से गुणाकरके ३४ जोडदिये तो १५४ हुये. इनमें ९ का भागदिया तो लब्ध १७ विकला हुये. अंशांक २५४ में ३० का भागलेनेपर लब्ध ८ राशि और शेष १४ अंश हुये. तो ८।१४।२१।१७ यह राश्यादि स्पष्ट चन्द्र भया. अब गतिविगति प्रकार कहतेहैं कि ४८००० को ६०से गुणाकिया तो २८८०००० हुये इनमें भभोग ३४२० से भागलिया तो लब्ध ८४२ गति और शेष ३६० को ६० से गुणा किया तो लब्ध ६ विगति हुई. अर्थात् चन्द्रमाकी कलात्मक गति और विकलात्मक विगति ८४२।६ हुई.

भावसाधनार्थ अयनांशसाधन.

शाकेवेदाब्धिवेदो ४४४नः षष्टिभक्तोऽयनांशकाः ॥ तथाच ॥ भूनेत्रवेदो ४२१ नशकस्त्रिनिघ्नो व्योमाभ्रनेत्रैर्विहृतोऽयनांशाः ॥ त्रिघ्नोऽर्कराशिः स्वदलेन युक्तस्तावन्मिताभिर्विकलाभिराढ्याः ॥ १८ ॥

चालनं ऋणं वारादि ००।८।२४
भयातघट्यादि ४।२२ भभोगघट्यादि ५७।००

अथ सूर्यादयो ग्रहाः स्पष्टाः सजवाः

उ	उ	अ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	उदयास्त.
सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	ग्र.
६	८	७	०	६	७	७	८	२	रा.
२२	१४	१०	१५	२८	७	२७	१	१	अं.
१९	२१	५	५५	२८	६	५७	३०	३०	क.
३३	१७	०	३४	५४	४९	३६	४७	४७	वि.
६०	८४२	४२	६०	१३	७४	६	३	३	ग.
२४	६	४१	३७	४५	३१	३३	११	११	वि.
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	वक्रमार्ग.

अर्थ–अब लग्नादि द्वादशभावसाधनके अर्थ अयनांश साधन प्रकार लिखतेहैं. शालिवाहन शाकेमें ४४४ घटाय देवै और साठि ६० का भागलेवै, भाग लेनेसे लब्धांकको अंश और शेषको कला जानना. उदाहरण– इष्ट शाके १८२१ में ४४४ घटाया तो १३७७ शेष रहे. इनमें ६० का भागलिया. भाग लेनेसे लब्ध २२ अंश शेष ५७ कला अर्थात् २२।५७ ये अयनांश ग्रहलाघवीय जानना, सिद्धान्तवेत्ता प्रायः यही अयनांश ग्रहण करतेहैं, परन्तु एतद्देशीय सामान्य तथा विदेशीय पण्डितगण नीचे लिखे प्रकार अयनांश सर्वत्र ग्रहण करतेहैं कि इष्टशाकेमें ४२१ घटादेवै घटानेसे जो अंकहों उनको तीनसे गुणा करके दोसौं २०० का भागलेवै भागलेनेसे लब्धांकको अंश जानै शेषको साठि ६० से गुणाकर २०० से भागलेनेपर लब्धांकको कला-जानै शेषको ६० से गुणाकर २०० से भागलेनेपर लब्धांकको विकला जानै इसप्रकार अयनांश साधन करै. जिस महीनेका तत्काल अयनांश ल्यावनाहोय तो उस महीनाकी सूर्यराशिको तिगुनाकरके उसका आधा जोडकर विकला जानने और अयनांशके विकलात्मकमें संयुक्त करदेवै तो तात्कालिक अयनांश होतेहैं उदाहरण इष्ट शाके १८२१ में ४२१ घटाये तो १४०० रहे. इनको तिगुनाकिया तो ४२०० हुये इनमें २०० का भागलिया तो लब्ध २१ अंश हुये शेष० तो अय-

नांश २१।०।० भये. यहां कार्तिकमासमें तुला राशिके सूर्यहैं तात्का
लिक अयनांश ल्यावनाहै तो तुलाराशिकी संख्या ७ को तिगुनाकि
तो २१ हुये इसका आधा १०।३०जोडदिये तो ३१।३० यहविकर
त्मक ३१।३० को अयनांशके विकलात्मक ०में जोडदिये तो तात्क
लिक २१।०।३१ ये अयनांश भये. यहां विकलासे आगेका अंक ३
निरर्थकहै, इसकारण त्यागदिया इसप्रकार अयनांश साधनकरके आ
लग्नसाधनप्रकार वर्णन करतेहैं ॥ १८ ॥

लग्नसाधन.

यस्मिन् राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदये भवेत् ॥
तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥ १९ ॥

अर्थ–जिस राशिके सूर्य होय वही लग्न सूर्योदयसमय होती
और उससे सातवी लग्न सूर्यास्तसमयमें होती है उसीको अस्तल
कहाहै ॥ १९ ॥

तत्कालाऽर्कः सायनस्तस्य भोग्यैर्भागैर्निघ्नः स्वोदयः
खाग्निभक्तः ॥ भोग्यंजह्यादिष्टनाडीपलेभ्यः शेषादग्र्या
त्स्वोदयांश्चावशेषम् ॥ २० ॥ त्रिंशन्निघ्नमशुद्धाप्तभागाद्यं
मेषपूर्वकैः॥ अशुद्धा आग्रहैर्युक्तं लग्नं स्याद्व्ययनांशकम् ॥२१

अर्थ–अब भोग्यकालसे लग्नसाधनप्रकार लिखतेहैं कि–जिस स
यका लग्न बनाना चाहै उस समयके स्पष्टसूर्यमें तत्काल अयनां
युक्त करै, तो उसकी सायनार्कसंज्ञा होतीहै, उस राश्यादि सायना
मेंसे राशिका त्याग करके जो अंशादिक फल रहै उसको भुक्त कहते
उस भुक्तको ३० अंशमें कम करदेनेसे शेषको अंशादि भोग्य फल
कहतेहैं, उन भोग्यांशोंको स्वदेशीय उदयराशिप्रमाणसे गुणा क
जो गुणाकार आवे उसमें ३० से भाग देवे, भागदेनेसे जो लब्ध अं

मिलै सो सूर्यके भोग्य अंक पलादि होतेहैं, उस भोग्यको इष्ट घटी पलोंमें घटाय देवै, घटादेनेसे जो शेष रहे उसमें आगेके स्वदेशीय उदयराशियोंको घटावै, जिस राशिका उदय प्रमाण न घटै वही अशुद्धराशिहुई, अब घटानेसे जो पलात्मक अंक शेष रहैं, उनको तीससे गुणाकरके अशुद्धराशिके उदयप्रमाणसे भागलेवै भागलेनेसे जो लब्ध अंशादि मिलैं उन अंशादिकोंको मेषादि अशुद्धराशिसे पूर्वराशियोंकी संख्यामें युक्त करदेवै और अयनांशोंको घटायदेवै तो राश्यादि स्पष्ट लग्न होतीहै ॥ २० ॥ २१ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भोग्याऽल्पकालात्खत्रिघ्नात्स्वोदयाप्तलवादियुक् ॥ रविर्भवेल्लग्नं सषड्भार्कान्निशातनुः ॥ २२ ॥

अर्थ—जो भोग्यकाल थोडा होवै अर्थात् इष्टघटी पलोंमें नहीं घटै तो इष्ट घटीपलको तीस ३० से गुणाकरै, अनन्तर सायनसूर्यके राश्युदयसे भागलेवै, भाग लेनेसे जो अंशादिक लब्ध मिलैं उनको सूर्यमें संयुक्त करदेवै,संयुक्त करदेनेसेही लग्न स्पष्ट होजातीहै, और रात्रिके विषे दृशम लग्नके साधनमें छे राशियोंको सूर्य में युक्त कर पूर्वोक्त प्रकारसे दृशम लग्न सिद्ध होतीहै ॥ २२ ॥

लग्नसाधनोदाहरण.

स्वदेशीयप्रमाण.

मे	२१८	मी
वृ	२५१	कुं
मि	३०३	म
क	३४३	ध
सिं	३४७	वृ
क	३३८	तु

अब लग्न बनावनेका उदाहरण लिखतेहैं—स्पष्ट सूर्यराश्यादि ६।२२।१९।३३ इसमें तात्कालिक अयनांश २१।००।३१ युक्तकरनेसे ७।१३।२०।४ यह सायनार्क तात्कालिक भया. राशि ७को छोडकर भुक्त अंशादि १३।२०।४ को ३० में घटाया तो १६।३९।५६ यह भोग्यांश हुये, अब सायनाऽर्क वृश्चिक राशिका है, तो वृश्चिकका उदयप्रमाण ३४७ पलहैं इनसे भोग्यांशादिको गु-

णदिया (और विपल व प्रतिपल को ६० से चढादिया) तो ५७८ कर
१५६।५२ हुये इसमें ३० का भागलिया, भागलेनेसे १९२।४५।५३ घट
सूर्यके भोग्य पलादि अंक हुये. इनको इष्टनाडी पलको पलात्मक कि जि
तो २०९९ हुये, इनमें सूर्यका भोग्यपलादि घटाया घटानेसे शेष तो
१९०६।१४।७ हुये फिर इनमें वृश्चिकके आगे धनके उदय ३४३ जो
घटाया, घटानेसे १५६३।१४।७ शेष रहे, फिर धनके आगे मकर
उदय ३०३ को घटाया, घटानेसे १२६०।१४।७ शेष रहे, फिर मकर
रके आगे कुम्भके उदय २५१ को घटाया, घटानेसे १००९।१४।७ शेष
रहे. अनन्तर कुम्भके आगे मीनके उदय२१८को घटाया. घटानेसे ७९१
१४।७ शेषरहे. तदनन्तर मीनके आगे मेषके उदय २१८ को घटाया,
५७३।१४।७ शेष रहे, फिर मेषके आगे वृषके उदय २५१ को घटाय
घटानेसे ३२२।१४।७ शेषरहे, फिर वृषके आगे मिथुन के उदय ३०
को घटाया, तो १९।१४।७ शेष रहे, अब इनमें मिथुनके आगे क
का उदय ३४३ पल घटनहीं सकता इस कारण कर्कको अशुद्धसं
हुई, इससे शेष १९।१४।७ को तीस ३० से गुणाकर दिया, गुणा
रनेसे ५७७।३।३०। हुये, इसमें अशुद्धसंज्ञक कर्कके उदय ३४३ से भाग
दिया, भागदेनेसे, १।४०।५६ यह अंशादि (अंश कला विकला) लब्ध
अंक हुये, इनमें अशुद्धोदय कर्कसे पूर्व मिथुन राशिकी संख्या ३ को जोड़
दिया, तो ३।१।४०।५६ यह राशिसहित अंशादि हुये. इनमें तात्कालिक
अयनांश २१।००।३१ को घटा दिया तो २।१०।४०।२५ यह राश्यादि
स्पष्ट लग्न भया, अर्थात् वर्षप्रवेशसमय मिथुनलग्नके १० अंश, ४०
कला, २५ विकला हुये, यह भोग्यांशादि परसे लग्न स्पष्ट करनेका उदा
हरण कहा, यदि भुक्तांशादि परसे लग्नसाधन करनेकी इच्छाहो तो गणित
तो पूर्वोक्त अनुसार करना, केवल भेद इतनाहै,कि–भुक्तांशोंको ग्रहणकर
स्वोदय राशिप्रमाणसे गुणाकरै फिर उसमें तीसका भाग देवै. भाग देने
लब्ध अंक सूर्यके भुक्तपलादि हुये, उनको इष्टकाल घटी पलमें घटा

कर शेषांकोंमें उदयराशिसे पिछाडीके उदय राशियोंको घटावै, घटाते घटाते जिस राशिका उदयप्रमाण न घटे वह राशि अशुद्ध हुई, और जिस राशितक घटाया वह शुद्धराशि हुई, घटानेसे शेष अंकोंको तीससे गुणा करदेवै, फिर उसीमें अशुद्धोदयसे भागलेवै. भाग लेनेसे जो लब्ध अंशादि मिलैं, उनको अशुद्धोदयकी राशिसंख्यामें घटायदेवै, अनन्तर अयनांशोंको उसमें घटाय देवै, तो शेष राश्यादि स्पष्ट लग्न होताहै, और यदि भुक्तपलादि अपने इष्ट घटीपलमें न घटैं तो इष्ट पलोंको तीससे गुणा करके सायनार्क राश्युदयसे भागलेवै, जो लब्ध अंशादिक मिलैं उनको सूर्यमें घटाय देवै तो स्पष्टलग्न होताहै,— यहां रात्रिलग्न करनाहो तो छे राशि युक्तकर देवै ॥

चतुर्थ व दशमलग्नसाधनार्थ नतसाधन.

पूर्वं नतं स्याद्दिनरात्रिखण्डं दिवानिशोरिष्टघटीविहीनम् ॥ दिवानिशोरिष्टघटीषु शुद्धं द्युराशिखण्डं त्वपरं नतं स्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ—अब चतुर्थ व दशम लग्नसाधनके अर्थ नतसाधन कहतेहैं. दिनरात्रिखंडमें दिनरात्रिकी इष्टकालघटी घटजानेसे पूर्वनत होताहै, अर्थात् दिनार्धमें दिनगत इष्ट घटी घट जावैं तो दिवा पूर्वनत होताहै, और रात्रिखण्ड (रात्र्यर्द्ध) में रात्रिगत घटी घटजावै तो रात्रिका पूर्वनत होताहै, तथा दिनरात्रिकी इष्ट घटीमें दिनरात्रिखण्ड घटजावै तो दिनरात्रि परनत होताहै, अर्थात् दिनगत इष्टघटीमें दिनार्ध घटजावै तो दिवाका परनत, और रात्रिगत इष्टघटीमें रात्रिखण्ड घटजावै तो रात्रिपरनत होताहै ॥ २३ ॥ यहां यह वा तत्स्मरणरहे कि जहां रात्रिगत घटी कहा, वहां सूर्यास्तके उपरान्त गतघटी लेना, दिनरात्रिका विभाग करके नतसाधन करना, क्योंकि मध्यान्ह वा मध्यरात्रिके बिन्दुसे पूर्व वा परके नीचेके भागका नाम नतहै, इस नतको३० में घटानेसे शेष घट्यादि उन्नत होताहै ॥

नतोदाहरण.

दिनमान घटीपल २७।१३ दिनार्ध घटी पल १३।३६।३० रात्रिप्रमाण ३२।४७ रात्र्यर्ध १६।२३।३० यहां वर्षप्रवेशसमय रात्रि घटी पल ७।४६ को रात्र्यर्द्ध घटीपल १६।२३।३० में घटाया। शेष घट्यादि ८।३७।३० यह रात्रिपूर्वनत भया, इसको ३० घटाया तो शेष २१।२२।३० यह पूर्वोन्नत घट्यादि भया.

केशवाचार्यके मतसे नतोन्नतपूर्वक दशम चतुर्थभावसाधन.

रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोगतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्युतं चोन्नतम् ॥ यत्पूर्वोन्नतषड्युक्तरवितः पश्चान्नतादित्यतो यल्लंकोदयकैश्चलग्नमिव तन्माध्यंसषड्भं सुखम् ॥ २४ ॥

अर्थ—केशवाचार्यके मतसे नतोन्नतद्वारा दशम व चतुर्थ भावसाधन वर्णन करतेहैं, कि दिनमें पूर्वनत दिनमें पश्चिमनत, रात्रिमें पूर्वनत, राशिमें पश्चिमनत, ऐसा चार प्रकारका नत होताहै, तहां अर्धरात्रिके उपरान्त शेष रात्रिमें दिनार्ध युक्त करनेसे रात्रिका पूर्वनत होताहै, अर्धरात्रिके पूर्व रात्रिगतमें दिनार्ध युक्त करनेसे रात्रिका पश्चिमनत होताहै, ऐसेही दिनगत और शेषका दिनार्धके साथ अन्तर करना अर्थात् दिनगत घटी आदिकको दिनार्धघटीमें घटानेसे दिनका पूर्वनत, और दिनशेष अर्थात् मध्य आदिक दिनके ऊपर इष्ट होय तो इष्टकाल घटी आदिकमें दिनार्ध घट्यादिकको घटावै तो दिनका पश्चिमनत होताहै. उस नतको ३० में हीन करै तो वैसाही उन्नत होताहै, अर्थात् पूर्वनत कम करै तो पूर्वोन्नत और पश्चिमनत कम कियाहोतो पश्चिमोन्नत होताहै—जैसे रात्रिगत घटीपल ७।४६ दिनार्धघटीपल १३।३६।३० युक्त किया तो २१।२२।३० यह रात्रि

घटचादि पश्चिमनत भया॰ इस नतको ३० में कम किया तो ८।३७।३० यह पश्चिमोन्नत भया॰ यदि पूर्वउन्नत आयाहोय तो उन्नतको इष्ट काल मानकर तात्कालिक सूर्यमें ६ राशि युक्त करके लंकोदयप्रमाणसे पूर्वोक्त लग्नसाधनके समानरीतिसे दशमसाधन करै, और पश्चिमनत आयाहो तो नतको इष्टकाल कल्पना करके, लग्नके प्रमाण लंकोदयसे दशमभाव साधनकरै, दशमभावमें ६ राशि युक्त करनेसे चतुर्थभाव होताहै, इस श्लोकमें ' अह्नोगतं शेषकं ' यहां ' शेषकं ' इस शब्दसे अनेक पण्डित दिनकी शेष घटी लेकर नत साधन करतेहैं, ऐसाभी ठीकहे, मध्यदिनके उपरान्त वर्षप्रवेश होनेपर इष्टकालकीभी यहां शेषसंज्ञा मानीहै, उसमें दिनार्द्ध घटजानेसे दिनका पश्चिमनत होताहै, इसका प्रमाण पूर्व लिखचुकेहैं जो नीलकंठ दैवज्ञने मानाहै, दूसरा प्रमाण पद्धतिचिंतामणिका हायनरत्नमें देखो, ' यथा ' " दिनार्द्धयुग्रात्रिगतावशेषनाड्यो नतं पश्चिमपूर्वकं स्यात् ॥ द्युयातहीनं द्युदलं नतं प्राग् द्युखण्डहीने द्युगतं परं तत् ॥१॥" अर्थः—रात्रिगत घटीपलमें दिनार्ध घटीपल युक्त करै तो रात्रिका पश्चिमनत, और रात्रिशेष घटीपलमें दिनार्ध घटीपल युक्त करै तो रात्रिका पूर्वनत होताहै, तथा दिनार्ध घटीपलमें दिनगत घटीपल घट जानेसे दिनका पूर्वनत और दिनगत घटीपलमें दिनार्ध घटीपल घटजावै तो दिनका परनत होताहै ॥ २४ ॥

मध्याह्ने चार्धरात्रे वा स्वेष्टकालो यदा भवेत ॥
तदा तात्कालिकस्सूर्यो भवेल्लग्नं खतुर्यकम् ॥ २५ ॥

अर्थ—जो ठीक मध्यान्हमें अपना इष्टकालहो तो तात्कालिक स्पष्ट सूर्य दशमभाव होताहै और जो ठीक मध्यमरात्रिसमय अपना इष्ट कालहो तो तात्कालिक सूर्य चतुर्थभाव होताहै ॥ २५ ॥

दशम व चतुर्थ भाव साधनोदाहरण.

अब दशम व चतुर्थ भावसाधनका उदाहरण लिखतेहैं, लग्नसाधन वैसही रीतिसे दशमभाव साधन कियाहै, केवल भेद इतनाही है कि, लग्नसाधनमें स्वदेशोदय लग्नका प्रमाण लियाजाताहै, और दशमसाधनमें लंकोदयका प्रमाण लियाजाताहै, और इष्टकाल घटीपलके स्थानमें नत व उन्नतकालको घटीपलका ग्रहणहै, तहां लग्नसाधनके उदाहरणमें

भोग्यांशोपरसें लग्नसाधनका क्रम दर्शायाहै, अब भुक्तांशोंपरसे द
साधनका उदाहरण लिपिबद्ध करतेहैं, तात्कालिक सायनाऽर्क ७।
२०।४ राशि ७ को छोड़कर भुक्त अंशादि १३।२०।४ हुये, साय
ऽर्क वृश्चिक राशिहै, तो यहां रात्रिका लग्न साधन करनाहै• इस का
६ राशि जोडदेनेसे वृषराशि हुई, वृषका लंकोदय मान २९९ प
इनसे भुक्तांशादिको गुणा दिया (और विपल
प्रतिपल को ६० से चढादिया) तो पलादि
३९८७।६।३६ हुये, इसमें ३०का भाग लिया,
भागलेनेसे १३२।५४।१३ यह सूर्यके भुक्त प-
लादि अंक हुये इसको पूर्ववत ८।३७।३० की
पलात्मक संख्या ५१७।३० में घटायातो ३८४

लंकोदय लग्नप्रमा		
मेष	२७८	मीन
वृषभ	२९९	कुंभ
मिथुन	३०३	मक
कर्क	३०३	धन
सिंह	२९९	वृश्चि
कन्या	२७८	तुला

।३५।४७ शेषरहे, इसमें वृषसे [2]पीछेकी राशि मेषके लंकोदयमान २
को घटाया तो १०६।३५।४७ शेष रहे• इसमें मीनका उदय२७८
घटता, इसकारण शेष १०६।३५।४७ को ३० से गुणाकरदिया
३१९७।५३।३० हुये• इसमें अशुद्ध मीनके मान२७८ से भागदिया
लब्ध अंशादि ११।३०।११ हुये, यहां ऋण लग्न क्रियासे दशमसा
कियाहै, इसकारण एकराशि अर्थात् ३० अंशोंमें लब्धांशादि ११।
११ को घटायातो १८।२९।४९ रहे, सो मीनराशिके साथ स्थापित
तो ११।१८।२९।४९। अथवा अशुद्धोदय मीनकी संख्या मेषसे बार
है तो बारह राशिमें घटाया तो ११।१८।२९।४९ हुये• इसमें अयनां
को घटाया तो १०।२७।२९।१८ यह अंशादि स्पष्ट दशम भाव [1]
यहां सूर्यराशिमें छे राशि न जोडकर इसी क्रियासे चतुर्थ भाव हो
कारण यह कि,चतुर्थ व दशममें केवल छेराशिका अन्तर है अन्यकुछभी
नहींहै,दशमभावमें छे राशि जोड़ देनेसे४।२७।२९।१८यह चतुर्थभाव।

---

१ यद्यपि विनानतकेभी दशमभाव साधनकी रीति ताजिक ग्रन्थोंमें कही है और
उदाहरणसहित लिखना योग्यथा परंतु हमने इस ग्रन्थमें सावकाशाभावसे न लि
द्वितीभावमें लिखना विचाराहै ॥ २ भुक्तांशों परसे लग्न साधन करनेमें पीछेकी
घटाई जाती है अर्थात् सब क्रिया ऋणलग्नवत् करनी होतीहै ॥

विनानतके दशमभाव स्पष्टसारणी.

स्पष्टलग्नकी राशि व अंशके तुल्यकोष्टकमें जो फलहो वही दशमभाव जानना.

राशि.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे. ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
	२३	२४	२५	२५	२६	२७	२८	२८	२९	०	०	१	२	३	३	४	५	६	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१५
	५६	३७	१८	५९	४०	२१	२	४३	२४	५	४०	२८	१५	२	४६	३६	२३	१०	५७	४४	३१	१८	५	७	४२	३२	२४	२४	६	५६
	२६	५६	२६	३८	४३	४२	४७	५२	२७	५२	११	५९	२६	३	३८	४९	१०	४६	४६	४८	४०	५१	१	१४	५०	४३	४८	५०	१	४८
वृ. १	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	४३	२३	२९	१९	१०	१	५२	४२	३३	२४	१८	६	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१५	१६	१७	१८	१८	२०	२१	२४	२३	३५	४१
	३९	२१	६	२४	४२	२४	६	५४	४४	३०	१८	२	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५०	५४	५४	५४	५४	५४	५४	३४	३०	४०	१७
मि. २	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
	१५	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०
	४६	५२	५७	३	९	१५	२०	२९	३१	५७	४१	५१	५	९	३२	४६	०	१४	२८	४३	५५	९	२३	३७	५१	४	१८	३२	४६	०
	४८	४२	५८	२	२७	३	३८	१३	५१	२४	२०	२३	१२	८	५३	३७	३८	२४	१०	५५	५५	४०	२९	१७	५	५७	४२	२७	२१	१३
क. ३	११	११	११	११	११	११	११	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२१	२२	२३	२४	२६	२७	२८	२९	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	१९	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२६
	१४	१७	४१	५५	९	२३	३६	५०	४	१८	३२	४७	२	१९	३१	४५	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५०	०
	०	४५	३६	२३	१६	२४	४१	२६	५३	१९	७	५१	२२	४१	१५	४२	१३	३५	३९	५२	६	१९	३५	४८	१२	१६	२९	४३	५६	१२
सिं. ४	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	२७	२८	२९	०	१	२	४	५	६	७	८	९	१०	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	९	१८	५७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	२२	६	२०	३५	४४	३५	४४	१०	१२	१४	१६	१८	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	५२
	२५	३९	५२	६	१९	३३	४८	२	१६	३०	५४	३२	५	८	१२	१२	१९	२०	१५	४	८	९	१०	१५	५५	७	२	५	८	१

क. ५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कुं. १०	मी. ११
१ २८ ३८ २	३ ० ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
२ ० ४१ ८	३ १ ४ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४० ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
२ ४ ५० ०	३ ५ ५९ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ ४४ ९	८ ९ ५३ १
२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १९ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १९	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २९	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
२ १३ ७ ५२	३ १४ ३४ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ४६ १५	८ १२ १२ ३६
२ १४ १० ८	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	६ २८ १० ३२	७ २२ २८ २७	८ १२ ५९ २६
२ १५ १२ १	३ १६ १० ०	४ २१ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० ४२
२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २२ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ ४६ ४८	८ १४ २० ४२
२ १७ १६ ७	३ १९ १० ८	४ २४ ३८ ३	६ ० ४२ ३	७ ० १२ ५०	७ २४ २९ ५९	८ १५ ४० ३५
२ १८ १४ १४	३ २० ५९ १९	४ २५ २५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३० १
२ १९ २२ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ २
२ २० २१ ३०	३ २२ ३८ ८	४ २८ ११ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२ २१ २९ ३२	३ २३ ४८ ९	४ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ५
२ २२ २७ १	३ २४ ५६ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ६ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ७
२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ ३
२ २४ ३२ ८	३ २७ १५ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ २६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	७ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५०	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३९ ०	७ ११ ४७ ५०	८ २ ३ ४	८ २३ १५ ४

यह उपरोक्त दशम स्पष्ट सारणी यद्यपि किसी एक देशके स्वोदय मानसे रची गईहै. इस कारण कला विकलामें समान भावको प्राप्त नहीं होती तथापि सामान्य पण्डितोंकी अवश्यमें व सहायकहै. अर्थात् स्पष्ट दशमभाव जो गणितसे आताहै उसमें और सारणी-प्रोक्त दशमस्पष्टमें केवल कलाओंका अन्तर आवताहै. और कला-ओंके अन्तरसे कभी कभी एक अंश इधर उधर हो जाताहै, परन्तु यदि सूक्ष्मभावसे देखा जावै तो कलाओंमेंभी नहीं, कुछ विकलाओंमें अन्तर आवताहै. इस कारण यह दशमस्पष्ट सारणी सर्वहितकारी है ॥

धनादिभावसाधन.

लग्नं चतुर्थात्संशोध्य शेषषड्भि६र्विभाजितम्॥ राश्यादि योजयेल्लग्ने सन्धिः स्याल्लग्नवित्तयोः ॥ २६ ॥ सन्धिः षडंशसंयुक्तो धनभावो भवेत्स्फुटः ॥ धनभावः षडंशा-ढ्यः सन्धिर्धनतृतीययोः ॥२७॥ षडंशः संयुतः सन्धि-स्तृतीयो भाव उच्यते ॥ षडंशाढ्यस्तृतीयः स्यात्सन्धि-र्भ्रातृचतुर्थयोः ॥ २८ ॥ तृतीयसन्धिरेकाढ्यस्तुर्यस-न्धिर्भवेदिह ॥ द्व्याढ्यस्तृतीयभावोऽपि पुत्रभावो भवे-त्स्फुटः ॥ २९ ॥ त्र्याढ्यो द्वितीयसन्धिः स्यात्सन्धिः पञ्चमभावजः ॥ धनभावो वेदयुतो रिपुभावः प्रजाय-ते ॥ ३० ॥ लग्नसन्धिः पञ्चयुतः सन्धिः स्याद्रिपुभाव-जः ॥ लग्नाद्याः सन्धिसहिता भावाः षड्राशिसंयुताः ॥ सप्तमाद्या भवन्तीह भावाः सर्वे ससन्धयः ॥ ३१ ॥

अर्थ—लग्नको चतुर्थभावमें घटानेसे जो शेषांकहों उनमें छे ६ का भागदेवै अर्थात्, लग्न व चतुर्थके अन्तरका षष्ठांश (छठा भाग)

लेवै वह षष्ठांश राश्यादि लग्नमें जोड देवै तो लग्नकी विरामसन्धि औ धनभावकी आरंभसन्धि होतीहै ॥ २६ ॥ उस सन्धिमें षष्ठांश यु करनेसे धनभाव स्फुट होताहै, धन भावमें षष्ठांश जोड देनेसे धनभाव विराम (समाप्ति) सन्धि और तृतीयभावकी आरम्भसन्धि होतीहै॥२७ उस सन्धिमें षष्ठांश युक्त करै तो उसको तृतीयभाव कहा है. फि तृतीयभावमें षष्ठांश जोड देवै तो तृतीयभावकी विराम औ चतुर्थभावकी आरम्भसन्धि होतीहै ॥ २८ ॥ और तृतीयभाव सन्धिमें एक जोडदेवै तो वह चतुर्थभावकी सन्धि होतीहै, तृतीयभा वमें दो जोडदेनेसे पुत्र-(पंचम)-भाव स्फुट होताहै ॥ २९ ॥ द्विती यभावकी सन्धिमें तीन जोड देनेसे पंचमभावकी सन्धि होतीहै, ध भावमें चार युक्त करनेसे रिपु (छठा) भाव होताहै ॥ ३० ॥ लग्न की सन्धिमें पांच युक्त करै तो रिपुभावकी सन्धि होतीहै. सन्धि सहि लग्नादिक भावोंमें छे छेराशि संयुक्त करनेसे सप्तम आदिक सब भा सन्धिसहित होतेहैं ॥ ३१ ॥

धनादिभावसाधनोदाहरण.

लग्नराश्यादि २।१०।४०।२५ चतुर्थ भाव राश्यादि ४।२७।२९।1 चतुर्थमें लग्नको घटाया अर्थात् लग्न चतुर्थका अन्तर २।१६।४८।५ इसमें छेका भाग दिया अर्थात् षष्ठांश (छठाहिस्सा) निकाला त ०।१२।४८।८।५० यह अंक राश्यादि (षष्ठांशसंज्ञक) हुये, इ षष्ठांश ०।१२।४८।८।५० को लग्न २।१०।४०।२५ में युक्त किया त २।२३।२८।३३।५० यह लग्नकी विराम और धनभावकी आरंभसन्धि हुई, इसमें षष्ठांश जोडदिया तो ३।६।१६।४२।४० यह धनभाव हुआ इसमें षष्ठांश युक्त किया तो ३।१९।४।५१।३० यह धनभावकी विराम सन्धि हुई, इसी प्रकार पूर्वोक्त रीतिसे बारहो भावका स्पष्ट चक्र लि खाहै सो चक्रमें देखकर सम्पूर्ण भावोंका साधन करना, भलीभां समझलेवै ॥

आगे भावग्रह चलित विचार लिखते हैं:—

भावकुण्डली.
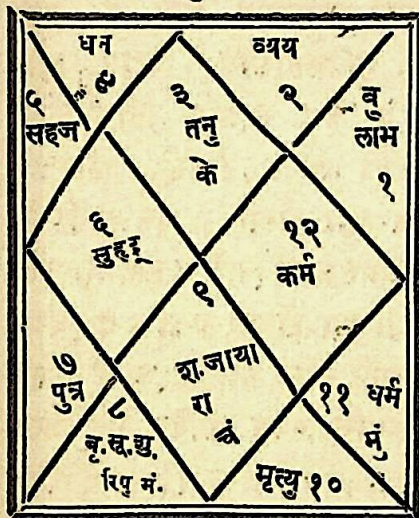
तात्कालिक अयनांश २१।००।३१ सायनाऽर्क राश्यादि ७।१३।२०।१४ अस्य भोग्यांशादि १६।३९।५६ स्वोदयाद्भवेर्भोग्यंपलादि १९२।४५।५३ स्पष्ट लग्नं राश्यादि. २।१०।४०।२५ रात्रौ पूर्वनतं घट्यादि ८।३७।३० लंकोदयाद्भवेर्भुक्तं पलादि १३२।५४।१३ स्पष्ट दशमं राश्यादि १०।२७।२९।४९ सषड्भं चतुर्थं राश्यादि ४।२७।२९।१८ लग्न चतुर्थयोरन्तरम् २।१६।४८।५३ अस्य षष्ठांशः ००।१२।४८।८।५० ॥

अथ तन्वादयो भावाः ससन्धयः स्युः—

त	सं	ध	सं	स	सं	सु	सं	पु	सं	रि	सं	भा॰
२	२	३	३	४	४	४	५	६	६	७	७	रा॰
१०	२३	६	१९	१	१४	२७	१४	१	१९	६	२३	अं॰
४०	२८	१६	४	५३	४१	२९	४१	५३	४	१६	२८	क॰
२५	३३	४२	५१	०	९	१८	९	०	५१	४२	३३	वि॰
	५०	४०	३०	२०	१०		१०	२०	३०	४०	५०	

जा	सं	मृ	सं	ध	सं	क	सं	ला	सं	व्य	सं	भा॰
८	८	९	९	१०	१०	१०	११	००	००	१	१	रा॰
१०	२३	६	१९	१	१४	२७	१४	१	१९	६	२३	अं॰
४०	२८	१६	४	५३	४१	२९	४१	५३	४	१६	२८	क॰
२५	३३	४२	५१	०	९	१८	९	०	५१	४२	३३	वि॰
	५०	४०	३०	२०	१०		१०	२०	३०	४०	५०	

ग्रहभावफल विचार.

खेटे भावसमे पूर्णं फलं सन्धिसमे तुखम्॥ खेटे सन्धि द्वयान्तस्थे फलं तद्भावजं भवेत् ॥ हीनेधिके द्विसंधिभ्यां भावे पूर्वापरे फलम् ॥ ३२ ॥

अर्थ–जो खेट (ग्रह) भावके समान होवै तो पूर्ण फल करता और जो ग्रह सन्धिके समान होवै तो शून्य फल करताहै, तथा दो सन्धियोंके बीच जो भावहो उसी भावमें स्थितग्रह उसी भावका फ करनेवाला होताहै, अर्थात् आरम्भ सन्धिसे अधिक विरामसन्धिसे न् ग्रह जिस भावमें स्थितहो, वह उसीभावका फल देताहै, और आरम् विराम इन दोनों सन्धियोंसे हीन अथवा अधिक ग्रहके होतेहुये पूर्व परभावमें फल होताहै, अर्थात् आरम्भसन्धिसे न्यून जो ग्रह होवै तो पूर्वभावका फल देताहै, तथा जो विरामसन्धिसे अधिकहो तो (आगे) भावका फल देताहै, यहां आरम्भसन्धि और विरामसन्धि प्रयोजन यहहै, कि जैसे लग्नकी सन्धिहै तो उसको लग्नकी विरा सन्धि कहतेहैं और वही धनभावकी आरम्भसन्धि कहातीहै ॥३२

तथाच.

आरम्भसन्धेर्द्युचरो यदोनः फलंददात्यादिमभावजातम् ॥ विरामसन्धेरधिकस्तदानीमागामि भावोत्थफलप्रदः स्यात्३

अर्थ–जो ग्रह आरम्भ संधिसे न्यून हो तो वह पूर्व (पिछाडी भावसे उत्पन्न फलको देताहै, और जो विरामसन्धिसे अधिकहो आगेवाले भावसे उत्पन्न फलको देनेवाला होताहै ॥ ३३ ॥

ग्रहभावविंशोपक बलसाधन.

ग्रहसन्ध्यन्तरं कार्यं विंशत्या गुणितं भजेत् ॥ भावसन्ध्यन्तरेणाप्तं फलं विंशोपकाः स्मृताः ॥ ३४

अर्थ-अब ग्रहोंका भाव विंशोपकबलसाधन करतेहैं अर्थात्-कौन ग्रह किस भावमें कितने विश्वा फल देवैगा, सो कहतेहैं. कि, ग्रह और सन्धिका अन्तर करै फिर उस अन्तरको बीससे गुणा करैं, तदनन्तर उसमें भाव और सन्धिके अन्तरसे भागलेवै, भागलेनेसे जो अंशादि फल मिलै उसीको पूर्वाचार्योंने विंशोपक कहाहै अर्थात्-इतने विश्वा यह ग्रहफल देवैगा ॥ ३४ ॥

विंशोपकबलोदाहरण.

अब विश्वाबल ल्यावनेका उदाहरण कहतेहैं, सूर्य राश्यादि ६।२२।१९।३३ इसके समीपकी सन्धि ६।१९।४।५१ इन दोनोंका अन्तरकिया तो शेष अंशादि ३।१४।४२ रहे इनको बीससे गुणा किया, गुणाकरनेसे ६४।५४।०० यह भाज्य हुआ, और भावरिपु ७।६।१६।४२ इसकी पूर्वसन्धि ६।१९।४।५१ इसका अन्तर किया तो शेष १७।११।५१ रहे, यह भाजकजानो, भाग लेनेके अर्थ भाज्य भाजकको ६० से गुणा दिया, भाज्य ६४।५४।०० को ६० से गुणा तो २३०४५४ हुये, और भाजक १७।११।५१ को ६० से गुणा किया तो ६१९११ हुये इससे भाग लेनेपर लब्ध ३।४३ यह सूर्यका विंशोपकात्मक बल भया, अर्थात् रिपु (षष्ठ) भावमें सूर्यका २।३६ विश्वाबल जानना, यहां सूर्य पंचमभावकी सन्धिसे अधिकहै इसकारण छठे भावका फल करेगा, इसी प्रकार चन्द्रमा आदिकका विश्वाबल साधन करै, यहां चक्रमें जो ग्रह जिसभाव में रहा, अथवा चलायमान होकर जिस भावमें चलागया सो स्पष्ट लिख दियाहै ॥

ग्रहभाव विंशोपक बलचक्रम्.

सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	रा	के	ग्रह
रिपु	जाया	रिपु	लाभ	रिपु	रिपु	जाया	जाया	तनु	भाव
३ ४३	१४ १८	१५ ४४	३ ५०	१६ [illegible]	११ [illegible]	८ [illegible]	९ [illegible]	९ [illegible]	विश्वाबलम्

मुंथासाधन.

सम्प्राप्तवर्षप्रमितिं पतङ्गैर्भजेच्च सूर्यांकसमानभावे ॥ स्वभूतिलग्नान्मुथहास्थितिः स्यात्तद्राशिगाब्दे जननोदयांशैः ॥ ३५ ॥ वर्षेण भुङ्क्ते मुथहैकराशिं मासेन भागद्वितदलाख्यम् ॥ कलाश्च पंचैव दिनेन नूनं तद्राशिनाथे मुथहाधिपः स्यात् ॥ ३६ ॥

अर्थ–वर्तमान वर्षसंख्यामें बारहका भाग देवै, जो शेष रहै, लग्नसे उसी राशिमें वर्षप्रवेश समय मुथहाकी स्थिति होतीहै, जन्म के जितने अंशहों उतनेही अंश मुथहाके जानना ॥ ३५ ॥ एक मुथहा एकराशि भोगताहै, एकमासमें ढाई अंश अर्थात् २ अंश कलाका भोग होताहै, एक दिन ५ कलाका भोग जानना, जिस में मुथहा स्थितहो उस राशिका स्वामी मुंथेश होताहै, मुंथाके १ २मुथहा, ३ इंथा, ४ इंथिहा, ५ अंधिहा ये नामहैं ॥ ३६ ॥

तथाच.

याताब्दसंख्याद्रविभिर्विभक्ताच्छेषेन्थिहास्यादथ जन्मलग्नात् ॥ जन्मांगभागैः सहिता लवाद्यास्तात्कालिसाद्यगतिः प्रयुक्ता ॥ ३७ ॥ मुन्था गतिः प्रतिदिनं शलिप्तिकाश्च यत्स्थानगा भवति तद्भवने नियोज्या ॥ सौम्यान्विता स्वपतिना सहितेक्षिता चेत् सौख्यार्थदा विधकार्यकरा निरुक्ता ॥ ३८ ॥

अर्थ–गतवर्षसंख्याको बारह करके विभाजितकरै अर्थात् बा भाग देवै जो शेषांक हो उसको जन्मलग्नमें जोडदेवै तो यहां जन अंशादि सहित रक्खै और शेषांक संयुक्त करै तो तात्कालिक

स्पष्ट होताहै, मुंथाकी गतिभी प्रयुक्त करै, मुंथाकी दिनगति कहतेहैं, कि, ॥ ३७ ॥ मुंथाकी गति प्रतिदिन पांच कला होतीहै, इस गणनासे मुंथा जिस स्थानमें आकर प्राप्तहो, उस स्थानमें स्थापित करै, जो मुंथा अपने स्वामी शुभग्रह करके युक्त अथवा इष्ट हो, सौख्य (आरोग्यादि सुख) अर्थ (धनलाभादि कामना) का दाता और विविध (अनेक) कार्यौंको सिद्धि करनेवाला कहाहै ॥ ३८ ॥

तथा.

मेषादिजन्मलग्नं च गतवर्षाणि योजयेत् ॥
द्वादशेन हरेद्भागं शेषं मेषादि चेन्थिहा ॥३९॥

अर्थ–मेषको आदिले जन्मलग्नकी संख्या और गतवर्षसंख्याको जोडदेवै, फिर वारहसे भागलेवै शेषांक संख्यावाली मेषादि गणनासे जो राशिहो उसी राशिपर मुंथाकी स्थिति जानना. यह तीन रीति मुथहाकी कहीं. तीनों रीतिसे निकालनेका उदाहरण आगे लिखतेहैं॥३९॥

मुंथासाधनोदाहरण.

वर्तमान वर्षसंख्या ३७ में १२ का भाग दिया तो शेष १ जन्मलग्न मकर है तो पहिली मकरहीपर मुंथहा रहा, क्योंकि शेष १ ही है. इसकारण गणना करनेसे पहिली मकर हुई, यह पहिला प्रकार हुआ. अब दूसरा प्रकार कहतेहैं, कि गतवर्ष ३६ में वारहका भाग दिया तो शेष शून्य अर्थात् कुछ नहीं, तो मकरलग्नका जन्महै. यहां कुछ शेष नहीं रहा जो युक्त किया जावै इस कारण मुंथाकी स्थिति मकरहीमें जानना, यह दूसरा प्रकार हुआ. अब तीसरा प्रकार लिखतेहैं, कि मेष आदि गणनासे जन्मलग्न मकर दशवीं है, और गतवर्षसंख्या छत्तीस है तो १०।३६ को जोडनेसे ४६ हुये, वारहका भागलिया तो शेष १० मेषसे गणनाकरनेपर दशवीं राशि मकर हुई तो मुथहा मकर राशिपर जानना, अब मुंथाके अंश जाननेकी रीति यह है कि, जन्मलग्नके जितने

अंश कला विकलाहों वही मुंथाके स्थापित करना, १ महीनामें मुंथा गति २ अंश ३० कला होतीहै, और प्रतिदिन पांच२ कला मुंथा बढ़ यहां जन्मलग्नके अंशादि २३।४६।१० है तो मुंथाकेभी इतनेही ४६।१० अंशादि हुये. प्रतिमास ढाई अंश भोगनेसे ढाई महीनेके रान्त मुंथहा दूसरी राशिपर चलाजायगा, अर्थात् चौथेमास प्रवे मुंथहाकी कुम्भराशिपर स्थिति जानना, और प्रतिदिन पांच २ की णनासे दो महीना बाईस दिनगये, उपरान्त अर्थात् ८ वें दिन प्रवे मुंथहाकी स्थिति कुंभ राशिपर जानना ॥

त्रिराशिपतिज्ञान.

तिग्मांशुशुक्रशनिशुक्रसुरेज्यचन्द्रशाशांकिभौमशनि-
भौमसुरेज्यचन्द्राः ॥ देवेज्यशीतकिरणेन्दुजभूमिपुत्र-
सूर्योशनश्शनिसितार्किकुजेज्यचन्द्राः ॥ ४० ॥
वर्षस्वामिविचारार्थं मेषात्त्रैराशिकेश्वराः ॥
दिवारात्रौ क्रमेणैते कल्पनीयाः प्रयत्नतः ॥४१॥

अर्थ-सूर्य, शुक्र, शनि, शुक्र, गुरु, चन्द्र, बुध, भौम (मंगल शनि, भौम, गुरु, चन्द्र और गुरु, चन्द्र, बुध, मंगल, रवि, शुक्र, शनि, शुक्र, शनि भौम, गुरु, चन्द्र ॥४०॥

त्रिराशिपतिचक्रम्.

मे	वृ	मि	क	सिं	कं	तु	वृ	ध	म	कुं	मी	लग्न
सू	शु	श	शु	वृ	चं	बु	मं	श	मं	बृ	चं	दिवा
वृ	चं	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं	बु	चं	रात्रौ

वर्षपति जाननेके अर्थ यह पूर्वोक्त ग्रह मेष आदि लग्नोंसे दिवावर्ष वेश और रात्रिवर्ष प्रवेशमें क्रमपूर्वक त्रैराशिकेश्वर हैं, अर्थात् पूर्वो सूर्यादि १२ ग्रह दिनमें मेषादि लग्नोंके (त्रैराशिकेश्वर) हैं, और गुरुआदि १२ ग्रहरात्रिमें मेषादिलग्नोंके (त्रैराशिकेश्वर) हैं, सो च में स्पष्ट समझलेना ॥ ४१ ॥

दृष्टिविचार.

नभश्चराणां न प्रोक्तं यावद्वीक्षणलक्षणम् ॥
तावन्न शक्यते वक्तुं फलं वर्षे शुभाशुभम् ॥४२॥

अर्थ–जबतक ग्रहोंकी दृष्टिका लक्षण नहीं कहजाता, तबतक वर्षमें शुभाशुभ (अच्छा बुरा) फल नहीं कहाजासकता ॥ ४२ ॥

लाभं तृतीये चरणेन पश्येद्ग्रहश्चतुर्थन्दशमं दलेन ॥ तथा त्रितुल्यैश्चरणैस्त्रितुल्यं सम्पूर्णदृष्टया निजसप्तमे च ॥ ४३ ॥

अर्थ–प्रत्येकग्रह लाभ (ग्यारहवे) तृतीय (तीसरे) स्थानको एक चरणदृष्टिसे (चौथाई) देखताहै, और चतुर्थ (चौथे) दशम (दशवें) स्थानको अर्ध (आधी) दृष्टिसे देखताहै, त्रिकोण (नवें पाचवें) स्थानको तीन चरण (पौन) दृष्टिसे देखताहै, तथा निज (अपने) सप्तम (सातवें) स्थानको पूर्ण (पूरी) दृष्टिसे देखताहै. यहां एक चरणसे १५ कला तथा ५ विश्वा दृष्टि जानना, आधी दृष्टि ३० कला तथा १० विश्वा जानना, तीन चरणवाली दृष्टि ४५ कला तथा १५ विश्वा जानना, और पूर्ण दृष्टि ६०कला तथा२०विश्वा जानना. परंतु अपने अपने दीप्तांशोंके अन्तरभेदसे सम्पूर्ण ग्रह अपना अपना दृष्टिफल यथोक्त देतेहैं. सो दीप्तांश आगे वर्णन करेंगे,यहां प्रथम पूर्वोक्त दृष्टिका फल कहतेहैं ॥ ४३ ॥

दृष्टिफल.

या पाददृष्टिस्सुखलाभदात्री स्नेहप्रदा बुद्धिविवृद्धिकर्त्री॥
नन्वर्द्धदृष्टिस्स्वजनैर्विरोधं गुप्तारिभेदङ्कुरुते विवादम् ॥
॥ ४४ ॥ त्रिकोणदृष्ट्यर्थधनलाभसौख्यम्मित्रोन्नतिश्चापि करोति नित्यम् ॥ सम्पूर्णदृष्टिस्सुतरामरिष्टं युद्धं विवादश्च रिपूद्गमश्च ॥ ४५ ॥

अर्थ—पाद (चौथाई) अर्थात् एकचरणवाली जो दृष्टिहै वह सु
और लाभ देनेवाली है तथा स्नेह देनेवाली और बुद्धिको बढानेवा
है, और अर्द्धदृष्टि अर्थात् दो चरणवालीदृष्टि इष्ट मित्रोंसे विरो
उत्पन्न करातीहै, इसीको गुप्तारिभेद दृष्टि कहतेहैं, यह विवादकोभी ब
तीहै ॥४४॥ तथा त्रिकोण ५।९ स्थानपर तीनचरणवाली जो दृष्टि
वह धनलाभ और सुख तथा निरंतर मित्रोंकी वृद्धि करतीहै, औ
सम्पूर्ण अर्थात् चारौं चरणवाली सर्वदा अरिष्ट है, वह युद्ध, विवा
और शत्रुवृद्धि करती है ॥ ४५ ॥

खलग्रहाश्चेत्खलदृष्टिसंस्थाश्शुभाश्च खेटाश्शुभदृष्टिसं-
स्थाः ॥ फलं यथोक्तं ददते तदानीं विलोमसंस्थाश्च
तदर्द्धमेव ॥ ४६ ॥

अर्थ—यदि पापग्रह पापग्रहोंकी दृष्टिमें हो, और शुभग्रह शुभग्रहों
की दृष्टिमें स्थितहो, तो वह (दृश्य) ग्रह उससमय यथोक्तफल देताहै
इससे विपरीत स्थित हो तो उसका आधा फल होताहै ॥ ४६ ॥

निपजतिगुरुवित्सुरारिपूज्यैर्यदि सहितश्च विलोकितः
सभावः ॥ अतिशयफलदोनशेषखेटैरथसहितस्त्ववलो-
कितोवशेषैः ॥ ४७ ॥

अर्थ—यदि भाव अपने स्वामी गुरु, बुध, शुक्र करके युक्तहो, औ
देखाजाताहो, वह भाव अपना पूर्ण फल देताहै, और अन्य ग्रहों करके
युक्त दृष्टहो तो उतना फल नहीं देताहै ॥ ४७ ॥

ग्रहदीप्तांशज्ञान.

बाणेन्दुभिर्भानुभिरष्टभिश्च शैलैश्चनन्दैरचलैर्नभोगैः ॥
दीप्तांशकैरेभिदिनादयोऽपि विलोकयंति क्रमतो नभो-
गाः ॥४८॥ पुरः पृष्ठे स्वदीप्तांशैर्विशिष्टं दृक्फलं ग्रहः॥
दद्यादतिक्रमे तेषां मध्यमं दृक्फलं विदुः ॥ ४९ ॥

अर्थ—सूर्य आदि ग्रह अपने १५।१२।८।७।९।७।९ इन दीप्तांशों करके ग्रहों और भावोंको देखतेहैं, अर्थात् अपने दीप्तांशोंसे न्यूनाधिक हों तो यथोक्त फल नहीं देतेहैं ॥ ४८ ॥ अर्थात्, नवम आदि स्थानोंमें दृष्टिके होते हुये देखनेवाला ग्रह अपने दीप्तांशोंकरके आगे वा पीछे स्थित होवै, तो वह उत्कृष्ट नवम आदि स्थानोंमें स्थित दृष्टि फलको देताहै, और यदि दीप्तांशको उल्लंघन करजावै तो वह साधारण दृष्टि फलको देताहै, ऐसा जानना चाहिये ॥ ४९ ॥ इसी प्रकार दृष्टि विषयमें बहुत कुछ विचारहै परन्तु यहाँ इस छोटे ग्रंन्थमें परमावश्यक सरल विषयका उल्लेख कियागयाहै ॥ ४९ ॥

ग्रहदीप्तांशचक्र.

ग्र	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
दी	१५	१२	८	७	९	७	९

ग्रहमैत्रीज्ञान.

मित्रं तृतीयपंचमनवममेकादशगतोपि यो यस्य ॥
धनमृतिरिपुरिष्फेषुच समो ग्रहः स्यादिति ज्ञेयम् ॥ ५० ॥
शत्रुस्तथैकतुर्यें जायास्थाने तथा दशमे ॥
ताजिकहिल्लाजमते नैतादृक्कथितमस्माभिः ॥ ५१ ॥

अर्थ—जो ग्रह जिस ग्रहसे तीसरे, पाचवें, नवें, ग्यारहवें स्थानमें स्थितहो, वह उसका मित्र होताहै, और जो ग्रहजिस ग्रहसे दूसरे

अस्मिन्वर्षे ग्रहमैत्रीचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र०
चं.	सू. बृ.	०	०	सू.	०	०	मि०
मं. बु. शु. श.	मं. बु. शु. श.	सू. बृ. चं.	सू. बृ. चं.	मं. बु. शु. श.	चं. सू. बृ.	सू. चं. बृ.	स०
बृ.	०	बु. शु. श.	मं. शु. श.	सू.	मं. बु. श.	मं. बु. शु.	श०

आठवें छठे बारहवें हो वह उसका सम होताहै. ऐसा जानना॥५०॥
जो ग्रह जिस ग्रहसे पहले (संयुक्त अर्थात् एक साथहो)
सातवें, तथा दशवें, हो वह उसका शत्रु जानना, इस प्रकार ता
शास्त्राचार्य हिल्लाजके मतसे यह ग्रहोंकी मित्रता, समता व शत्रुता
हम सबोंने वर्णन कियाहै, यद्यपि ताजिक ग्रथोंमें ग्रहोंकी पंचधा मै
का साधन प्रकार वर्णन कियाहै, तथापि परमावश्यक ग्रहमैत्री
है जो पूर्व कह चुकेहैं, इसी ग्रहमैत्रीद्वारा पंचवर्ग बलसाधन किया
इस कारण केवल इस ग्रहमैत्रीको लिखकर आगे पंचवर्गी
साधनप्रकार लिखते हैं ॥ ५१ ॥

पंचवर्गीचक्रप्रयोजन.

अथ प्रवक्ष्ये खलु पञ्चवर्गीचक्रं ग्रहाणां बलसाधनार्थम् ॥
यद्वीर्यतो भावफलानि नूनं ज्ञेयान्यथो खेचरपाकजानि॥५१

अर्थ–अब ग्रहोंका बलसाधन करनेके अर्थ पंचवर्गीचक्र व
करताहूँ, जिस पंचवर्गीके बलसे भावफल और ग्रहदशाजनित
निश्चय करना, अर्थात् ग्रहोंका नष्टबल, स्वल्पबल, मध्यबल, पूर्ण
जानकरके भावफल और दशाफल कहना ॥ ५२ ॥

वर्षाधीशा देशपूर्वं सगर्भं सर्वं वक्तुन्नो विना वीर्य्यमंत्रम् ॥
शक्यन्तस्मात्पुष्करागारसारं ज्ञातुम्मार्गम्पञ्चवर्ग्याः प्रवच्मि॥५

अर्थ– वर्षमें वर्षस्वामीका निर्णय और ग्रहोंका यथोक्त भाव
फल ये सब बलविचारविना नहीं कहेजासकते, इस कारण बल जा
ननेके अर्थ पंचवर्गीचक्र वर्णन करताहूं ॥ ५३ ॥

पंचवर्गगणना.

गृहमुच्चं तथा हद्दा त्रिराशिपमुशल्लहः ॥
पंचवर्गा इमे प्रोक्ता वच्मि वीर्यं तदुद्भवम् ॥५४॥

अर्थ—गृह, (स्थान) उच्च, हद्दा, त्रिराशिप, मुशल्लह, (नवांश) थे पांच वर्ग कहे हैं. अब इनके द्वारा उत्पन्न वल कथन करताहूं ॥५४॥

गृहेश (राशिस्वामी) ज्ञान.

भौमशुक्रज्ञचन्द्राऽर्कज्ञुधशुक्राऽऽरमंत्रिणः ॥
शौरिः शनिस्तथा जीवो मेषादीनामधीश्वराः ॥ ५५ ॥

अर्थ—भौम, शुक्र, बुध, चन्द्र, सूर्य, बुध, शुक्र, भौम, गुरु, शनि, शनि, गुरु, ये मेष आदि राशियोंके स्वामी हैं, यथा मेषराशिका स्वामी भौम, (मंगल) वृषराशिका स्वामी शुक्र, मिथुनराशिका स्वामी बुध, इत्यादि क्रमसे राशियोंके स्वामी जानना, जिसका चक्रभी लिख दियाहै ॥ ५५ ॥

गृहेशचक्र.

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	बृ	श	श	बृ

उच्चनीचराशिज्ञान.

मेषो वृषोऽथ मकरो मृगदृक् कुलीरो मीनस्तुलादिनपपूर्वखगोच्चकानि ॥ अंशा १० ग्नि ३ पिंड २८ तिथि १५ वायु ५ भ २७ विंशतुल्यास्तुंगालवाः स्वनगगास्तु भवन्ति नीचाः ॥ ५६ ॥

अर्थ—दिनप (सूर्य) आदि ग्रहोंकी, मेष, वृष, मकर, मृगदृक् (कन्या), कुलीर (कर्क), मीन, तुला, ये उच्चराशि हैं, और १०।३।२८।१५।५।२७।२० इन अंशों-करके उच्चराशिस्थित ग्रह परमो-

उच्चनीचराश्यंशचक्र.

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
० १०	१ ३	९ २८	५ १५	३ ५	११ २७	६ २०	उच्च
६ १०	७ ३	३ २८	११ १५	९ ५	५ २७	० २०	नीच

च्च कहातेहैं, तथा अपने उच्चराशिसे सातवीं राशिपर स्थित ग्रह नीचके होतेहैं और पूर्वोक्त अंशोंकरके परमनीच कहे जातेहैं, जैसे-मेषराशिका सूर्य उच्च कहाताहै १० अंशहो तो परम उच्चका कहावाहै,चन्द्रमा वृष-राशिका ३ अंशपर परम उच्चका कहाताहै, मंगल मकरराशिका २८ अंशपर परमउच्चका कहाताहै, बुध कन्याराशिका १५ अंशमें परमउच्च-का कहाजाताहै,बृहस्पति कर्कराशिका ५ अंशपर परमउच्चका कहावाहै, शुक्र मीनराशिका २७ अंशपर परमउच्चका कहाताहै, शनैश्चर तुलारा-शिका २० अंशपर परमउच्चका कहाताहै, यह ग्रहोंका उच्च और परम उच्च वर्णनकिया, आगे उच्चवल साधन कहतेहैं ॥ ५६ ॥

उच्चबलसाधन.

नीचोनितो ग्रहः षड्भाधिको मण्डल १२ शोधितः ॥
शेषस्यांशा नन्दभक्ता बलमुच्चस्य जायते ॥ ५७ ॥

अर्थ–अपना नीचराश्यंश घटाया हुआ राश्यादि ग्रह जो छःराशि संख्यासे अधिकहो तो मण्डल अर्थात् बारह राशिमें घटायदेवै, शेषके अंशकरके नवका भागदेवै, सो लब्ध कला आदिक आवती हैं, सोई उच्चबल होताहै ॥ ५७ ॥

तथाच.

नीचग्रहान्तरं कार्यं षड्भादल्पं यथा भवेत् ॥
तदंशांक ९ लवः स्वोच्चबलं स्यात्ताजिके स्फुटम् ॥ ५८ ॥

अर्थ–नीच और ग्रह दोनोंका अन्तर करै, छःराशिसे अल्प (क-मती) जिस प्रकार होवै उसी प्रकार करै अर्थात् नीचमें ग्रह घटै तो ग्रह घटा देवै, और यदि ग्रहमें नीच घटै तो नीचको घटादेवै फिर उस छेसे न्यूनवाले अंकोंके अंश करै और नवसे भागलेवै लब्धांक कला आदिक अपना उच्चबल ताजिकमतसे स्फुट होताहै ॥ ५८ ॥

उच्चबलोदाहरण.

अब उच्च बल ल्यावनेका उदाहरण लिखतेहैं--स्पष्टसूर्यराश्यादि ६। २२।१९।३३ यह सूर्यका नीच ६।१० में घटाया तो शेष ११।१७।४०।२७ यह छेराशिसे अधिकहैं,इस कारण १२ में घटाया तो शेष०।१२। १९।३३ इसके अंश किये तो १२।१९।३३ हुये. इनमें ९ का भाग लगाया. भाग लगानेसे लब्ध कलादि १।२२ यह सूर्यका उच्चबल हुआ, अथवा सूर्य ६।२२।१९।३३ सूर्यका नीच ६।१० नीचको सूर्यमें घटाया तो ०।१२।१९।३३ इसके अंश १२।१९।३३ में ९ का भाग देनेसे लब्ध कलादि १।२२ यह सूर्यका उच्च बल हुआ, इसी प्रकार चन्द्रमा आदिका बल निकाललेना, और पंचवर्गीचक्रमें सब ग्रहोंका उच्चबल उदाहरणार्थ लिखाहै वहां देखलेना ॥

हद्देशज्ञान.

मेषे रसांगार्ष्टशरेन्द्रियांशास्सुरेज्यशुक्रज्ञकुजाऽर्कजानाम् ॥ वृषेर्ष्टतर्कार्ष्टशरैस्त्रिसंख्याश्शुक्रज्ञजीवाऽर्कजभूमिजानाम् ॥५९॥ युग्मे रसाङ्गेन्द्रियसप्ततर्का ज्ञशुक्रजीवाऽवनिजाऽर्कजानाम् ॥ कर्केद्रितर्काङ्गनगाऽब्धिभागाः कुजास्फुजिज्ज्ञेज्यशनैश्चराणाम् ॥ ६० ॥ सिंहेङ्गबाणाद्रिरसाङ्गभागा जीवासुरेज्याऽर्कजवित्कुजानाम् ॥ स्त्रियान्नगाङ्गाऽब्धिनगारिसंख्या ज्ञकाव्यजीवाऽवनिभूशनीनाम् ॥६१॥ घटे षडष्टाद्रि मुनिद्विसंख्याश्शनिज्ञवागीशसिताऽसृजाश्च॥अलौ नगाऽब्धिद्विरदेषुतर्का भौमास्फुजिज्ज्ञेज्यपतङ्गजानाम्॥६२॥चापेऽर्कबाणाऽब्धिशराऽब्धितुल्या जीवास्फुजिज्ज्ञाऽवनिजाऽर्कजानाम् ॥ नक्रेऽद्रिसमार्धयुगाऽब्धयः स्युर्बुधेज्यशुक्राऽर्कजमङ्गला-

नाम् ॥६३॥ कुम्भेऽद्रितर्कीऽद्रिशरे^न्द्रियांशा ज्ञशुक्रदेवेज्यकुजाऽर्कजानाम् ॥ मीनेऽर्कवेदाऽग्नि नवद्विसंख्याश्शुक्रेज्यसौम्याऽऽरखरांशुजानाम् ॥ ६४ ॥

अर्थ—अब मेष आदि राशियोंमें हद्देश ग्रहोंको चक्रमें स्पष्ट लिखते हैं, इन ऊपरोक्त ६ श्लोकोंका अर्थ सरलहै. सो चक्रपरसे समझलेना, जैसे मेषराशिमें प्रथम ६ अंशोंका हद्देश बृहस्पति, फिर आगे ६ अंशोंका हद्देश शुक्र, फिर ८ अंशोंका बुध, फिर ५ अंशोंका भौम, अनन्तर ५ अंशोंका शनि हद्देश है, इसी प्रकार वृष आदि के ३० अंशोंमें क्रमपूर्वक हद्देश जानना. ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

हद्देशचक्र.

मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
बृ ६	शु ८	बु ६	मं ७	बृ ६	बु ७	श ६	मं ७	बृ १२	बु ७	शु ७	शु १२
शु ६	बु ६	शु ६	शु ६	शु ५	शु ६	बु ८	शु ४	शु ५	बृ ७	बु ६	बृ ४
बु ८	बृ ८	बृ ५	बु ६	श ७	बृ ४	बृ ७	बु ८	बु ४	शु ८	बृ ७	बु ३
मं ५	श ५	मं ७	बृ ७	बु ६	मं ७	शु ७	बृ ५	मं ५	श ४	मं ५	मं ९
श ५	मं ३	श ६	श ४	मं ६	श २	मं २	श ६	श ४	मं ४	श ५	श २

द्रेष्काणज्ञान.

मेषतो मीनपर्यन्तं द्रेष्काणानामधीश्वराः ॥
भौमतो रवितश्शुक्राद्गणनीया यथाक्रमम् ॥६५॥

अर्थ—अब द्रेष्काणज्ञान कहतेहैं. मेषसे लेकर मीनपर्यन्त द्रेष्काण स्वामी भौम, रवि, और शुक्र इन तीन ग्रहोंसे यथाक्रम गिनना,

द्रेष्काणचक्र.

अंश	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१०	मं	बु	बृ	शु	श	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श
२०	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	र	चं	मं	बु	बृ
३०	शु	श	र	चं	मं	बु	बृ	शु	श	र	चं	मं

अर्थात् राशिके ३० अंशोंमें तीसरे भाग (१० अंशों) को द्रेष्काण कहतेहैं, एकराशिमें तीन द्रेष्काण होतेहैं. तहां पहला द्रेष्काण मेष आदि राशियोंमें मंगलसे गणनाकरै, दूसरा द्रेष्काण सूर्यसे और तीसरा द्रेष्काण शुक्रसे गणनाकरै. पहला द्रेष्काण १ अंशसे१० अंशतक दूसरा ११ से २० तक, तीसरा २१ से ३० अंशतक जानना, जैसे मेषराशिमें १० अंशतक मंगलका द्रेष्काण, तदनन्तर २० अंशतक, सूर्यका, अनन्तर ३० अंशतक, शुक्रका द्रेष्काण जानना, इसी प्रकार वृष आदि राशियोंमें द्रेष्काण जानना, सो चक्रमें सरलतासे लिखाहै॥६५॥

नवांशज्ञान.

मेषे सिंहे धनुर्मेषाद्गोकन्यामकरे मृगात्॥ कर्कात्कर्काऽलिमीनस्य कुम्भयुग्मतुलातुलात्॥ गृहोत्थाभस्य नन्दांशं गणनीयं यथाक्रमम्॥६६॥

अर्थ—अब नवांश ज्ञान कहतेहैं—कि मेष, सिंह, धन इन राशियोंका नवांश मेषसे, और वृष, कन्या, मकरका मकरसे, और कर्क, वृश्चिक, मीनका कर्कसे, तथा कुंभ, मिथुन, तुलाका तुलासे जानना. राशिके नवम भाग (३।२०।६।४० आदि) को लेकर क्रमपूर्वक गणना अर्थात् एकराशिके ३० अंशका नवमांश ३ अंश २० कला जानना. इसी प्रकार ३ अंश २० कला जोडनेसे सब नवांश जानना, ३ अंश

२० कलाका १ नवमांश होताहै. जैसे, मेषराशिमें ३ अंश२० कलातक पहला मेषका नवांश, फिर ६ अंश ४० कलावक दूसरा वृषका नवांश. इसी प्रकार सरलतापूर्वक जाननेके अर्थ नवांश चक्र लिखदिया है, उसमें समझलेना, जिसराशिका नवांश हो उसका स्वामी नवांशस्वामी कहा जाताहै ॥ ६६ ॥

नवांशचक्र.

भा	अंश	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
१	३।२०	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क
२	६।४०	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं
३	१०।००	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क
४	१३।२०	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु
५	१६।४०	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ
६	२०।००	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध
७	२३।२०	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म	तु	क	मे	म
८	२६।४०	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं	वृ	सिं	वृ	कुं
९	३०।००	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी	ध	क	मि	मी

पंचवर्गीबलव्यवस्था.

त्रिंश ३० न्मितस्स्वीयगृहे निजोच्चे नख २० स्स्वहद्दासु तिथि १५प्रमाणम्॥ द्रेष्काणके स्वस्य तु दिङ्मितं १० स्वमुशल्लहे बाण ५ मितं बलं स्यात्॥६७॥स्वस्वाधिकारोक्तबलं सुहृद्गे

पादोनमर्द्धं समभेऽरिभेंऽघ्रिः॥यथाबलं तुङ्गबल-
न्तु तेन समन्वितं वर्गबलम्बलं स्यात् ॥ ६८॥
वीर्यैकृतावेदहतास्तवीर्ये दशाधिको पूर्णबलो
ग्रहः स्यात् ॥ अधोस्य पञ्चाऽवधिमध्यवीर्य-
स्तन्यूनतायामिह हीनवीर्य्यः ॥ ६९ ॥

अर्थ—अब पञ्चवर्गीबलकी व्यवस्था कहतेहैं. कि जो ग्रह अपनी राशिका होवे उसका बल ३० का जानना. जो ग्रह अपने उच्चमें हो उसका २० का बल होताहै. तथा अपने हद्दामें १५ का बल और अपने द्रेष्काणमें १० का बल अपने मुशल्लह (नवांश) में ५ का बल

स्वगृहादिबलविभागचक्र.

०	स्व०	मित्र	सम	शत्रु
गृह	३० ०	२२ ३०	१५ ०	७ ३०
हद्दा	१५ ०	११ १५	७ ३०	३ ४५
द्रेष्काण	१० ०	७ ३०	५ ०	२ ३०
नवांश	५ ०	३ ४५	२ ३०	१ १५

होताहै॥६७॥अपने अपने अधिकारमें जो बल कहा गया. उसी अनुसार जानना. और जो अपने मित्र सम शत्रुके अधिकारमें हो उसका विभाग इसप्रकार करना कि—जो ग्रह अपने मित्रके अधिकारमें हो उसका उक्त बलसे चौथाई हीन बल जानना. जो ग्रह अपने समके अधिकारमें हो उसका आधा बल जानना और जो ग्रह अपने शत्रुके अधिकार में हो उसका चौथाई बल जानना. जैसे जो ग्रह अपनी राशिमें हो उसका बल ३०का और मित्रराशिमें होतो चौथाई कम अर्थात् २२।३०का और समराशिमें आधा १५का तथा शत्रुकी राशिमें चौथाई ७।३०का बल जानना, इसप्रकार गृह हद्दा द्रेष्काण नवांश केवलको ग्रहण करना. सुगमरीतिसे जाननेके अर्थ चक्रभी लिख-दियाहै और उच्चका जो बल हो उसकोभी चारोंके साथ पंचवर्गीबल

चक्रमें लिखना. तो बल निकालनेमें सुगमता होतीहै ॥ ६८ ॥ फिर पूर्वोक्त बलकी ऐक्यताकरके चारका भाग देना. भाग देनेसे जो प्राप्तहो वह विश्वाबल जानना. दश विश्वासे अधिक बलवाला ग्रह पूर्ण बली होताहै. और दशसे न्यून (कमती) पांच विश्वातक मध्यबली होताहै. तथा पांचसे न्यून (कम) बलवाला ग्रह हीन (नष्ट) बल होताहै ॥ ६९ ॥

पंचवर्गीबलसाधनोदाहरण.

अब पंचवर्गीबलसाधन निमित्त उदाहरण लिखतेहैं. यथा सूर्य६।२२। १९।३३ यहां सूर्य तुलाराशिका शुक्रके घरमेंहै. सो शुक्र सूर्यका समहै. समके घरमें १५।००यह सूर्यका गृह (स्थान) बलभया. उच्च बलका उदाहरण पूर्व लिखचुकेहैं. सूर्यका उच्च बल १।२२है. तथा सूर्य तुलाके २२अंश गतसे चौथा हद्दा शुक्रकाहै.

अथ गृहेशादिचक्रम्.

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
गृहेश	शु	बृ	मं	मं	शु	मं	मं
हद्दा	शु	शु	शु	बु	मं	शु	श
द्रेष्का.	बृ	चं	सू	बु	बृ	मं	शु
नवांश	मं	सू	शु	सू	बु	बु	बृ

सो शुक्र सूर्यका समहै. समहद्दामें ७।३०यह सूर्यका हद्दा बलभया. तथा सूर्य तुलाक२२ अंश गतसे तीसरे बृहस्पतिके द्रेष्काणमेंहै. बृहस्पति सूर्यका शत्रुहै तो शत्रु द्रेष्काणमें२।३०यह सूर्यका द्रेष्काण बलभया. तथा सूर्य तुलाके २२ अंशगतसे तुलामें तुलाकी गणनासे सातवें मेषके नवांशमें है. मेषका स्वामी भौम सो सूर्यका समहै. सम नवांशमें २।३० यह सूर्य नवांश बलभया. इन सब बलोंका ऐक्य किया. अर्थात् सबको जोडा तो२८।५२ हुये. चारका भाग दिया तो लब्ध अंक ७।१३ यह सूर्यका पंचवर्गी विश्वात्मक बलभया. यहां सूर्यका बल उदाहरणद्वारा कहा. इसी प्रकार चन्द्रमाका जानना. सुगम रीतिसे समझनेके अर्थ पंचवर्गीबलचक्रभी लिख दियाहै॥

अथ ग्रहाणां पंचवर्गीबलचक्रम्.

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
गृहबलम्	१५ ००	२२ ३०	३० ००	७ ३०	१५ ००	७ ३०	७ ३०
उच्चबलम्	१ २२	४ ३५	११ २०	३ २६	७ २३	४ २८	१५ ४७
हद्दाबलम्	७ ३०	७ ३०	३ ४५	१५ ००	७ ३०	१५ ००	१५ ००
द्रेष्काणबलम्	२ ३०	१० ००	५ ०	१० ००	१० ००	२ ३०	२ ३०
नवमांशबलम्	२ ३०	३ ४५	१ १५	२ ३०	२ ३०	१ १५	२ ३०
ऐक्यम्	२८ ५२	४८ २०	५१ २०	३८ २६	४२ २३	३० ४३	४३ १७
विश्वाबलम्	७ १३	१२ ५	१२ ५०	९ ३६।।	१० ३५।।।	७ ४०।।।	१० ४९।

वर्षेशमाहात्म्य.

विविधभावविभूषणभूषिता सुनयनानयनाञ्चित-विग्रहा ।। युवतिवन्नविभाति पतिंविना शरदतः शरदां पतिरुच्यते ।। ७० ।।

अर्थ—अनेक प्रकारके हावभाव और आभूषणोंसे अलंकृत तथा कटाक्षकरके विमोहितकरनेवाली सुनयनी स्त्री, जैसे पतिविना शोभाको नहीं प्राप्त होती ऐसेही वर्षेशविना वर्षकी शोभा नहीं होती. इस कारण वर्षेश कहा जाताहै ।। ७० ।।

तथाच.

अथ समाधिपतेः स्फुटनिर्णयो नहि कृतो यदि

वर्षनिवेशने ॥ कथमिदं फलमत्र विनिश्चितं भवति सोऽयमतः प्रविचार्यते ॥ ७१ ॥

अर्थ—अब यदि वर्षप्रवेशमें वर्षेशका स्फुट निर्णय (ठीक विचार) न कियाजाय तो वर्षमें यह शुभाशुभ फलका कैसे निश्चय होवै. अतः (इसकारण) आगे वर्षेशका विचार किया जाताहै ॥ ७१ ॥

वर्षेशनिर्णयार्थ पंचाधिकारी.

जन्माङ्गपोऽब्दाङ्गपइन्थिहेशो वर्षप्रवेशे दिवसेऽर्कभेशः ॥ निशीन्दुभेशस्त्रिगृहेश एते वर्षाऽधिपत्ये ह्यधिकारिणः स्युः ॥ ७२ ॥

अर्थ—जन्मलग्नपति, वर्षलग्नपति, मुन्थेश और दिनमें वर्षप्रवेश हो तो सूर्य लग्नपति रात्रिमें वर्षप्रवेश हो तो चन्द्र लग्नपति और त्रिराशिपति ये वर्षमें (वर्षेश होनेके अर्थ) पंचाधिकारी कहेजातेहैं ॥ ७२ ॥

वर्षेशनिर्णय.

लग्नं प्रपश्येदधिवीर्यएषां वर्षेश्वरः स्यादथ दृष्ट्यभावे ॥ वीर्याधिकोनाऽब्दविभुर्विवीर्यो लग्नं प्रपश्येदपि हायनेशः ॥ वीर्ये समानेपि तनुं प्रपश्येद्दृष्ट्याधिको वर्षपतिर्विधेयः ॥ ७३ ॥

अर्थ—इन पूर्वोक्त पंचाधिकारियोंमें जो ग्रह अधिक बली होकर लग्नको देखताहो वह वर्षेश होताहै. दृष्टि न होनेसे अधिक बली ग्रहभी वर्षस्वामी नहीं होता. जो ग्रह हीनबली हो परंतु लग्नको देखताहो वही वर्षपति होताहै ऐसा कहना ॥ ७३ ॥

समानदृष्ट्यावधिकारभाजामनल्पवीर्योऽधिपतित्त्वमेति॥ वीर्यस्य दृष्टेरपि तुल्यतायां वर्षेश्वरः स्यान्मुथहाधिकारी ॥७४॥ न कोऽपि पश्येद्यदि वर्षलग्नं ज्ञे-

यस्तदा जन्मविलग्नदर्शी ॥ न वर्षलग्नं न च जन्मलग्नं चेत्कोऽपि पश्येदधिकारभाजाम् ॥ ७५ ॥ ज्ञेयस्तदा भूरिबलोऽल्पबलो वा वर्षाऽधिनाथो मुथहाऽधिनाथः॥७६॥

अर्थ–यदि सब अधिकारियोंकी लग्नपर समान दृष्टिहो तो उनमें जो अधिक बलवान् हो वह वर्षपति होसकताहै. और बल व दृष्टिके समान होनेपर मुथहा राशिस्वामी वर्षेश होताहै ॥ ७४ ॥ तथा यदि वर्षलग्नको कोईभी पंचाधिकारी ग्रह न देखताहो तो उनमें जन्मलग्नको देखनेवाला ग्रह वर्षपति जानना, और यदि पंचाधिकारियोंमेंसे कोईभी ग्रह न वर्षलग्नको देखताहो और न जन्मलग्नको देखताहो ॥ ७५ ॥ तो बहुत बलवाला अथवा थोडे बलवाला मुथहा राशिपति वर्षका स्वामी जानना ॥ ७६ ॥

मतान्तर.

बलादिसाम्ये रविराशिपोऽह्नि निशीन्दुराशीडिति केचिदाहुः ॥ येनेत्थशालोऽब्दविधुः शशी स वर्षाधिपश्चन्द्रभपोऽन्यथात्वे ॥ ७७ ॥

अर्थ–पंचाधिकारियोंका पंचवर्गीमें बल समानहो, और लग्नपर दृष्टिभी समानहो, तो ऐसी अवस्थामें दिनमें वर्षप्रवेश होतो सूर्य स्थितराशिका स्वामी वर्षेश जानना, रात्रिमें वर्षप्रवेश होतो चन्द्रमा जिस राशिपर स्थितहो उस राशिका स्वामी वर्षपति जानना, ऐसा कोई आचार्य कहतेहैं. तथा वर्षका स्वामी किसी प्रकार चन्द्रमा आताहो तो चन्द्रमा जिस पंचाधिकारी ग्रहके साथ इत्थशाल करताहो वह वर्षेश जानना, यदि किसीके साथ इत्थशाल न करताहो तो चन्द्रमा जिस राशिपर स्थितहो उसराशिका स्वामी वर्षेश जानना चाहिये ॥ ७७ ॥

तथाच.

पश्येन्न कश्चिद्यदि वर्षलग्नं तल्लग्नराशिर्जनने-

पि येन ॥ दृष्टोऽधिपः स्यान्नच तत्र दृष्टस्तद्दे-
न्थिहेशोऽपि विचिन्तनीयः ॥ ७८ ॥

अर्थ-यदि वर्षलग्नपर किसी अधिकारी ग्रहकी दृष्टि नहो, तो वह (वर्षलग्नसम्बन्धी) राशि जन्मलग्नमें किसी पंचाधिकारीको दृष्टिमें होतो वह वर्षपति होताहै. नहीं देखताहो तो मुंथाका स्वामीही वर्षपति जानना ॥ ७८ ॥

अथवा.

पंचाधिकारिणो लग्नं न पश्यंति यदा तदा ॥
वर्षलग्नेश्वरो यस्तु स एवाऽब्दपतिर्भवेत् ॥७९॥

अर्थ-पंचाधिकारी ग्रह जब लग्नको नहीं देखतेहैं तब जो वर्षलग्नका स्वामीहो वही वर्षेश होताहै ॥ ७९ ॥

अथपंचाधिकारिणः　　　　वर्षेशनिर्णयः

ज.	व.	मुं.	त्रि.	चं.
ल.	ल.	रा.	रा.	रा.
प.	प.	प.	प.	प.
श.	बु.	श.	बु.	बृ.
१० ४९।	९ ३६॥	१० ४९।	९ ३६॥	१० ३८॥

एषाम्पञ्चाधिकारिणां मध्ये
लग्नेक्षमाणत्त्वाद्वर्षेशो गुरुः ॥
वर्षविश्वात्मकं बलम् ॥
१०।१७

वर्षविश्वासाधन.

एषां पञ्चाधिकारीणां ग्रहाणां बलसंयुतम् ॥
सुतेनाप्तं फलं वर्षे बलं विश्वात्मकं बुधैः ॥ ८० ॥

अर्थ-अब वर्षके विश्वाओंका साधन लिखतेहैं. अर्थात् यह वर्ष

कितने विश्वाहै सो कहतेहैं, पूर्वोक्त इन पञ्चाधिकारी ग्रहोंके विश्वा बलको जोड़देवै, जोड़कर पाँचका भाग देवै, भाग देनेसे जो लब्ध अंकहों वह वर्षमें वर्ष विश्वाबल पण्डितोंनें कहाहै जैसे यहां पूर्वोक्त पञ्चाधिकारियोंके पञ्चवर्गी विश्वाबलको जोड़देनेसे अंक-संख्या ५१।२७ में ५ का भागदिया तो लब्ध १०।१७ यह वर्ष विश्वा-हुये अर्थात् इतने १०।१७ विश्वा वर्ष जानना ॥ ८० ॥

वर्षेशादिक अधिकार.

वर्षाधीशो भवेद्राजा पुरोधा जन्म लग्नपः ॥
मंत्री च मुथहाधीशो होरेशः सैन्यनायकः ॥ ८१ ॥
रसादिसस्यधातूनामधिपश्च त्रिराशिपः ॥ ८२ ॥

अर्थ-वर्षमें वर्षेश राजा होताहै, जन्मलग्नपति पुरोधा (पुरोहित अथवा कुलगुरू) होताहै, और मुथहा स्वामी मंत्री होताहै, वर्षलग्न-स्वामी सेनापति होताहै ॥ ८१ ॥ रस आदिक वस्तु और सस्य (धान्य) व धातुओंका स्वामी त्रिराशिपतिको जानना ॥ ८२ ॥

वर्षेशमाहात्म्य.

वर्षाधीशविनिर्णयस्समुदितः पूर्वं हि सम्यङ्मया यद्य-
प्यत्र तथापि वर्षमखिलं किं साधु वाऽसाधुवा ॥ इत्या-
ख्यातुमशक्यमेव सुधिया तस्मात्फलं यत्नतो वक्ष्येऽहं
शुभमध्यमाऽधमतभैर्मेदैर्मुनीन्द्रोदितैः ॥ ८३ ॥

अर्थ-यद्यपि इस ग्रंन्थमें वर्षेशका निर्णय मैंने पूर्व भलीभाँति कथन कियाहै, तथापि यह कहना पण्डितोंको कठिनहै, कि वर्ष शुभहै अथवा अशुभ, इसकारण मैं यत्नपूर्वक पूरातन मुनियोंके वचनों करके शुभ, मध्यम, अधम भेदसे वर्षफल वर्णन करताहूं ॥ ८३ ॥

वर्षलग्नेश वर्षेश मुंथ मुंथेश वीर्यतः ॥
सकलं सफलं वर्षन्तत्फलन्तद्दशा फलम् ॥ ८४ ॥

अर्थ-वर्षलग्नपति, वर्षपति, मुंथा, मुंथेश इनके बलसे सम्पूर्ण वर्ष फलयुक्त होताहै, और वे अपना फल अपनी अपनी दशामें करतेहैं ॥ ८४ ॥

वर्षेशफल. प्रथम सूर्याऽब्दपफल.

अब्दाऽधिपेऽम्बरमणौ सबले प्रतिष्ठा प्राप्तिस्ततो निज-
कुले बहुराज्यलाभः ॥ स्थातान्तराद्भवति भूधनकी-
र्तिमित्रलाभस्तथा बहुसुखानि रिपोर्विनाशः ॥ ८५ ॥

अर्थ-अब वर्षेशफल लिखतेहैं, तहां प्रथम वर्षेश सूर्यका फल कहतेहैं, यदि सूर्य पूर्णबली होकर वर्षका स्वामीहो तो प्रतिष्ठाकी प्राप्तिहो, और अपने कुलानुमानसे राज्यद्वारा बहुत लाभहो, दूसरे स्थानसे भुमि, धन, कीर्ति, मित्र इनका लाभ होवै, तथा बहुत सुखहो और शत्रुका विनाशहो ॥ ८५ ॥

पुत्रान्नृपात्सुजनतोऽल्पसुखं नराणां स्यान्मध्यवी-
र्यसहिते द्युमणौ दशायाम् ॥ कुर्याद्दरिद्रमपि रो-
गभयं विवादं लोकैस्तथा नृपजनैः सह चाल्पवैरम् ॥८६॥

अर्थ-यदि सूर्य मध्यबली होकर वर्षका स्वामी हो तो अपनी दशामें पुत्रसे, राजासे, मित्रसे, मनुष्योंका थोड़ा सुख प्राप्त होवै और दरिद्रता व रोग भयकरै, तथा लोगोंसे विवाद और राजजनोंसे कुछ वैर होवै ॥ ८६ ॥

नष्टे रवौ भवति वैरिजनाद्विरोधो रोगागमो नि-
जजनाद्भयमुग्रकं स्यात् ॥ द्रव्यक्षयश्च सततं क-
लहः स्वमित्रात् दृग्धे च दुर्गतिदौस्थ्यजनापवादः ॥८७॥

अर्थ–यदि सूर्य हीनवली होकर वर्षका स्वामीहो तो शत्रुओंसे विरोधहो, रोग उत्पन्नहो, स्वजनोंसे बहुत भयहो, और द्रव्यका क्षयहो, अपने मित्रसे सदा कलह रहै, तथा दूरकी यात्राहो और दुष्टजनोंसे लडाई करके अपवाद (निंदा) होवै ॥ ८७ ॥

चन्द्राऽब्दपफल.

पृथ्वीपालात्स्यादवाप्तिर्विशाला नानासौख्यं
स्त्रीषु लीलाविलासः ॥ मुक्तायुक्तश्वेतवस्तूपल-
ब्धिर्वर्षाधीशे यामिनीशेऽधिसत्त्वे ॥ ८८ ॥

अर्थ–यदि अधिक वलवाला चन्द्रमा वर्षका स्वामीहो तो राजासे उत्तम प्राप्तिहो, नाना प्रकारका सुख मिलै. स्त्रीमें हास विलासहो और मोती सहित श्वेतवस्तुका लाभहो ॥ ८८ ॥

कान्ता सौख्यं स्वल्पमेव प्रकल्प्यं वैकल्यं स्या-
त्स्वीयवर्गेऽथ दैन्यम् ॥ कार्श्यम्भूपस्याऽतिकोपा-
न्निशेशे वर्षाऽधीशे मध्यसत्त्वोपपन्ने ॥ ८९ ॥

अर्थ–जो चन्द्रमा मध्यवली होकर वर्षका स्वामीहो, तो स्त्रीकी ओरसे थोडा सुखहो, देहमें व्याकुलताहो, बन्धुजनोंमें द्रव्यकी हानिहो और राजाके महाकोपसे देह दुर्वल होजावै ॥ ८९ ॥

विकलताऽनिलतश्च कलिः कुले प्रचलनं हि
निजस्थलतो भवेत् ॥ नरपतेः कफतोपि महद्भ-
यं शशिनि हायनपेऽल्पबलान्विते ॥ ९० ॥

अर्थ–यदि स्वल्पवली चन्द्रमा वर्षपति हो. तो वातप्रकोपसे देहमें पीडाहो, कुटुंम्बमें कलहहो और अपने स्थानसे कहीं जानापडै, राजासे भयहो और कफसेभी महाभयहोवै ॥ ९० ॥

भौमाऽब्दपफल.

रिपुगणाद्विजयोऽपिरणाङ्गणे भ्रमणतश्च महद्र-
विणागमः ॥ नरपतेरपि वापि चमूपतेः क्षितिसु-
तेऽब्दपतौ बलवत्त्यलम् ॥ ९१ ॥

अर्थ–जो पूर्णबलोपयुक्त मंगल वर्षका स्वामीहो तो रणमें शत्रुसे विजय प्राप्तहो, और भ्रमण करतेहुये मनुष्यको राजासे अथवा किसी सेनापतिके द्वारा बहुतधन प्राप्त होवै ॥ ९१ ॥

गदं विवादं विविधं विरोधं धनव्ययं चौरभयं
करोति ॥ अरातिभीतिं क्षितिपादिभीतिं वर्षा-
धिपो मध्यबलो महीजः ॥ ९२ ॥

अर्थ–जो मध्यबली होकर मंगल वर्षका स्वामीहो तो रोग, विवाद और विविधप्रकारका विरोध धननाश चोरोंसे भय राजाआदिसे भय ये अनिष्टफल प्रगट करताहै ॥ ९२ ॥

दुष्टादभीष्टाच्च करोति कष्टं गदं च पादाननलोच-
नेषु ॥ खलान्नृपालाज्ज्वलनादनर्थं वर्षाऽधिरा-
जोऽवनिजोऽल्पसत्त्वः ॥ ९३ ॥

अर्थ–यदि स्वल्पबलवाला मंगल वर्षका अधिपति होवै तो शत्रु और मित्र इन दोनोंसे कष्टहो. तथा चरण, मुख और नेत्र इनमें रोग प्रगट हो दुष्ट जन व राजा और तापसे बाधा उत्पन्न होवै ॥ ९३ ॥

बुधवर्षेशफल.

वित्तलाभललनाऽतिविलासैस्साहसैश्च निखि-
लैः खलु युक्तः ॥ ज्योतिषोद्यमचिकित्सितवि-
त्स्यादब्दनाथपरिपूर्णबलाढ्यः ॥ ९४ ॥

अर्थ-जिसके परिपूर्ण बलसहित बुध वर्षस्वामी हो उसको धनका लाभ हो और वह स्त्रीके अत्यन्त भोग विलास और सम्पूर्ण सुखोंसे युक्त हो. तथा ज्योतिषविद्या व वैद्यकविद्याके उद्यमसे यशका भागी होवै. यहां बुधसम्बन्धी उद्यम अर्थात् लिखने पढने आदिसेभी प्रतिष्ठाका होना घटित होताहै ॥ ९४ ॥

स्ववाक्यदोषादशुभञ्च योषारोषाऽधिकस्त्वन्द्वि-
षतो विषादः ॥ कृपानृपालादधिका किल
स्यादब्दाधिपो मध्यबलो बुधश्चेत् ॥ ९५ ॥

अर्थ-यदि मध्यबलोपयुक्त बुध वर्षका स्वामी हो तो अपनेही वाक्य-दोषसे अशुभ होवै. स्त्रीके अधिक कोपसे परस्पर वैरभावहो जिससे विषाद बढै अथवा शत्रुको कुछ दुःख होवै. तथा राजा कुछ अधिक कृपा करै ॥९५ ॥

अनृतसाक्षिकता क्षितिपाद्भयं क्षतिरतीव विपक्ष-
कदस्युतः ॥ नयनहृद्गलरुक् प्रबला भवेद्गतबले-
ऽब्दपतौ शशिनस्सुते ॥ ९६ ॥

अर्थ-यदि हीनबली बुध वर्षका पति हो तो असत्यसाक्षी (झूठी ग-वाही) देनी पडै, राजासे भयहो शत्रु व चोरसे बहुत हानि होवै. और नेत्र, हृदय व गलेमें प्रबल रोग होवै ॥९६॥

गुरुवर्षेशफल.

ज्ञानं कीर्तिर्न्निधिसहचरा ह्लादनन्देवतानामर्चा-
चर्चाविधधनचयैर्लोकविश्वासितैव ॥ धर्मे प्री-
तिर्नृपतिकुलतोत्यन्तवित्तोन्नतिस्याच्चश्वत्कीर्ति-
श्शरदधिपतौ वाक्पतौ सर्व्ववीर्ये ॥ ९७ ॥

अर्थ–यदि बृहस्पति पूर्णा वली होकर वर्षका अधिपति होवै तो ज्ञान, यश, धन, इनका लाभहो. देवताओंकी सेवा व पूजामें मन प्रसन्नहो. अनेक विधिसे, धनकी वृद्धिहो. लोकमें विश्वास मानाजाय, धर्ममें प्रीति बढे. राजवंशसे उत्पन्न हुये धनकी वृद्धिहो, और जगत्में कीर्तिका विस्तार होवै ॥ ९७ ॥

लोकैस्सार्द्धं वैमनस्यं विवादं मान्द्यं बुद्धेश्शत्रुसम्व-
र्द्धनञ्च ॥ भूपाशङ्कातङ्कतः कार्श्यमङ्गे देवाचा-
र्ये मध्यवीर्येऽब्दपे स्यात् ॥ ९८ ॥

अर्थ–यदि मध्यवली बृहस्पति वर्षका स्वामीहो तो लोकजनोंसे विरोध विवादमें बुद्धि मंद होजावै शत्रुओंकी वृद्धि हो राजभयकी चिंतासे शरीरमें दुर्वलता होवै ॥ ९८ ॥

जघनलोचनगुल्फपदोदरे हरहराऽतितरां परि-
पीडनम् ॥ विकलतानिलतः खलतो भयं
सुरगुरौ विकलेऽब्दपतौ भवेत् ॥ ९९ ॥

अर्थ–यदि सुरगुरु (बृहस्पति) वलहीन होकर वर्षपति होवै तो जंघा, नेत्र, गुल्फ (चरणका ऊपरीभाग 'घुटुना') चरण, उदर (पेट) इन अंगोंमें वातविकारसे अति पीडा उत्पन्न हो और दुष्टजनोंसे भय होवै ॥ ९९ ॥

शुक्राऽब्दपफल.

दद्यादलं विलसितानि विलासिनीभिर्हास्यो-
त्सवादिविविधाम्बरवस्त्रलाभम् ॥ आरोग्यभा-
ग्यविजयस्वजनाभिवृद्धिं यद्यऽब्दपो भृगुसुतस्स-
मुदारसारः ॥ १०० ॥

अर्थ-यदि शुक्र बली होकर वर्षपति होवै तो स्त्रीविलास सुखकोदेवै और हास्य व उत्सव आदि सुख प्राप्तहोवै, तथा विविध प्रकारके मनोहर वस्त्र मिलैं, शरीरमें आरोग्यताहो, भाग्यकी वृद्धिहो, शत्रुआदिसे विजयप्राप्तिहो, और अपने बन्धुवर्गकी वृद्धि होवै ॥ १०० ॥

निजजनादरितोऽपि भयाऽन्वितस्सुतसुता वनिता धनचिन्तया ॥ कफचयात्कृशपीततनुर्नरो भवति मध्यबलेऽब्दपतौ सिते ॥ १ ॥

अर्थ-जिसके वर्षमें शुक्र मध्यबली होकर वर्षका स्वामी हो,तो वह मनुष्य अपने बन्धुजनोंसे आदरयुक्त होनेपरभी भयभीत रहे, और पुत्र, कन्या, स्त्री और धनकी चिन्तासे व शरीरमें कफकी वृद्धिसे दुर्बलताको प्राप्त हो, तथा शरीर पीला पड़जावै ॥ १ ॥

खलजनेन कलिर्बहुलो भवेद्विकलता नृपकोपवशाद्भयम् ॥ धनविहीनतया भ्रमतामतेर्ननुविहीनबलेऽब्दपतौ सिते ॥ २ ॥

अर्थ-यदि हीन बली शुक्र वर्षपतिहो तो खलजन (शत्रु) से बहुत कलह राजकोपसे विकलता और भय उत्पन्नहो, धनहीन होनेके कारण मति चलायमान हो जावै ॥२॥

शनिवर्षेशफल.

शैलकाननवणिक्कृषिक्रिया म्लेच्छतोनिजमानसमीप्सितम् ॥ स्यान्मतिर्द्रुमलताऽभिरोपणे पूर्णसत्त्वसहितेऽब्दपे शनौ ॥ ३ ॥

अर्थ-यदि पूर्ण बलयुक्त शनि वर्षका पतिहो तो पर्वत, वन, व्यापार, कृषिक्रिया (खेती) और म्लेच्छ, इनके द्वारा अपनी मनोकामना पूरी होवै, और बाग, वाटिका लगानेमें रुचिहोवै ॥ ३ ॥

क्रोडपृष्ठगगलेक्षणपीडा जायते हि निबिडा पवनार्तिः ॥ मूर्तिरप्यतिकृशा बहुशेषा वर्षपे रविसुतेर्द्धबलाढ्ये ॥ ४ ॥

अर्थ–यदि मध्यबलोपयुक्त शनि वर्षपतिहो, तो छाती, पीठ, कंठ, और नेत्रमें पीडाहो, तथा वातविकारसे महाक्लेश प्राप्तहो, शरीरभी बहुत दुर्बल होजावै ॥ ४ ॥

अनिलतोबलकान्तिविहीनता विफलतापि निजेप्सितसाधने ॥ निजजनात्मजकष्टचयो भवेद्रविसुते विबले शरदीश्वरे ॥ ५ ॥

अर्थ–यदि बलहीन शनि वर्षका स्वामीहो वो वातप्रकोपसे शरीरमें बल और कान्तिका नाशहो, अपना मनोरथ साधन करनेमेंभी सफलता प्राप्त नहो, और अपने कुटुम्ब वर्गको बहुत कष्टहोवै ॥ ५ ॥

वर्षेशो निधनव्ययारिसदने यातोऽथवा पापकैः खेटैस्संयुतवीक्षितो न शुभदोऽरिष्टं च कष्टं दिशेत् ॥ केन्द्रेचेद्गृहसौख्यदः सहि भवेदन्यत्र चेदन्यथा सौख्यं सौख्यमतीव भूमिपतिना लाभादि कुर्यादयम् ॥ ६ ॥

अर्थ–यदि वर्षका स्वामी आठवें, बारहवें छठे स्थानमेंसे किसी एकमेंहो, अथवा पापग्रहोंकरके युक्त दृष्टहो तो शुभ फल नहीं देवै, अरिष्ट (रोग व शत्रुआदिकसे भय) और क्लेश देनेवाला जानना. और यदि वर्षेश केन्द्र १।४।७।१० में हो शुभग्रहोंसे युक्त दृष्टहो, अथवा अन्यत्र २।३।५।९।११ स्थानमें शुभ ग्रहोंसे युक्त दृष्टहो तो घरका सुख देवै, और सुखयुक्त कार्य होनेसे बहुतही सुख प्राप्तहोवै, तथा यह वर्षेश राजासे लाभआदि करै ॥ ६ ॥

मुन्थाभावफल.

वरसभारसभागवनीपते रतिकलातिकलाय-
समन्वितः ॥ सुजनताजनतापहरो नरस्तनुग-
तानुगता यदि मुन्थहा ॥ ७॥

अर्थ-यदि मुन्था वर्षलग्नमें होतो श्रेष्ठ सभाके विलाससे युक्त हो और राजाके आश्रयसे धनलाभहो, कला, चातुर्य और मनुष्योंमें प्रतिष्ठा होवै, और मनुष्य अपने बन्धुजनोंमें तापहरनेवाला होवै ॥ ७॥

मदबलादबलादिसुखोनरः सुकृतगः कृतगर्हि-
तवारणः ॥ अधिकताऽधिकतापकरो द्विषां
सुखधनस्सधनस्थितया तया ॥ ८ ॥

अर्थ-यदि मुंथा धनस्थानमें स्थितहो तो मद (वीर्य) बलसे स्त्री आदि सुख मनुष्यको प्राप्तहो, और यशका उदयहो, अनिष्टका नाश हो, तथा शत्रुओंको अधिक सन्ताप होवै ॥ ८ ॥

निजयशोजयशोभितनुर्नरः सुकृतकृत्कृतकृत्यतयो-
न्नतः ॥ नययुतोऽययुतो मुथहा यदाऽनुजगताजगता
कृतवर्णनः ॥ ९ ॥

अर्थ-जो मुथहा अनुज (तृतीय) भावमें प्राप्तहो तो मनुष्य अपने यशसे उत्पन्न यशकरके युक्तहो, अथवा अपनेही यशसे जय और शोभाको प्राप्तहो, और पुण्यके प्रभावसे मनोरथ परिपूर्णहो. हृदयमें नीतिका आवेशहो, तथा मनुष्योंमें बडाई होवै ॥ ९ ॥

स्वधनसाधनसाहसदुःखितो भयमितोयमि-
तोऽपगतारितः ॥नृपनयापनयादपि नो कथा-
रससुखस्सुखसंस्थितमुन्थहे ॥ १० ॥

अर्थ–यदि मुन्थहा सुख (चतुर्थ) भावमें स्थितहो तो अपने निमित्त धन उपार्जन करनेके साहससे दुःखितहो, बन्धुजनोंमें अप्रीतिहो, राजासे भयहो, नीतिसेभी रहितहो, और प्रतिष्ठा भंग होजावै ॥१०॥

सुजनपूजनपूततनुर्निराकरणधीरणधीरतया द्विषाम् ॥ अधिनिराधिनिरामुथहा यदा तनयगानयगामितयान्वितः ॥ ११ ॥

अर्थ–जो मुथहा तनय (पंचम) भावमें हो, तो सत्कर्मद्वारा शरीरकी पवित्रता वृद्धिको प्राप्तहो, शत्रुओंका अपमानहो, मनकी व्यथा दूरहो, और राजसभामें सन्मानहोवै ॥ ११ ॥

स्वसहितस्सहितस्थितवैरतोऽनुगतरोगतरोऽरिभयान्वितः ॥ निजपतेर्जपतेपि महद्भयं परिगताऽरिगता मुथहा यदा ॥ १२ ॥

अर्थ–जो मुथहा अरि (शत्रु) भावमें स्थितहो तो समस्त कुटुम्बवर्गमें वैरभाव उत्पन्नहो, और रोगकी वृद्धिहो, तथा शत्रुसे भयहो, अपने स्वामीकी सेवा करनेपरभी महाभय प्राप्तहोवै ॥ १२ ॥

निपुरुषः पुरुषश्च वियोगितां प्रमदयामदयातरिमुन्थहे ॥ धनयशोनयशोकरुजो लभेत् निजसमाजसमाक्रमनाशनम् ॥ १३ ॥

अर्थ–यदि मुन्था मद (सप्तम) स्थानमें स्थितहो तो पुरुष बन्धुवर्गसे पृथक् होकर स्त्रीसेभी वियोगभावको प्राप्तहो, और धन, यश, नीतिका नाशहो, तथा शोक, रोगसेभी युक्तहोवै, व अपना समाजबल नाशहोजावै ॥ १३ ॥

व्यसनतस्सनतः कलहाकुलः स्वधनरोधनरोग-

युतो नरः ॥ अहिततो हिततोषविवर्जितः
त्वशुभगो शुभगो यदि मुन्थहः ॥ १४ ॥

अर्थ–यदि मुंथहा अशुभ (अष्टम) स्थानमें स्थितहो, तो मनुष्यको अनेक प्रकारका दुःख प्राप्तहो, कलहसे चित्त व्याकुलहो अपने धनकी हानिहो, और वह मनुष्य रोगी होजावै, तथा शत्रुबाधाके कारण प्रीति और सन्तोष न रहै, और वर्षपर्यन्त अशुभ फल होवै ॥ १४ ॥

नृपकृतोपकृतोत्सवगर्वितः प्रचलताचलताति-
यशोन्वितः ॥ स्वहितकृद्धितकृन्मनुजो भवेत्
ससुकृतस्सुकृतस्थितया मुथा ॥ १५ ॥

अर्थ–जो मुथहा सुकृत (नवम) भावमें स्थितहो तो राजासे सन्मान प्राप्तहो, यशकी वृद्धिहो अपने कुटुम्बीजन तथा मित्रलोग हित करैं, और वह मनुष्य पुण्यके प्रभावसे युक्त होवै ॥ १५ ॥

निजमनोजमनोरथगौरवन्ननुभवेन्नुभवेद्विभवैर्युतः ॥
कमलयामलयापि यदीन्थिहा दशमगासुभगाद्भुत-
बुद्धिभाक् ॥ १६ ॥

अर्थ–यदि मुथा दशमस्थानमेंहो तो मनुष्यको अपने मनोरथकी सिद्धिका अनुभवहो, और वह मनुष्य विभव (ऐश्वर्य) से युक्तहो तथा लक्ष्मीकी वृद्धिहो, बुद्धि अच्छेकर्मोंकी ओर झुकै ॥ १६ ॥

सुधिषणोधिषणोपमतम्व्रजेत्तनुजतोऽनुजतोपि
सुखन्नरः ॥ नृपसुखोपसुखोमुथहा यदा हर-
मितारमितात्मजनव्रजः ॥ १७ ॥

अर्थ–जो मुथहा एकादश स्थानमेंहो, तो बृहस्पतिके समान बुद्धि

बढै, पुत्र और छोटे भाईसे मनुष्यको सुखप्राप्त होवै, राजासेभी सुख मिलै और अपने सब कुटुंबीलोग प्रीति करैं ॥१७॥

धनविधानविधापरिवर्जितो हतनयस्तनय-
स्वजनासुखः ॥ मनुजपेनुजपेविरतिर्भवेद्व्यय-
मितायमिता यदि मुन्थहा ॥ १८ ॥

अर्थ–यदि मुन्था व्यय (द्वादश) भावमें स्थितहो तो धन मिलनेका द्वार नष्ट होजाय मति जाती रहै. पुत्र और कुटुम्बसे दुःख प्राप्तहो तथा देवताओंकी पूजासे चित्त हटजावै अर्थात् देवपूजनादिक कर्मोंमें मन न लगै ॥ १८ ॥

चेद्वर्षलग्नाच्छुभगेन्थिहासा जनुस्तनोर्दुष्टफलप्र-
दात्री ॥ मिश्रम्फलं कालविदो वदन्ति न्यूना-
ऽधिकत्त्वन्तुबलाऽनुमानात् ॥ १९ ॥

अर्थ–यदि मुन्था वर्षलग्नसे शुभ स्थानमें हो और जन्मलग्नसे अशुभ स्थानमेंहो तो ज्योतिर्विद् शुभअशुभ मिलाहुआ फल कहतेहैं, परंतु उसमें न्यून अधिक (कमती बढती) मुन्थाके बलके अनुमानसे कहना ॥ १९ ॥

आयुष्ये वा स्वेद्विषिद्वादशे स्याद्वर्षावेशे मुन्थहेशो
न शस्तः ॥ रन्ध्रस्थानस्वामिना युक्तदृष्टः पापिष्ठै-
श्चाप्यस्तगो व्यस्तगो वा ॥ १२० ॥

अर्थ–यदि वर्षप्रवेश समयमें मुंथाका स्वामी एकादश, द्वितीय, षष्ठ, द्वादश इनमेंसे किसी स्थानमेंहो तो शुभ नहीं होता और इन पूर्वोक्त स्थानोंसे अतिरिक्त किसी दूसरे स्थानमें वर्तमान होकर जो सातवें स्थानके स्वामीके साथहो अथवा सप्तमभावस्वामीसे देखाजाताहो यद्वा

पापग्रहसे युक्त दृष्टहो अथवा अपनी राशिसे सप्तमस्थानमें हो वा वक्रीहो तोभी शुभ नहीं जानना ॥ १२० ॥

भाग्ये च लाभे सहजे च केन्द्रे चेद्वर्षकाले मुथहाधिनाथः ॥ करोति पुंसां विपुलं प्रतापं मैत्रं नृपैः सम्मतिवर्द्धनं च ॥ २१ ॥

अर्थ–यदि वर्षप्रवेश समयमें मुंथास्वामी नवम, एकादश, तृतीय और केन्द्र (लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम) इन स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमेंहो, तो पुरुषके प्रतापको बढावै राजासे मित्रता करावै और बुद्धिकी वृद्धि करै ॥ २१ ॥

स्वस्वामिना तत्सुहृदा शुभेन बलोपपन्नेन युतेक्षिता वा ॥ स्यान्मुन्थहा सर्वमनोरथाप्त्यै नराधिपालादपि गौरवार्थम् ॥ २२ ॥

अर्थ–यदि मुंथा स्वामी अथवा उसका मित्र शुभग्रह बलवान् होकर मुंथाके साथहो अथवा मुंथाको देखताहो, तो वह मुंथा सम्पूर्ण मनोरथको पूर्ण करनेवाली होतीहै, और राजासेभी बडाई प्राप्तकरतीहै ॥ २२ ॥

सिंहीसूनोराननं भोग्यभागाः प्रोक्तम्पुच्छं केतुभुक्तांशकास्ते । वक्रे श्रेष्ठा सम्पदिष्टेंथिहाब्दे लांगूले सा मानसा सौख्यकर्त्री ॥ २३ ॥

अर्थ–जिस राशिपर राहु स्थितहो, उसकी वक्रगति जे भोग्य अंशहैं उनको मुख कहतेहैं, और जे भुक्त अंशहैं उनकी पृष्ठसंज्ञाहै, जैसे कन्याके दशवें अंशपर राहुस्थितहै, तो दश अंश मुखसंज्ञकहैं, और वक्रगतिसे वीस अंश पृष्ठसंज्ञकहैं, तथा जिस राशिपर राहू स्थित हो, उससे सातवीं राशि पुच्छसंज्ञकहै, परंतु यहां इस ऊपरोक्त श्लोकमें

मुख, पुच्छ ये दोई संज्ञा कहीहैं, अर्थात् जिस राशिपर राहु स्थितहै उसमें वक्रगतिसे राहुके भोग्य अंशोंकी मुखसंज्ञाहै, और केतुके भुक्त अंशोंकी पुच्छसंज्ञाहै, राहुकी राशिसे सातवीं राशिपर केतु सदा रहताहै, और राहु सदा वक्रगतिसे राशियोंपर भ्रमण करता रहताहै, अनेक पण्डित केतुकोही राहुकी पुच्छ कहतेहैं, यदिवर्षप्रवेश समयमें मुंथा राहुके मुखमें पडै तो शुभ फलप्रदान करतीहै और यदि लांगूल (पुच्छ) में मुन्था पडै तो मनमें दुःख उपजातीहै ॥ २३ ॥

ग्रहयुक्तमुन्थाफल.

नृविभुतो विभुतोत्थसुखान्वितः सुकृतमाकृतमानसमुन्नतिः ॥ नियमनायमना मुथहा यदा रवियुता वियुतारिगणो नरः ॥ २४ ॥

अर्थ–जो मुंथा रवि (सूर्य) से युक्त हो तो वह मनुष्य राजद्वारा सेवासे उत्पन्न सुख करके संयुक्त होवै, और ऐश्वर्य व मान बढै, शत्रुओंसे रहित होजावै ॥ २४ ॥

अविकृतोविकृतोज्झितसंगती रुचिरधीश्चिरधीरतयान्वितः ॥ विभवतो भवतोषयितेंथिहा भविभुना विभुना कृतगौरवः ॥२५॥

अर्थ–जो मुंथा नक्षत्रनाथ (चन्द्रमा) करके संयुक्तहो तो देहको सुखहो, सज्जनोंसे समागमहो, और उत्तमबुद्धि, विभव, सन्तोष, राजासे मान प्राप्तहोवै ॥ २५ ॥

कुमतिना मतिनाशमसृग्युजं विनतयानतयापचयन्दिशेत् ॥ सदनतोदनतोसुखमिन्थिहा कुसुतयुक्स्वजनास्वजनारुचिः ॥ २६ ॥

अर्थ–जो मुंथा मंगलसे युक्तहो तो कुबुद्धिसे बुद्धिका नाशहो

अर्थात् कुमतिका प्रकाश हो और सुमतिका नाश होवै, रक्तके विकारसे देहमें रोग उत्पन्न होजावै. अविनयभावसे विनयका विनाश हो घरसे और भोजनसे सुख न मिलै,अपने बन्धुओं और मित्रोंमें अरुचिहोवै २६

सुजनतो जनतो वद सत्कथा रसमुदारमुदार-
मतिर्नरः ॥ स्वसहितस्सहितश्च यदीन्थिहा श-
मिलितामिलिताऽत्मजनव्रजः ॥ २७ ॥

अर्थ—यदि मुन्था बुधके साथहो, तो वह मनुष्य, सज्जनसमागम, सत्कथाश्रवण, मधुररस, उदारबुद्धि, सन्मार्गद्वारा द्रव्यलाभ, बन्धुमिलन इन पदार्थोंसे युक्त होवै ॥ २७ ॥

सुरमणी रमणीयविलासभाक्तनयमानयमानसु-
खैर्युतः ॥ सुकृतिभिः कृतिभिर्मुथहा यदा स-
धिषणा धिषणाभ्युदयान्वितः ॥ २८ ॥

अर्थ—यदि मुन्था बृहस्पतिसे युक्तहो तो मनुष्य स्त्रीविलाससुख, पुत्रसुख, नीति, सन्मान इन सुखोंसे युक्तहो और सुकृतकर्मद्वारा सद्बुद्धि और ऐश्वर्यसे संयुक्त होवै ॥ २८ ॥

स्वकलितः कलितप्रभवो भवेदविभवो विभ-
वोद्धतपूरुषात् ॥ स्वसनतस्सनतश्च यदीन्थिहा
शनियुता नियुतार्थदुराशयः ॥ २९ ॥

अर्थ—यदि मुंथा शनिसंयुक्तहो, तो अपनी कलहसे चिन्ता उत्पन्न हो, और ऐश्वर्यवाले उन्मत्त पुरुषसे विभवरहित होवै, अपनी कान्तिसे हीन होजावै और मनमें दुष्ट मनोरथ प्रगट होवैं ॥ २९ ॥

सुरारिगुरुणा यदा भवति संयुता मुंथहा हता-
रिपुपलायते सुरमणीरमेत्कामतः ॥ सुतस्वजन-

सौख्यभाक्भवतिभूपतेरुन्नतिं नतिं वितनुते-
तरामखिललोक एतत्पदे ॥ १३० ॥

अर्थ–जो दैत्यगुरु (शुक्र) करके मुथहा संयुक्त होवै तो शत्रु हारकर भाग जावै, और कामके वश होकर सुन्दर स्त्रीसे रमण करै,पुत्रसुख व बन्धुसुखसे युक्त होवै, राजाके आश्रयसे धनकी वृद्धिहो, सब लोक सन्मानसहित उसको प्रणाम करैं ॥ १३० ॥

यन्मुन्थहायाः फलमुक्तमत्र शुभं विमिश्रन्त्व-
शुभं विशेषात् ॥ तत्कल्पनीयम्मुथहेशपाके
बलानुमानान्नु बुद्धिमद्भिः ॥ ३१ ॥

अर्थ–यहां मुंथाका शुभ मिश्रित अशुभ भेदसे जो फल कहा सो फल मुन्थेशकी दशामें कल्पना करना, उसमें न्यूनाधिक्यता मुन्थेशके बलके अनुसार बुद्धिवानोंकरके जानना चाहिये. अर्थात् मुंथेश पूर्ण बलीहो तो पूर्ण फल कहना, मध्यम बलीहो तो मध्यम फल, हीन बली होतो हीन फल जानना, और मुन्था जिस ग्रहके साथहो उस ग्रहका बलभी देखकर फल कहना ॥ ३१ ॥

हर्षबलसाधन.

नन्दाऽग्नितर्केन्दुशिवेष्विनाख्यास्सूर्यादिकानां स्वगृह-
न्निजोच्चम् ॥ पुंस्त्रीखगानान्तनुतस्त्रयश्च निशादिनं स्त्री-
नरसंज्ञितानाम् ॥३२॥ पुम्भानि पुंसां वनितागृहाणि
स्त्रीण्योमगानाञ्च यदास्पदानि ॥ हर्षास्पदेष्वब्धि ४
विशोपकाश्च पृथक् पृथक् पञ्चसु सम्वदन्ति ॥ ३३ ॥

अर्थ–अब हर्षबल लिखतेहैं, यहां हर्षबल पांच प्रकारसे वर्णन कियाहै, उसमें प्रथम यहकि सूर्य नवम स्थानमेंहो, चन्द्रमा तीसरेहो, मंगल छठेहो, बुध लग्नमेंहो, गुरु ग्यारहवें हो, शुक्र पांचवें हो, शनि बा-

रहवें स्थानमें हो तो यह प्रथम हर्षबलहै, और जो ग्रह अपनी राशि व अपने उच्च राशिमें हो तो हर्षित जानना, यह दूसरा हर्षबलहै, और लग्नसे तीन तीन भावोंमें पुरुषग्रह व स्त्रीग्रहहों तो हर्षित होतेहैं अर्थात् १।२।३।७।८।९ स्थानमें पुरुषग्रह, और ४।५।६।१०।११।१२ स्थानमें स्त्री ग्रह हों तो यह तीसरा हर्षबलहै, और रात्रिमें वर्षप्रवेशहो तो स्त्रीग्रह, दिनमें वर्षप्रवेशहो तो पुरुषग्रह हर्षित होतेहैं यह चौथा हर्ष बलहै ॥ ३२ ॥ तथा पुरुषग्रह पुरुष राशिमेंहों स्त्रीग्रह स्त्रीराशिमें हों तो हर्षित जानना. यह पांचवां हर्षबलहै, इन पांचोंप्रकारके हर्षबलमें चार चार विश्वाका बल होताहै, जिस ग्रहका पांचों प्रकारसे हर्षबल पायाजावै तो पूर्ण वीस विश्वाका बल जानना, यहां चन्द्र, बुध, शुक्र, शनि ये चार ग्रह स्त्रीसंज्ञक कहातेहैं, और सूर्य, मंगल, गुरु ये तीन ग्रह पुरुषसंज्ञक कहातेहैं, इसमें नपुंसक ग्रह नहीं हैं ॥ ३३ ॥

त्रिपताकचक्रसाधन.

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमेककोणात् ॥ स्मृतं बुधैः तत्त्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखाग्रगवर्षलग्नात् ॥ ३४ ॥ न्यसेद्भचक्रं किल तत्र सैका याताऽब्दसंख्या विभजेन्न भोगैः ॥ शेषोन्मिते जन्मगचन्द्रराशेस्तुल्ये च राशौ विलिखेच्छशाङ्कम् ॥ ३५ ॥ परे चतुर्भाजितशेषतुल्ये स्थाने स्वराशेः खचरास्तु लेख्याः ॥ स्वर्भानुविद्धे हिमगोत्वरिष्टं तापोऽर्कविद्धे रुगिनात्मजेन ॥ ३६ ॥ महीजविद्धे तु शरीरपीडा शुभैश्च विद्धे जयसौख्यलाभः ॥ शुभाशुभं व्योमगवीर्यतोऽत्र फलं तु वेधस्य वदेत्सुधीमान् ॥ ३७ ॥

अर्थ—अब त्रिपताकचक्र लिखतेहैं, त्रिपताकचक्रकी यह रीतिहै-कि तीन रेखा खडी और तीन रेखा वेडी बनावै, फिर एककोनेसे परस्पर सब रेखाओंको वेधित करदेवै इस प्रकार पण्डितोंका कहा चक्र लिखकर पूर्वकी मध्य रेखापर वर्षलग्नसे ॥ ३४ ॥ राशियोंको स्थापित करै जैसा कि, चक्रमें लिखाहै सो देखकर समझलो. अनन्तर उन राशियोंपर ग्रह स्थापन करनेकी रति यह है कि गतवर्षसंख्यामें एक जोड़देवै और नवका भागदेवै जो अंक शेषरहे उस अंक संख्याको ग्रहणकर, जन्मसमय जिस राशिका चन्द्रमाहो उस राशिसे गिनकर तुल्य राशिमें चन्द्रमाको लिखै ॥ ३५ ॥ शेष
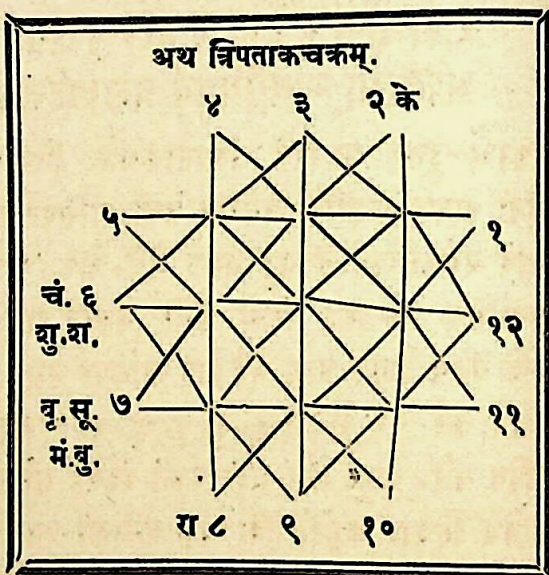
(मं० बु० बृ० शु० श० सू०) ग्रहोंको स्थापित करनेके लिये चारका भाग देवै शेष स्थानमें जन्मकाल ग्रह राशिसे ग्रह स्थापित करना, परन्तु यहां यह स्मरणरहैं कि राहु, केतु अपनी राशिसे उलटे चलतेहैं उसी अनुसार पीछेकी राशिमें लिखना, सबग्रहोंका वेध चन्द्रमासे विचारना. चन्द्रमा व राहुसे वेधहो तो अरिष्ट जानना, चन्द्रमाका सूर्यसे वेध होतो ताप जानना, चन्द्रमा और शनिका वेधहो तो रोग जानना ॥ ३६ ॥ चन्द्रमाका मंगलसे वेधहो तो शरीरपीडा जानना. शुभग्रहसे चन्द्रमाका वेधहो तो जय व सुखका लाभहो. इसी प्रकार ग्रहोंका बल विचारके वेधका फल बुद्धिवान् कहै ॥ ३७ ॥

द्वितीयप्रकार.

नवभिर्हायनैश्चन्द्रराहुभौमरसाब्दके ॥ शेषा ग्र-
हाश्च चत्वारि राहुकेतुश्च वक्रगौ ॥३८॥ वेधस्य
चैकरेखायां राहुचन्द्रनरस्य च ॥ तदा कष्टं
विजानीयात् तत्र वर्षेषु निश्चितम् ॥ ३९ ॥
राहोर्जीवस्य वेधेतु मृत्युरेव न संशयः ॥ शुभवेधे
भवेल्लाभो न्यूनाधिक्यं बलाद्वदेत् ॥ १४० ॥

अर्थ—दूसरे प्रकारसे त्रिपताकचक्र लिखतेहैं. कि नववर्षपर्यन्त चन्द्रमा भ्रमण करताहै अनन्तर उसी राशिपर आजाताहै इसी कारण वर्तमान वर्षसंख्यामें नवका भाग देवै. शेष राशिपर जन्मसमय प्राप्त चन्द्रराशिसे चन्द्रमा लिखै. इसी प्रकार राहु और मंगल स्थापित करनेके लिये छेका भाग देवै शेष राशिपर राहु, भौम राशिसे राहु, भौम स्थापित करै, एवं शेष (सू. बु. बृ. शु. श.) ग्रह चारका भाग देकर स्थापित करै. राहु, केतु सदा वक्री रहतेहैं सो स्मरण रहै ॥ ३८ ॥ अब वेध विचार कहतेहैं कि राहु चन्द्रका एक रेखामें वेध आपडै तो उस वर्षमें मनुष्यको कष्ट जानना ॥ ३९ ॥ राहु और बृहस्पतिका वेध होतो निस्सन्देह मृत्यु होवै, शुभग्रह करके वेध होतो लाभ होवै. यहां न्यूनाधिकफल बल देखकर कहै॥१४०॥यह दो प्रकारसे त्रिपताक वेध कहा गया इनमें पूर्वोक्त त्रिपताक सर्वमान्यहै और द्वितीयप्रकार का उक्त त्रिपताक सर्व सम्मत नहीं है, अब पूर्वोक्त त्रिपताकका उदाहरण आगे लिखतेहैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

त्रिपताकचक्रोदाहरण.

गतवर्ष ३६ में १ संयुक्त किया तो ३७ इसमें नव९का भाग दिया तो शेष १ जन्म समय चन्द्रमा कन्याराशिकाहै इस कारण पहली

कन्याही राशिपर चन्द्रमा रहा, क्यों कि जिस राशिपर ग्रहहो उसी राशिसे गिनना चाहिये, एवं शेष ग्रहोंके स्थापित करनेके लिये ३७ में चार४का भाग दिया. भाग देनेसे शेष १ तो पहिलीही राशिपर शेष ग्रहभी रहे ॥

मुद्दादशान्तर्दशा साधन.

विविधभावफलोत्थफलं खगो दिशति तद्यदने हसि सा दशा ॥ इति तदा नयनं नयसम्मतं परिवदामि विदां सफलं मुदे ॥ १ ॥

अर्थ–विविध प्रकारके भावफलसे उत्पन्नफल ग्रहोंकी दशामें होताहै यह समझकर दशासाधनप्रकार बुद्धिवानोंके प्रसन्नहेतु वर्णन करताहूं ॥ १ ॥

जन्मर्क्षसंख्या सहिता गताब्दा द्व्यूनितानन्द९ हृतावशेषाः ॥ आचंकुराजीशबुकेशुपूर्वा दशाग्रहास्वामिनइत्थमब्दे ॥४१॥ अथैषां दिवसा ज्ञेया धृति १८ स्त्रिशति ३० मूर्च्छनाः २१ वेदेषवो ५४ नागकृता ४८ मुन्यर्थाः ५७ क्षितिसायकाः ५१ ॥४२॥ मूर्च्छना २१॥ षष्टि ६० संख्याताः द्वादशांशेन मासजाः ॥ वेदा ४नागाः ८ शराः ५ सप्त ७ दिग् १० रसा ६ ङ्क ९ शराः ५ रसाः६ ॥ ४३ ॥ सूर्यादीनाञ्च गुणकाः स्तैर्निघ्रा स्वदशामिति ॥ षष्ट्याप्तान्तर्दशा तस्य जायतेतिपरिस्फुटा ॥ ४४ ॥

अर्थ–अब मुद्दादशा और अन्तर्दशाका साधनप्रकार लिपिबद्ध

करतेहैं, गतवर्षसहित जन्मनक्षत्र संख्यामें दोघटाकर नवका भाग लगावै शेष अंकोंसे १ आदित्य, २ चन्द्र, ३ कुज (मंगल), ४ राहु, ५ जीव (बृहस्पति), ६ शनि, ७ बुध, ८ केतु, ९ शुक्र इत्यादि ये ग्रह दशाओंके स्वामीहैं. अर्थात् अश्विनी आदिसे गिनकर जन्म-नक्षत्रसंख्याको गतवर्षसंख्यामें जोडदेवै और नव९का भाग देवै. भाग देनेसे यदि १ शेष रहे तो सूर्यदशा और २ शेषसे चन्द्रदशा, तथा ३ शेषसे मंगलकी दशा और ४ शेष रहनेसे राहुकी दशा जानना, पांच५ शेष रहनेसे बृहस्पतिकी दशा छे ६ शेषसे शनिदशा, सात ७ शेषसे बुधदशा आठ शेष रहनेसे केतुकी दशा नव९ शेषसे शुक्रकी दशा जानना, इस प्रकार वर्षमें मुद्दादशा स्वामियोंको स्थापित करना ॥४१॥ अब इन पूर्वोक्त दशाओंकी दिनसंख्या कहतेहैं, कि सूर्यकी दशाके १८ दिन जानना. चन्द्रमाकी दशाके ३० दिन, और मंगलकी दशाके २१ दिन और राहुकी दशाके ५४ दिन अर्थात् १महीना २४ दिन जानना. बृहस्प-तिकी दशाके ४८ दिन (१ मास १८ दिन) जानना. शनिदशाके ५७ दिन (१ मास २७ दिन) जानना, बुधदशाके ५१ दिन (१ मास २१ दिन) जानना, और केतुकीदशाके २१ दिन, और शुक्रकी दशाके ६० दिन

मुद्दादशाप्रमाणचक्र.

सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	दशा
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

अर्थात् २ महीना जानना, यह वर्षदशाहै. इसी संख्याके बारहवें भा-गसे मासदशाकी संख्या जानना, जैसे सूर्यकी दशा १८ दिनकी है तो बारहवा भाग १ दिन ३० घटी हुई, इसी प्रकार चक्रमें स्पष्टलि-खदिया है, जिस मासमें जोदशा (पूर्वोक्तरीति अनुसार) हो उसीकी

मासदशा प्रमाणचक्र.

सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु	दशा
१	२	१	४	४	४	४	१	५	दिन
३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	०	घटी

प्रथम मासदशा लिखना द्वितीय मासमें मासप्रवेशके दिन जो नक्षत्रहो उस नक्षत्रसे पूर्वोक्त अनुसार दशा निकालना, परंतु मासदशामें गतवर्ष की गतमाससंयुक्त करना इसी प्रकार मासदशा लिखना, अब पूर्वोक्त मासदशासे अतिरिक्त मास दशाका क्रम आगे मास प्रवेश बनानेके स्थानमें लिखेंगे ॥ अब जो मुद्दादशा पूर्व लिख चुकेहैं उसकी अन्तर्दशा निकालनेके अर्थ गुणकांक लिखतेहैं कि सूर्यका गुणकांक ४, और चन्द्रमाका गुणकांक ८, तथा मंगलका गुणकांक ५, और राहुका गुणकांक ७, और बृहस्पति का १०, तथा शनिका ६ और बुधका ९, तथा केतुका ५, और शुक्रका ६ गुणकांक जानना ॥ ४२ ॥

अन्तर्दशाप्रमाणचक्र.

	सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	
सू	१	२	१	२	३	१	२	१	१	दिन
१८	१२	२४	३०	६	०	४८	४२	३०	४८	घटी
चं	२	४	२	३	५	३	४	२	३	दि.
३०	०	०	३०	३०	०	०	३०	३०	०	घ.
मं	१	२	१	२	३	२	३	१	२	दि.
२१	२४	४८	४५	२७	३०	६	९	४५	६	घ.
रा	३	७	४	६	९	५	८	४	५	दि.
५४	३६	१२	३०	१८	०	२४	६	३०	२४	घ.
बृ	३	६	४	५	८	४	७	४	४	दि.
४८	१२	२४	०	३६	०	४८	१२	०	४८	घ.
श	३	७	४	६	९	५	८	४	५	दि.
५७	४८	३६	४५	३९	३०	४२	३३	४५	४२	घ.
बु	३	६	४	५	८	५	७	४	५	दि.
५१	२४	४८	१५	५७	३०	६	३९	१५	६	घ.
के	१	२	१	२	३	२	३	१	२	दि.
२१	२४	४८	४५	२७	३०	६	९	४५	६	घ.
शु	४	८	५	७	१०	६	९	५	६	दि.
६०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

सूर्य आदि दशाओंके गुणकांकोंकरके अपनी अपनी दशाओंको गु॰णाकरै, और ६० का भागदेकर लब्ध अंक प्रमाण अन्तर्दशा जानना, इस प्रकार अन्तर्दशा स्पष्ट होतीहैं, जैसे सूर्यकी दशा १८ दिनकी है और सूर्यका गुणकांक ४ से गुणाकर दिया तो ७२ हुये, साठिसे भाग लगाया तो लब्ध १।१२ एक दिन वारह घडी सूर्यमें सूर्यकी अन्तर्दशा जानना, सो चक्रमें स्पष्ट लिख दियाहै ॥ ४४ ॥

मुद्दादशासाधनोदाहरण.

गतवर्ष ३६ जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी संख्या १२ युक्त किये तो ४८ हुये, दो घटाय दिये तो रहे ४६ इसमें नव ९ का भागदिया तो

अथ मुद्दादशाप्रवेशचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ऐक्यम्	
० १८	१ ०	० २१	१ २४	१ १८	१ २७	१ २१	० २१	२ ०	१२ ०	मा. दि.
१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	सं.
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
६ २२ १९ ३३	७ १० १९ ३३	८ १० १९ ३३	९ ०१ १९ ३३	१० २५ १९ ३३	०० १३ १९ ३३	२ १० १९ ३३	४ ०१ १९ ३३	४ २२ १९ ३३	६ २२ १९ ३३	रा. अं. क. वि.
कार्तिक शुक्ल ८ भौमे	मार्ग कृष्ण ८ शनौ	पौष कृष्ण ७ रवौ	पौष शुक्ल १४ रवौ	फाल्गुन शुक्ल ८ गुरौ	वैशाख शुक्ल १२ गुरौ	आषाढ कृष्ण १२ रवौ	भाद्रपद कृष्ण ७ शुक्रे	भाद्रपद शुक्ल १४ रवौ	मार्ग कृष्ण १ बुधे	दशाप्रवेश मासादि

शेष १ से सूर्यकी मुद्दादशा प्रथम जानना, दूसरी दशा चन्द्रमाकी, तीसरी मंगलकी इस क्रमसे चक्रमें स्पष्ट देखलो. दशाके नीचे उसका प्रमाण, उसके नीचे सम्वत्, सम्वत्के नीचे सूर्यराशि अंश कला विकला, फिर दशाप्रवेश मास पक्ष तिथि वार लिख दियाहै; सो सब उदाहरणचक्रमें देखकर समझलो. अब आगे अन्तर्दशाचक्र लिखतेहैं, तहां केवल सूर्यकी

मुद्दादशासु सूर्यान्तर्दशाचक्रम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ऐक्यम्.	
१ १२	२ २४	१ ३०	२ ६	३ ०	१ ४८	२ ४२	१ ३०	१ ४८	१८ ००	दि. घ
१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	सं.
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
६ २२ १९ ३२	६ २३ ३१ ३२	६ २५ ५५ ३३	६ २७ २५ ३२	६ २९ ३१ ३३	७ २ ३१ ३२	७ ४ १९ ३२	७ ७ ०१ ३२	७ ८ ३१ ३२	७ १० १९ ३३	रा. अं. क. वि.
कार्तिक शुक्ल ४ भौमे	कार्तिक शुक्ल ५ बुधे	कार्तिक शुक्ल ८ शनौ	कार्तिक शुक्ल ९ रवौ	कार्तिक शुक्ल १२ भौमे	कार्तिक शुक्ल १५ शुक्रे	मार्ग कृष्ण २ रवौ	मार्ग कृष्ण ५ बुधे	मार्ग कृष्ण ६ गुरौ	मार्ग कृष्ण ८ शनौ	अन्तर्दशाप्रवेशो मासादि

अन्तर्दशाका चक्र लिखदेतेहैं, सो समझलेना, जैसे कार्तिक शुक्ल चतुर्थी भौमवारसे सूर्यमें सूर्यकी अन्तर्दशा १ दिन १२ घटी पर्यन्त सो कार्तिक शुक्ल पंचमी बुधवारपर्यन्त जानना, इसी प्रकार अन्य अन्तर्दशाओंके प्रवेशका समय जानना, यह दशा अन्तर्दशाप्रकार स्थूलमानसे वर्णन किया है, अब गणितगत मुद्दादशाप्रकार आगे लिखतेहैं ॥

गणितागत मुद्दादशा प्रकार.

गौरीमतोक्तस्य दशाक्रमस्य दशादिमायाभवसाद्दुपेता ॥ साभुक्तभोग्यर्क्षघटीविनिघ्ना सर्वक्षनाडीविहृता दिनाद्यम् ॥ ४५ ॥ द्विधा याद्दत्तं त्विह भोग्यभुक्तं तस्य ग्रहस्यैव लिखेदधस्तात् ॥ दशाप्रमाणं परतो ग्रहाणां यथास्थमग्रे विलिखेदधोधः ॥ ४६ ॥ प्रान्ते पुनर्भुक्तघटीसमुत्थं दिनाद्यमाद्यस्य लिखेत्स्वगस्य ॥

अर्थ–गणितसे मुद्दादशा ल्यावनेका प्रकार वर्णन करतेहैं.–पूर्व जो क्रम कह आयेहैं यद्यपि वहभी गणितहीसे सिद्ध होताहै तथापि इसमें विशेष गणित करने पड़ताहै, सो इस प्रकारकि ‘ जन्मर्क्षसंख्यासहिता गातादा’ इत्यादि पूर्वोक्त गौरीमतसे बनाये हुये दशाक्रमसे जो दशा प्रथम आईहो, उसको स्थापित करै, फिर जन्मनक्षत्रकी भुक्त और भोग्य घटीसे दशाके दिनोंको गुणा देवै, उनमें सर्वर्क्ष अर्थात् भभोग घटीसे भागलेवै जो दिनादिक लब्ध हो ॥४५॥ उनको दो जगह स्थापित करै अर्थात् भुक्त घटियोंसे गुणाकर भभोग घटिसे भाग लेकर जो लब्धांक आयेहों उनको पृथक् स्थापित करै, और भोग्यप्रकारसे जो लब्धांक आयेहों सो पृथक्रक्खै, इसमें भोग्यप्रकारसे आये हुये दिनादि प्रमाणको लेकर प्रथम दशाके नीचे रखना, अनन्तर ग्रहदशाओंका प्रमाण यथायोग्य जिस२का जो हो उसीके नीचे नीचे लिखना ॥ ४६ ॥ अन्तमें फिर भुक्तघटी प्रकारसे पूर्वोक्त लब्धदिनादिक जो आदिदशासे सिद्ध क्रिया पूर्व स्थापितहै, सो रखना. अब इसका उदाहरण आगे लिखतेहैं.

गणितागत मुद्दादशा चक्रम्.

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	एक्यम्	
०	१	०	१	१	१	१	०	२	०	१२	मा.
७	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	१०	०	दि.
३	०	०	०	०	०	०	०	०	२०	०	घ.
१०	०	०	०	०	०	०	०	०	५०	०	पल
१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	सं.
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.
६	६	७	८	१०	००	१	३	४	६	६	रा.
२२	२९	२९	२०	१४	०२	२९	२०	११	११	२२	अं.
१९	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	१९	क्र.
३३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४३	३३	वि.
कार्तिक शुक्ल ८ भौमे	कार्तिक शुक्ल १२ भौमे	मार्ग शुक्ल ११ बुधे	पौष शुक्ल २ बुधे	फाल्गुन कृष्ण ११ रवौ	चैत्र शुक्ल १६ शनौ	ज्येष्ठ शुक्ल १५ बुधे	श्रावण शुक्ल ८ रवौ	भाद्र शुक्ल २ सोमे	कार्तिक शुक्ल ६ रवौ	मार्ग कृष्ण १ बुधे	दशाप्रवेश समयमासादि

उदाहरण.

जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी भुक्त घटिका ३६प.४८ सर्वर्क्ष (भभोग) घटिका ६४ पल १ मुद्दादशा प्रथम सूर्य दशा संख्या दिन १८ अब जन्मनक्षत्रकी भुक्त भोग्य घटीके क्रमसे भयात घटी पल ३६।४८के पल कर डालेतो २२०८ भभोग घटी पल ६४।१के पल ३८४१ हुये. भयात पल २२०८को सूर्यदशाके दिन १८ से गुणाकिया तो ३८७४४ में भभोग पल ३८४१ से भाग लिया तो दिन १० घटी २० पल ५० हुये. जन्मनक्षत्रकी भोग्य घटी पल २७।१३ के पल किये तो १६३३

हुये. सूर्यदशा दिन १८ से गुणातो २९३९४ हुये. इसमें भभोग पल ३८४१ से भाग लिया तो लब्धदिन ७ घटी ३८ पल १० हुये. यहां भोग्य दिन आदिकको आदिसूर्यदशाके नीचे लिखकर सम्पूर्ण दशाओंको प्रमाणसहित चक्रमें लिखाहै सो देखकर समझलो. अन्तमें सूर्य दशाका भुक्त लिखाहै. फिर वर्षप्रवेशका सम्वत् सूर्य राश्यादि संयुक्तकर दशा काल स्पष्ट समझा दियाहै, फिर अन्तर्दशाका चक्र पूर्व अनुसार समझकर बनालेना, यद्यपि यह रीति मुद्दादशाकी बहुत ठीकहै परन्तु प्रायः पण्डितलोग इस प्रकार दशाको कुछ थोडेही परिश्रमके कारण आलस्यवश्य होकर नहीं बनातेहैं. पूर्व जो साधारण रीतिसे दशाप्रकार कह दियाहै उसीको शीघ्रतापूर्वक लिख देतेहैं. हमने जहांतक परिचय लियाहै तो मुद्दादशामें ग्रहभावफल प्रायः मिलजाताहै, मुद्दादशाकी अपेक्षा हीनांश पात्यांश दशामें परिश्रमभी बहुतहैं और फलभी पूर्ण रीतिसे संघटित नहीं होता, इसी कारण मुद्दादशाका क्रम लिखना इस ग्रन्थमें हमनें उचित समझा. यह मुद्दादशा विंशोत्तरी महादशाके आधारसे बनाई गईहै. संस्कृतमें मुद्दाशब्दका अर्थ आनन्ददेनेवाली, इसी मुद्दाशब्दसे मुद्दा नाम रक्खाहै, कोई कोई पंडित इसको मुग्धा कहतेहैं मुग्धाका अर्थ कि युवा व सुंदरस्त्री. अथवा मुग्धा एकप्रकारकी नायिकाको कहतेहैं ॥

अब योगिनीदशाके आधारसे जो वर्षदशा बनतीहै उसका क्रम लिखतेहैं, क्योंकि योगिनीमेंभी प्रायः पण्डितोंकी रुचिहै ॥

योगिनीमुद्दादशा.

गता समात्रिसंयुक्ता जन्मनक्षत्रसंयुता ॥
अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषे मांगलिकाऽऽदिमा ॥ ४७ ॥

तथाच गताब्दे स्वीयजन्मभसंख्यां संयोज्य अष्टतष्टे त्रियुक्ते शेषं वर्षप्रवेशस्यादौ योगिनी दशास्यात् ॥

अर्थ–गतवर्षमें तीन और जन्मनक्षत्र संख्या मिलाकर आठका भाग देवै शेष मंगलाआदि दशा जानना ॥ ४७ ॥

मंगला पिंगला धान्या भ्रामरी भद्रिका तथा ॥ उल्का सिद्धा संकटा च योगिन्यष्टौ दशाः स्मृताः ॥ ४८ ॥ दशाहं मंगलावर्षे विंशाहं पिंगला तथा ॥ त्रिंशद्दिनं धान्यका च चत्वारिंशच्च भ्रामरी ॥४९॥ पंचाशद्भद्रिका प्रोक्ता चोल्काषष्टिदिनं तथा ॥ सिद्धा सप्तति संख्या च तथाशीत्यन्तिमा दशा ॥ ५० ॥

अर्थ–१ मंगला, २ पिंगला, ३ धान्या, ४ भ्रामरी, ५ भद्रिका, ६ उल्का, ७ सिद्धा, ८ संकटा, यह आठौं योगिनीदशा कही हैं॥४८॥ वर्षमें दसदिन मंगला, वीसदिन पिंगला, तीस दिन धान्या, और चालिस दिन भ्रामरी, पचासदिन भद्रिका, साठिदिन उल्का, सत्तरदिन सिद्धा, अस्सी दिन संकटा दशा जानना ॥ ४९ ॥ ५० ॥

उदाहरण.

गतवर्ष ३६ जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी संख्या १२ और ३ इनको युक्त किया तो ५१ हुये. आठका भाग दिया. भाग देनेसे शेष ३ रहे तो तीसरी धान्या प्रथमदशा वर्षमें हुई तो धान्या दशा प्रथम ३० दिन अर्थात् १ महीना रही, भ्रामरीदशा ४० दिन अर्थात् १ महीना १० दिन, भद्रिका ५० दिन अर्थात् १ महीना २० दिन, इसी प्रकार सम्पूर्ण दशाओंका न्यास करके सम्वत् सूर्यराश्यादि नीचे रखकर जोडदेवै, जैसाकि, चक्रमें लिख दियाहै, सो समझलेना. इसकी अंतर्दशा बनानेका क्रम और चक्र यहां इस कारण नहीं लिखा, कि यद्यपि योगिनीदशामें पण्डितोंकी रूचिहै, तथापि योगिनीदशाके आधारसे बनाई हुई इस योगिनी मुद्दादशामें रूचि कमती दीख पड़तीहै, और जैसे गणितागत मुद्दादशाका प्रकार जन्म

नक्षत्रसे है. ऐसेही योगिनी मुद्दादशाकाभी क्रमहै, अब जिसमें जिसको रूचिहो और फल घटित होता जानपडै सो करना. परन्तु हमारी सम्मतिमें गणित भाव प्रशस्तहै ॥

अथ योगिनीमुद्दादशाचक्रम्.

धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.	मं.	पिं.	ऐक्ययम्.	
१ ०	१ १०	१ २०	२ ०	२ १०	२ २०	० १०	० २०	१२ ००	मास. दिन.
१९५६	१९५६	१९५६	१९५६	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	१९५७	सम्वत्.
सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सू.	सूर्य.
६ २२ १९ ३३	७ २२ १९ ३३	९ २ १९ ३२	१० २२ १९ ३३	०० २२ १९ ३२	३ २ १९ ३२	५ २२ १९ ३३	६ २ १९ ३२	६ २२ १९ ३२	राशि अंश. कला. विक०
कार्त्तिक शुक्ल ८ भौमे	मार्ग शुक्ल पंचम्यां गुरौ	पौष शुक्ल १५ चन्द्रे	फाल्गुन शुक्ल ५ चन्द्रे	वैशाख शुक्ल ४ गुरौ	श्रावण कृष्ण ६ बुधे	आश्विन शुक्ल १५ चंद्रे	कार्त्तिक कृष्ण १० गुरौ	मार्ग कृष्ण १ बुधे	दशाप्रवेश समयमासादि

भावविचार.

शरीरवर्णचिन्हायुर्वयोमानं सुखासुखम् ॥ जातिः शी-
लं च मतिमांल्लग्नात्सर्वं विचिन्तयेत् ॥ ५१ ॥ सुवर्ण-
रूप्यरत्नानि धातुर्द्रव्यं सखाधने ॥ विक्रमे भ्रातृभृत्या-
ध्वपित्र्यस्खलनसाहसम् ॥ ५२ ॥ पितृवित्तनिधिक्षेत्रं
गृहं भूमिश्च तुर्यतः ॥ पुत्रे मंत्रधनोपायगर्भविद्यात्मजे-

क्षणम् ॥ ५३ ॥ रिपौ मातुलमांद्यारिचतुष्पाद्न्धभीश्रणान् ॥ द्यूते कलत्रवाणिज्यनष्टविस्मृतिसंकथा ॥
॥ ५४ ॥ हृताध्वकलिमार्गादिचिन्त्यंद्यूने ग्रहोऽशुभः ॥ मृत्यौ चिरंतनं द्रव्यं मृतवित्तं रणे रिपुः ॥५५॥
दुर्गस्थानं मृतिर्नष्टं परीवारो मनोव्यथा ॥ धर्मे रतिस्तथा पन्था धर्मोपायं विचिन्तयेत् ॥ ५६ ॥ व्योम्नि
मुद्रा परं पुण्यं राज्यं वृद्धिं च पैतृकम् ॥ आये सर्वार्थधान्यार्धं कन्यामित्रचतुष्पदः ॥ ५७ ॥ व्यये वैरिनिरोधार्तिव्ययादिपरिचिन्तयेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ–अब जिस जिस भावमें जो जो विचार करना चाहिये सो लिखते हैं,–कि, शरीरका सुख, दुःख, अर्थात् शरीरकी पुष्टता व दुर्बलता व रक्त श्वेत आदिवर्ण, व मशकादि चिन्ह, जीवन. बाल्य, यौवन, वृद्धवयस्, सुख, दुःख, ब्राह्मणादि जाति, आचरण, इन सबोंको बुद्धिवान् पण्डित लग्नसे विचार करै ॥ ५१ ॥ और सोना, चांदी, रत्न, गैरिकादि धातु, कांस्यआदिद्रव्य, मैत्रीका विचार अर्थात् मित्र कैसे होंगे, इन सबोंको धनभावमें चिन्तवन करै, तथा तीसरे भावमें भाई बहिनोंका, व सेवक, व मार्ग चलना, व पितृसम्बन्धी कार्य, कार्योंका विध्वंस, साहस कर्म (विना विचारे कर्म कर डालना) इन सबोंको चिन्तवन करै ॥ ५२ ॥ पिताका धन गढाहुआ धन (भांडाआदि) खेती, घर, भूमिलाभ इन सबोंका विचार चौथे घरसे करना, पांचवें घरसे मंत्र (गुप्तसंभाषण) धनलाभका उपाय गर्भ, विद्याप्राप्ति, पुत्रलाभ, इन सबोंका अवलोकन करै ॥ ५३ ॥ छठे भावमें मामा, रोग, शत्रु गाय भैंस आदि चौपाये, पराधीनता, तापत्रयसे भय, घाव, इन सबोंका विचार करै, सातवें भावमें स्त्री, व्यापार नष्ट वस्तु विस्मरण होना ॥ ५४ ॥ हरी हुई वस्तुके मार्गका विचार, कलह, यात्रा

आदि, इन सबोंका विचार करना सप्तम भावमें शुभ वा पाप कोई ग्रह विद्यमान होवै तो अशुभ फलका देनेवाला होताहै, तथा आठवें भावमें बहुत कालका धन, हुयेका धन संग्राम शत्रु ॥ ५५ ॥ कोटस्थान (किला आदि) मरना, वस्तुका नष्ट होना, कुटुम्ब, मनकी व्यथा (चिन्ता) इन सबोंका विचार करै, नवम भावमें रमण करना, यात्राका विचार, धर्मसाधन इन सबोंका विचार करै ॥ ५६ ॥ दशमभवनमें मुद्रा (राजमुद्रा), परम पुण्य, राज्य भाग्यवृद्धि, पितृसम्बन्धी विचार करै ग्यारहवें घरमें सबद्रव्योंका प्रयोजन, धान्यका मौल्य, कन्या, मित्र, चौपाये, राजद्रव्य, कुटुम्बविचार, बहुत प्रकारके लाभ होनेका उपाय इन सबोंका चिन्तवन करै ॥ ५७ ॥ बारहवें घरमें शत्रुओंका किया हुआ अवरोध (अटकाव), घनी पीडा, व्यय (खर्च) आदि इन सबोंका विचार करना चाहिये ॥ ५८ ॥

लग्नादिभावा निजनाथयुक्ता दृष्टाश्च तेषां प्रवदन्ति वृद्धिम् ॥ सौम्यैश्चतैः पापखगैर्विनाशं ह्येवं विमिश्राः फलमिश्रदाश्च ॥ ५९ ॥

अर्थ—लग्न आदिक द्वादश भावोंमेंसे जो जो भाव अपने स्वामी शुभग्रह करके युक्त अथवा दृष्टहो, उन भावोंकी वृद्धि कहना चाहिये, और पापग्रह स्वामी करके युक्त वा दृष्टहो तो उस उसभावको विनाश कहना, और लग्नादि भाव स्वामी और ग्रह मिश्रितहों अर्थात् पापग्रह युक्तहो और शुभग्रहकी दृष्टिहो अथवा शुभग्रह युक्तहो और पापग्रह-की दृष्टिहो तो मिश्रित (मिलाहुआ) अर्थात् शुभ और अशुभ फल कहना, शुभग्रह शुभफल देनेवालेहैं और पापग्रह अशुभफल देनेवालेहैं ॥ ५९ ॥

लग्नादिद्वादशभावफल.

तनुपतिर्बलमूर्तियुतः करोत्यतिसुखानि च कान्तिविवर्द्ध-

नम् ॥ भवति मध्यबले किलमध्यताऽधमबलेऽधममेव फ-लन्दिशेत् ॥ ६० ॥ केन्द्रत्रिकोणे तनुपः करोति प्रकृष्ट-सौख्यं विजयाभिवृद्धिम् ॥ षष्ठेष्टऽमेन्त्ये च विलग्ननाथः करोति रोगं मरणं व्ययं च ॥ ६१ ॥

॥ इति तनुभावः ॥

अर्थ—तनुपति (लग्नका स्वामी) बलवान् होकर यदि लग्नमें स्थित होवै, तो वह अत्यन्त सुखी करताहै और कान्तिको बढाताहै, यदि लग्नस्वामी मध्यबलीहो तो मध्यम फल देनेवाला होताहै, और अधम बलीहो तो अधमही फल देताहै ॥ ६० ॥ यदि लग्नका स्वामी केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ स्थानमें स्थितहो तो बहुत सुखी करता और विजयवृद्धि करताहै, तथा यदि लग्नका स्वामी छठे, आठवें, बारहवें स्थानमेंहो तो रोग, मरण, व्यय (खर्च) को करताहै, यह लग्नका फल कहा, इसी प्रकार बुद्धिसे बारहों भावोंका विचार करके पूर्णतया फल कहा जा सकताहै, जैसे लग्नका स्वामी शुभहो तो शुभ फल, अशुभ हो तो अशुभ फल देताहै, इसी प्रकार अन्य भावोंका स्वामी शुभहो तो शुभ, अशुभहो तो अशुभ फल देताहै, पूर्ण बलीहो तो शुभ, मध्यबलीहो तो मध्यम, अधम बलीहो तो अधम फल देताहै. तथा जैसे लग्नस्वामी केन्द्र त्रिकोणमेंहो तो शुभ, और ६।८।१२ हो तो अशुभ, इसी प्रकार अन्यभावोंमें विचारना. जिस जिसभावमें जो जो विचार कहा गयाहै उन सब बातोंका विचार करना ॥ ६१ ॥

॥ यह तनुभावका फल लिखाहै ॥

यद्यपि सूक्ष्म बातको दर्शाय दियाहै तथापि कुछ भाव फल लिखतेहैं ॥

धनभावफल.

जन्मन्यब्दे वित्तभावं प्रपश्येद्वित्ताधीशो वर्षपश्चाधिवीर्यैः॥ द्रव्यप्राप्तिर्वीर्यहीनेऽथ तस्मिन् क्रूराक्रान्तैनकधा वित्त-

नाशः ॥ ६२ ॥ रन्ध्रेवित्ते देवतानाममात्ये पापैर्युक्ते रा-
जदण्डः प्रचण्डः ॥ वित्ते वास्मिन्साधुखेटैःप्रदृष्टे संयुक्ते
वासेव्यमानो नरः स्यात् ॥ ६३ ॥

॥ इति धनभावः ॥

अर्थ–यदि धनभावका स्वामी बली होकर जन्ममें वा वर्षमें धनस्थानको देखै तो धनलाभहो, और वही यदि पापग्रहसे आक्रान्त (घेराहुआ) हो अथवा निर्बलहो तो अनेक प्रकारसे द्रव्यका नाश होवै ॥ ६२ ॥ यदि बृहस्पति दूसरे वा सातवें स्थानमें पापग्रह युक्त होवै तो प्रचण्ड राजदण्डको प्राप्त करै, और यदि धन (दूसरा) स्थान किसी शुभ करके दृष्ट युक्त हो अर्थात् शुभग्रह देखतेहों अथवा शुभग्रह धनस्थानमें हो, तो मनुष्यको शुभफल देनेवाला होताहै अर्थात् धन आदि पदार्थोंसे युक्त करताहै ॥ ६३ ॥

॥ यह धनभावका फल कहा ॥

सहजभावफल.

सहोत्थभावे सहजाधिराजे वर्षाधिराजेन विराजमाने ॥
विलग्नराजेन च संयुतेन सुखं सहोत्थैर तुलम्प्रकल्प्यम्
॥६४॥स्वामिनाच सहजेश्वरेण वा नेक्षितेच सहजे खलैर्युते॥
भ्रातृवर्गपरिदुःखितो नरः क्रूरयुक्त सहजेश्वरेपि वा॥६५॥

॥ इति सहजभावः ॥

अर्थ–यदि सहजाधिराज अर्थात् तीसरे स्थानका स्वामी सहोत्थ भावमें अर्थात् तीसरे घरमें वर्षस्वामी सहित विराजमान हो, और लग्नपतिभी संयुक्त होवै तो भाइयोंसे अतुलसुख जानना ॥ ६४ ॥ और यदि सहज (तीसरे) स्थानपर नतो तीसरे स्थानके स्वामीकी दृष्टिहो और न वर्षेशकी दृष्टिहो और पापग्रह उसमें स्थितहो, तो मनुष्य अपने

भ्रातृवर्गसे दुःखित होवै, अथवा तीसरे घरका स्वामी पापग्रहयुक्तहो तोभी पूर्वोक्त फल जानना ॥ ६५ ॥

॥ यह सहजभावका फल लिखा ॥

सुखभावफल.

सचन्द्रसूर्ये सति तुर्यभावे पापेक्षिते दुःखमुशन्ति पित्रा ॥ भानोस्तथेन्दोर्भवनेर्कसूनुः पित्रा च मात्रा क्रमशो विवादम् ॥६६॥ यद्राशिगो जन्मनियामिनी-शस्तत्स्थश्शनिश्चेद्भयदो जनन्याः ॥ सुखे तुषारां-शुसितौ सपापौ स्याताम्महाक्लेशकरौ च पित्रोः ॥ ६७॥

॥ इति चतुर्थभावः ॥

अर्थ–यदि चन्द्रमासहित सूर्य चतुर्थभावमें हो और पापग्रहकी दृष्टिहो तो पितासे दुःख प्राप्तहोवै ऐसा कहना, और यदि सूर्य तथा चन्द्रमा इन दोनोंमेंसे किसी एकके भवनमें शनैश्चरहो तो पितामातासे विवादहो, अर्थात् यदि सूर्यके घरमें हो तो पितासे, और यदि चन्द्रमा के घरमें हो तो मातासे विवादहोवै ॥ ६६ ॥ जिस राशिपर जन्म स-मयमें चन्द्रमा हो उसी राशिपर यदि वर्षमें शनिहो तो माताको क्लेश होवै, और यदि चतुर्थस्थानमें शुक्र व चन्द्रमा स्थित हो पापग्रह सा-थमें हो तो पितामाता दोनोंको महाक्लेश होवै ॥ ६७ ॥

॥ यह चतुर्थ भावका फल कहा ॥

पंचमभावफल.

बृहस्पतौ वर्षपतौ सुतस्थे लाभेऽथवा वीर्ययुते सुतेभ्यः ॥ सौख्यं कुजे वा रविजेम्बुजेवाप्येवं विलोमात्फलमामन-न्ति ॥ ६८ ॥ यस्मिन् राशौ गीष्पतिर्जन्मकाले वर्षे-राशिस्सोपि चेत्पञ्चमस्थः॥धात्रीपुत्रे तत्र संस्थे बुधे वा

वर्षाधीशे चापि पुत्रोद्भवः स्यात् ॥६९॥ पुत्रक्षेत्राधीश्वरे पुत्रसंस्थे वीर्योपेते पुत्रसौख्यं बहु स्यात् ॥ क्रूराक्रान्तेऽस्तंगते वा सुतानां पीडां गाढां प्रौढविद्या वदन्ति ॥ ७० ॥ यद्राशिगो जन्मनि भानुसूनुस्स एवराशिर्यदि पंचमस्थः ॥ चिन्ता सुतानां विषमे सुतस्थे महीसुते व्यस्तगते सुतार्तिः ॥ ७१ ॥

॥ इति पंचम भावः ॥

अर्थ–यदि बृहस्पति बली होकर वर्षका स्वामी हो और पाचवें अथवा ग्यारहवें स्थानमें वर्तमानहो, तो पुत्रोंसे सुख जानना, और यदि मंगल शनि अथवा चन्द्रमा निर्बली होकर पूर्वोक्त (५।११) स्थानोंमेंसे किसी एकमें हो तो इसके विपरीत फल जानना ॥ ६८ ॥ जन्मकालमें जिसराशिपर बृहस्पतिहो, वही राशि यदि वर्षमें पंचम होवै और उस पंचमभावमें मंगल अथवा बुध वर्षेश होकर पडै तो उस वर्षमें अवश्य पुत्र उत्पन्न होवै ॥ ६९ ॥ यदि पुत्र (पंचम) भावका स्वामी पंचम घरमें हो और बलवान् होवै तो उस वर्षमें पुत्रसुख जानना, और यदि वही पापग्रहोंसे आक्रान्त वा अस्तहो तो पुत्रोंको महाक्लेश होवै, ऐसा विद्वान् (ताजिक वेत्ता) लोग कहतेहैं ॥ ७० ॥ जन्मसमयमें जिसराशिका शनिहो, वही राशि वर्षमें यदि पंचमभावमें हो, तथा विषमराशिस्थ मंगल पंचमहो तो उस वर्षमें पुत्रोंकी चिन्ता होवै, और इससे विपरीतहो अर्थात् समराशिका मंगल पंचमहो तो पुत्रपीड़ा होवै ॥ ७१ ॥

॥ यह पंचमभावका फल कहा ॥

शत्रुभावफल.

विलोमगामी यदि मन्दगामी स्वामी सवर्षेकुरुतेऽत्रदोषम् ॥ शत्रुस्थितेस्मिन्रुधिरज्वरार्तिश्शूलोद्भवश्चापि वि-

चिन्तनीयः ॥ ७२ ॥ एवंसुरेज्येचकुजेर्कजेर्के वातातिपित्ताक्षिगदैःप्रपीड़ा ॥ शुक्रेऽव्ययेमृत्युसमानरोगःश्लेष्मातिबाधाबहुधारिपुस्थे ॥ ७३ ॥ वर्षाधिराजेशशिजे रिपुस्थे पापार्दितेवातगदप्रकोपः ॥ तथैवचन्द्रेरिपुरंध्रसंस्थे श्लेष्मप्रकोपोमरणेनतुल्यः ॥ ७४ ॥ भूनन्दनो जन्मनिभानुजोवा राशौस्थितौयत्रसएवराशिः ॥ वर्षेतनुस्थश्शनिना प्रदृष्टः शीतोष्णयक्ष्मान्वितपित्तबाधा ॥ ॥ ७५ ॥ बृहस्पतौपापयुतेऽष्टमस्थे साब्जेकुजेलग्नगतेसमूर्च्छा॥ तन्द्राभवेद्वाऽथकलत्रसंस्थे सिंहीसुतेऽनन्तगदंवदन्ति ॥ ७६ ॥ योदुष्टखेटोजनिकण्टकस्थो वर्षेविलग्नेस चनोशुभाय ॥ मुन्थाकलत्रेचरसातलेच करोतिशूलंशनिदृष्टदेहा ॥ ७७ ॥ सुरासुरेज्यास्पदगेमहीजे चास्तंगतेशीतलताक्षिरोगः ॥ बुधेन्दुयुक्तेसतिकंठगण्डं स्फोटादिबाधा बहुधावबोध्या ॥ ७८ ॥

॥ इति शत्रुभावः ॥

अर्थ–यदि मन्दगामी (शनि) विलोमगामी (वक्री) होकर वर्षपतिहो, तो वह उस वर्षमें रोग उत्पन्न करताहै, परंतु यहां शनि छठे स्थानमें स्थितहोवो रक्तजनित ज्वरकी पीड़ा और शूलरोगकोभी, उत्पन्न करताहै, ऐसा जानना ॥ ७२ ॥ ऐसेही यदि बृहस्पति, मंगल, शनि सूर्य वक्री होकर छठे स्थानमें स्थितहोवै तो वात पित्त विकारसे नेत्र पीडा होवै और यदि शुक्र बारहवें होतो मृत्युके समान रोगहो, और छठे स्थानमें स्थितहो तो बहुधा श्लेष्मविकारसे अधिक पीड़ाहोवै ॥७३॥ यदि वर्षका स्वामी बुध पापग्रहयुक्त छठे स्थानमें पड़ै तो वात रोगका कोप होवै,

ऐसेही वर्षपति चन्द्रमा पापग्रहयुक्त छठे स्थानमें हो तो श्लेष्माके कोपसे मरणके तुल्य (क्लेश) होवै ॥ ७४ ॥ जन्मसमय मंगल अथवा शनि जिस राशिपर स्थितहो, वही राशि वर्षमें वर्षलग्न होवै. उसपर चन्द्रमाकी दृष्टि होतो शीत (सर्दी) उष्ण (गर्मी) राजयक्ष्मासहित पित्त विकारसे पीड़ा होवै, ॥ ७५ ॥ यदि बृहस्पति पापग्रह सहित आठवें स्थानमें स्थितहो, और चन्द्रयुक्त मंगल लग्नमें हो तो मूर्च्छा व तन्द्रा रोग उत्पन्न होवै. परन्तु यदि सप्तमस्थानमें होतो अनन्त रोग (महाक्लेश) होवै ॥ ७६ ॥ जन्मसमयमें जो कोई पापग्रह कंटक अर्थात् केन्द्र १।४।७।१० में स्थितहो और वह वर्षसमय लग्नमें होतो अशुभ जानना, और यदि मुंथा सातवें वा चौथे स्थानमें हो उसपर शनिकी दृष्टिहो तो शूलरोग उत्पन्न करताहै ॥७७॥ यदि बृहस्पति अथवा शुक्रके घरमें मंगलहो और अस्तंगत होवै, तो शीत विकारसे नेत्ररोग होजावै, और यदि बुध चन्द्रयुक्तहो तो गलगण्ड और फोड़ेकी बाधा बहुधा जानना चाहिये ॥ ७८ ॥

॥ यह छटे भावका फल कहा ॥

सप्तमभावफल.

वर्षाऽधिराजेभृगुजेमनोज्ञे जायाविलासादिसुखानिनूनम् ॥ विशेषतोजीवदशाधिकारीक्ष्माजेक्षणात्प्रीतिरलम्मिथःस्यात् ॥ ७९ ॥ बालाविलासान्बुधदृग्युतिभ्यां जारंजरत्याशनियोगदृग्भ्याम् ॥ वागीशयोगेनलसद्विभूषां नवीनयोषांलभतेमनुष्यः ॥१८०॥ प्रसूतिलग्नाधिपतिर्बलीयान्वर्षेकलत्रेचकलत्रसौख्यम् ॥ लग्नेविलग्नेभृगुजेविवाहो वीर्यान्वितेवाऽस्तपतेतदीये ॥ ८१ ॥ चेदिन्दुसूनुर्भृगुनन्दनस्य स्थानंगतस्त्रीसुखदोनिरुक्तः ॥

कलत्रनाथोबलवान्कलत्रेकलत्रकेलिंविपुलांकरोति॥
॥ ८२ ॥ भूनन्दनश्चेद्भृगुनन्दनस्यस्थानंगतोऽस्तेमुथहा-
खलोवा॥ खलस्यदृष्टौहिकलत्रचिन्ताभवेन्नितान्तंहि
सुतादिकानाम्॥ ८३ ॥

॥ इति सप्तमभावः ॥

अर्थ—जो शुक्र बली होकर वर्षका स्वामीहो और सातवें घरमें पड़े, तो स्त्रीविलास आदि सुख अवश्य होवै, और जो कदाचित् शुक्र बृहस्पतिके हद्दामें हो उसपर मंगलकी दृष्टीहो तो दोनोंमें परस्पर बहुत प्रीति बढै ॥ ७९ ॥ और यदि पूर्वोक्त शुक्रपर बुधकी दृष्टिहो वा बुध-युक्तहो तो स्त्री विलास सुख होवै, और यदि शनि युक्तहो अथवा शनिकी दृष्टि हो तो बूढी स्त्रिसे भोग विलास होवै, और यदि बृह-स्पति युक्त होवै तो आभूषणयुक्त सुन्दर नवीन स्त्री मनुष्यको प्राप्त होवै ॥ १८० ॥ यदि जन्मलग्नका स्वामी बलवान् होकर वर्षलग्नसे सातवें स्थानमें होतो स्त्रीसुख प्राप्त होवै, और यदि शुक्र बली होकर उसी लग्नमें स्थितहो अथवा सातवें घरका स्वामी होकर वर्षलग्नमें पड़े तो विवाह होवै ॥ ८१ ॥ तथा यदि बुध शुक्रके घरमें हो तो स्त्रीको सुख देनेवाला कहना, और यदि सातवें स्थानका स्वामी बली होकर सातवें स्थानमें स्थितहो तो स्त्रीको बहुत सुखी करताहै ॥ ८२ ॥ तथा यदि भूनन्दन (मंगल) शुक्रके घरमें पड़े और अस्त (सप्तम) भावमें हो, और मुंथा अथवा कोई पापग्रहहो और पापग्रहकी दृष्टि होतो पुत्र आदि सन्तति और स्त्रीकी चिन्ता होवै ॥ ८३ ॥

यह सप्तमभावका फल कहा ॥

अष्टमभावफल.

भौमेसमास्वामिनिहीनवीर्ये कुर्याद्विघातंशशिभेऽग्निभी-
तिम् ॥ नृयुग्मगेचौरनरेन्द्रबाधा भौमेऽष्टमेचन्द्रयुतेप्य-

रिष्टम् ॥ ८४ ॥ कुजहिमांशुजयुक्तदिवाकरो मृतिकरो मृतिगोविषयान्तरे ॥ रविसुतेदशमोपगतेतथा ज्वलनतोऽनलतोऽपिभयंभवेत्॥८५॥रवियुतेकुसुतेदशमस्थिते भवतिवाहनतःपतनंविधौ ॥ कुजपदेनृपतोऽसुखमर्कजे बलयुतेम्बरगेभयमस्त्रतः ॥ ८६ ॥ जननिधनभावेदेवदेवाधिदेवास्त्वधिकृतिपरिहीनोवादखेदप्रदस्यात् ॥ यदिदनुजपुरोधावीक्षितन्तत्तदानींजनयतिविजयाप्तिंक ष्टतोदुष्टवर्गात् ॥ ८७ ॥ वर्षपेकुजयुतेरणभीतिःप्रान्त्यसद्मनिचभूमितनूजे ॥ वाग्विवादइननैधनास्तगे गोत्रशत्रुकलहःप्रबलस्स्यात् ॥ ८८ ॥

॥ इत्यष्टमभावः ॥

अर्थ–यदि बलहीन मंगल वर्षका स्वामी हो तो क्लेश उत्पन्नकरै, चन्द्रमाकी राशिमें होतो अग्निसे भयदेवै, मिथुन राशिमें होतो चौर और राजबाधा हो, और यदि मंगल आठवें चन्द्रमासहित स्थितहो तोभी अरिष्ट जानना ॥ ८४ ॥ यदि मंगल बुधसहित सूर्य आठवें स्थानमें हो तो अपनी दशामें मृत्यु करै, तथा शनैश्चर दशम स्थानमें हो तो अग्निप्रकोप, और वातविकारसेभी भय होवै ॥ ८५ ॥ यदि सूर्ययुक्त मंगल दशम स्थानमें हो तो उसकी दशामें वाहनसे गिरै, और यदि मंगलके स्थानमें शनि पडै तो राजासे दुःख मिलै, और यदि शनि बली होकर दशम स्थानमें हो तो हथियारसे भय होवै ॥ ८६ ॥ यदि जन्मसे आठवें स्थानमें बृहस्पतिहो, और अपने हद्दामें नहो तो वाद और खेदको देवै, तथा यदि शुक्रकी दृष्टिमें हो तो दुष्टवर्गोंके कष्टसे विजयप्राप्ति होवे ॥ ८७ ॥ यदि वर्षका स्वामी मंगल सहित हो तो रणसे भयहोवै, और बारहवें भावमें स्थित मंगलकाभी यही फलहै और

यदि आठवें वा सातवें स्थानमें सूर्य होतो वाग्विवाद (वातचीत) और गोत्रमें व शत्रुमें बहुत कलह होवै ॥ ८८ ॥

॥ यह आठवें भावका फल कहा ॥

नवमभावफल.

वर्षस्वामी भूमिपश्चाथसौम्यो धर्मेसंस्थोवातृतीयेबलीयान् ॥ भागीदेवाभीष्टसिद्धिश्चलंयत्कार्यं स्तब्धंबुद्धिमद्भिर्विचार्यम् ॥ ८९ ॥ राज्येऽनुजेवाऽवनिजेऽब्दराजे सत्खेचरैर्युक्तनिरीक्षमाणे ॥ गुणःप्रयाणेऽब्दपतौप्रयुक्ते धर्मत्रिगेऽर्के गमनोद्गमस्स्यात् ॥ ९० ॥ वीर्योपेतेपुण्यगेविक्रमेवा वर्षाधीशेभार्गवेमार्गसौख्यम् ॥ सौम्येप्येवं तीर्थयानेऽभिमानो वीर्यन्यूनेदुष्टयानन्निरुक्तम् ॥ ९१ ॥ तनुपनवमयोगेस्यादकस्मात्प्रयाणं सुकृतकृतनिवासेवाकूपतौदूरयात्रा ॥ नभवतितनुजानांशोभनंभानुसूनौ नवमभवनगामिन्यामनन्तीतिसन्तः ॥ ९२ ॥ भौमेसमास्वामिनिकेन्द्रसंस्थेदूरेस्थितिःस्याद्भ्रमणेननूनम् ॥ उदारसारेनवमेश्वरेवा पुण्याधिसंस्थेगमनंसुखेन ॥ ९३ ॥

॥ इति नवमभावफलम् ॥

अर्थ—यदि मंगल अथवा बुध वर्षका स्वामी होकर धर्म (नवम) स्थानमें वा बली होकर तीसरे स्थानमें स्थितहो तो पहलेहीसे कार्यकी सिद्धि कहना, और जो कार्य चलहो तो उस कार्यको पुष्ट समझना. इस प्रकार बुद्धिवानोंको विचारना योग्यहै ॥ ८९ ॥ यदि मंगल वर्षपति होकर राज्य (दशम) स्थान अथवा अनुज (तृतीय) स्थानमें हो और

शुभग्रहों करके युक्तहो, वा देखा जाताहो तो यात्राका विचार होवै, और वर्षपतिसहित सूर्य नवम व तृतीय स्थानमें स्थितहो तो अवश्य यात्रा होवै ॥ ९० ॥ यदि बलवान् शुक्र वर्षका स्वामी होकर पुण्य (नवम) स्थान वा त्रिक्रम (तृतीय) स्थानमें स्थितहो तो मार्गसुख प्राप्तहोवै, और यदिकोईभी शुभ ग्रह इस प्रकार होतो तीर्थयात्रा विषयक अभिमानहो, यदि बलहीन होतो दुष्ट यात्रा कहना ॥९१॥ यदि नवमस्थान स्वामी और लग्न स्वामीका योगहो अर्थात् दोनों एक साथहो तो अकस्मात् यात्रा करना पड़े, और यदि सुकृत (नवम) स्थानमें बृहस्पति का निवासहो तो दूर जानापडै, और यदि शनि नवम भवनमें प्राप्तहो तो पुत्रोंको शुभ नहीं होताहै ऐसा श्रेष्ठ पण्डित कहतेहैं ॥ ९२ ॥ यदि मंगल वर्षपति होकर केन्द्र १।४।७।१० में स्थितहो तो दूर देशमें भ्रमण करना पडे, और वहीं स्थिति होवै, अथवा नवमभावका स्वामी बली होकर पुण्य (नवम) स्थानमें स्थितहो तो सुखपूर्वक यात्रा होवै ॥ ९३ ॥

॥ यह नवमभावका फल हुआ ॥

दशमभावफल.

वर्षेशेदशमस्थितेबलयुते राज्याप्तिहर्षोदयः तस्माच्चापरकेन्द्रगे शुभयुतेस्थानान्तराप्तिर्नृणाम् ॥ सूर्येतुर्यगतेतुवीर्यसहिते पूर्वाधिकारागमः कामेलाभगतेऽथवाभवपते स्सञ्जायतेगौरवम्॥९४॥सिंहेप्रसूतौ समुदारसारोदिवाकरोराज्यकरोनराणाम्॥ नीचस्थितः पापयुतः खयातः पृथ्वीपतेर्बन्धनमातनोति ॥९५॥ गगनभवनसंस्थामुन्थहावर्षकाले लिखनपठनलाभंसत्त्वयुक्ताकरोति ॥

निजपतिसहितासारन्ध्रशत्रुव्ययस्थावितरतिबहुविघ्नं प्राप्तिकालेनराणाम् ॥ ९६ ॥

॥ इति दशमभावः ॥

अर्थ–यदि वर्षका स्वामी बली होकर दशमभावमें होतो राज्य-प्राप्ति और आनन्दवृद्धि होवै, और यदि अपरकेन्द्र १।४।७ में हो और शुभग्रह साथमेंहो तो स्थानान्तरकी प्राप्तिहोवै, तथा यदि सूर्य बली होकर चतुर्थ स्थानमें होतो पहलेका छुटा हुआ अधिकार प्राप्तहोवै, और यदि ग्यारहवें स्थानमें होवो राजासे मान और बढाई मिलै ॥ ॥ ९४ ॥ यदि वर्षमें पांचवीं लग्न सिंहहो और उसमें सूर्य बली होकर स्थितहो तो मनुष्यको राज्यपदवी देवै, और यदि नीचराशिस्थित (तुलागत) सूर्य पापग्रहयुक्त दशम स्थानमें पडै तो राजासे बन्धनका विस्तार करताहै ॥ ९५ ॥ यदि वर्षकालमें मुंथहा बली होकर दशमस्थानमें विराजमानहो तो लिखने पढ़नेसे लाभ होवै, और यदि वही मुंथा अपने स्वामीकेसाथ आठवें, छटे, बारहवें स्थानमेंसे किसीएक स्थानमें हो तो कार्यप्राप्तिके समय बहुत विघ्न करताहै ॥ ९६ ॥

॥ यह दशमभावका फल हुआ ॥

लाभभावफल.

खलैर्विहीना बलिनश्शुभाख्या लाभालयेलाभकरा-भवन्ति ॥ हानिस्सपापास्तगलाभनाथे दण्डस्तथाचि-त्रशिखण्डिसूनौ ॥ ९७ ॥ इलासुतःस्थानगतः कला-वान् स्थलान्तरेऽसौसकलार्थदःस्यात् ॥ लाभस्थितो-लाभपतिर्नितान्तंविद्याप्रसंगेनकरोतिलाभम् ॥ ९८ ॥

॥ इति लाभभावः ॥

अर्थ–यदि पापग्रहोंसे रहित शुभ ग्रह लाभ ११ स्थानमें हो तो वे लाभकारक होतेहैं, और यदि लाभस्थानका स्वामी पापग्रहयुक्त अस्त-

गत होतो हानि तथा केतु हो तो दुःख जानना ॥९७॥ यदि मंगलके घरमें चन्द्रमा पडै तो वह दूसरे स्थानसे सम्पूर्ण कामना देनेवाला होताहै, और जो लाभस्थानका स्वामी लाभस्थानमें स्थितहो तो वह विद्याप्रसंगसे लाभ करनेवाला जानना ॥ ९८ ॥

॥ यह ग्यारहवें भावका संक्षेपफल कहा ॥

व्ययभावफल.

मनुष्यराशौव्ययभावसंस्थे वर्षाधिराजेभृगुजेक्षितेस्यात्॥ भृत्त्याश्रितानांचचतुष्पदस्थे चतुष्पदानांविबलेविशेषात् ॥ ९९ ॥ व्ययालयेवानिधनालये वा बलीसमेशोजलजेशसूनुः ॥ जलाशयंसन्निलयंद्रुमाणमारोपणांसौम्ययुतः करोति ॥ २०० ॥ तडागकूपोत्तमवापिकानामुत्पादनंवैसुरमन्दिराणाम् ॥ आरोपणंचारुमहीरुहाणां वाचस्पतौ वर्षपतौव्ययस्थे ॥ १ ॥ गगनवेश्मनिभानुसुतान्वितेऽवनिसुतेऽब्दपतौपशुनाशनम् ॥ द्विषिचतुष्पदराशिगतेरवावनुचरैस्सहितोबहुदुःखदः॥२॥

॥ इति व्ययभाव फलम् ॥

अर्थ–यदि व्यय १२ भावमें मनुष्य राशिहो उसपर वर्षेश शुक्रकी दृष्टिहो तो अपने अश्रित सेवकोंको क्लेश होवै, और यदि चतुष्पद राशि व्ययभावमें हो तौ (गाय, घोडा आदि) चौपायोंको क्लेश होवै ॥ ९९ ॥ जो वर्षेश शनैश्चर बली होकर बुधके साथहो और वर्षलग्नसे बारहवें अथवा आठवें स्थानमें होतो जलाशय (वापी, कूप, तडाग आदि) सुन्दरस्थान (उत्तम घर) वाटिका आदि बनाने और आरोपण करनेमें उत्साह बढै ॥ २०० ॥ यदि बृहस्पति वर्षेश होकर बारहवें स्थानमें हो तो तडाग, उत्तम कूप, बाउली, देवमन्दिर आदि

बनवाने और सुंदर वृक्ष लगानेका उत्साह होवै ॥ १ ॥ जो भानुसुत (शनैश्चर) संयुक्त मंगल वर्षेश होकर दशमस्थानमें पड़े तो पशुओंका नाशहो और यदि किसी चतुष्पद राशिपर स्थित सूर्य छठे स्थानमेंहो तो सेवकों सहित उसको बहुत दुःख होवै ॥ २ ॥

॥ यह बारहवें भावका फल कहा ॥

भावफलसमय.

प्राचांविचाराऽनुमतंनितान्तं मयोदितं द्वादशभावजातम् ॥
फलं बलंवीक्ष्यनभश्चराणां तद्योजनीयंहिदशासुतेषाम् ॥३॥

अर्थ—सम्पूर्ण प्राचीन आचार्योंका मत भली भांति विचार कर मैंने यह बारहों भावोंका संक्षेपफल वर्णन किया. इसमें जो जो फल जिन जिन ग्रहोंसे होनेकी संभावनाहो, उन उन ग्रहोंका बल देखकर उन उनकी दशामें वह वह फल कहना चाहिये ॥ ३ ॥

ग्रहभावफल.

इतीरयित्वाखिलभावजातफलानिसत्कोमल-
वाग्विलासैः ॥ वक्ष्येऽधुनाविष्णुपदास्पदा-
नां पृथक् पृथग्भावफलानिनूनम् ॥ ४ ॥

अर्थ—इस प्रकार कोमल मधुर वचनोंसे संम्पूर्ण भावजनित फल कहकर, अब पृथक् पृथक् भावगत ग्रहोंका फल वर्णन करताहूं ॥४॥

सूर्यभावफल.

स्याच्छिरोवदनलोचनपीडा यातिकान्ति-
तनुतामपिकान्ता ॥ चिन्तयातितनुतातनुरु-
चैर्हायने दिनपतौतनुसंस्थे ॥ ५ ॥

अर्थ-वर्षमें यदि सूर्य लग्नमें स्थित हो तो शिर, मुख, नेत्रमें पीडाहो, कान्ति जाती रहै और स्त्रीभी दुःखितहो, चिन्ताके कारण शरीर अति दुर्बल होजावै ॥ ५ ॥

चौरवैरिनिकराच्चनरेशादग्निनाभवतिभीतिरतीव ॥
स्यात्कुटुम्बकलहःकिलनित्यंवत्सरेदिनकरेधनसंस्थे ॥६॥

अर्थ-यदि वर्षमें सूर्य धन (द्वतीय) स्थानमें स्थतहो तो चौर, शत्रुगण, राजा और अग्निसे वहुत भय होवै और कुटुम्बमें नित्य कलह होवै ॥ ६ ॥

राजमानकनकागमनाद्यैर्हृष्टता च परि पुष्टि-
रपीह ॥ कार्यसाधनमथो विजायते भानुमा-
न्ननुयदाऽनुजसंस्थः ॥ ७ ॥

अर्थ-जो सूर्य अनुज (तृतीय) स्थानमें स्थितहो तो राजासे मान, धनका आगम, शरीरसुख, पुष्टता और कार्यसिद्धि होवै ॥ ७ ॥

भूमिपालकुलभीतिकृशत्त्वं वैरिभावमुपयाति
सुहृद्भिः ॥ वाहनायचयताश्चनितान्तं भूतले
कमलकाननकान्ते ॥ ८ ॥

अर्थ-जो कमलवनस्वामी (सूर्य) भूतल (चतुर्थ) भावमें विराज-मानहो तो राजकुलसे भयहो, देह दुर्बल होजावै, मित्रसे वैरभाव हो, और वाहन (सवारी) से वहुत भय प्राप्त होवै ॥ ८ ॥

पुत्रमित्रपरिवारकलत्रोत्पन्नपीडनविहीनसुखः
स्यात् ॥ मानवोमतिधनैः परिशून्यः पद्म-
काननपतौ सुतसंस्थे ॥ ९ ॥

अर्थ-यदि पद्मकाननपति (सूर्य) सुत (पंचम) भावमें स्थितहो तो पुत्र, मित्र, परिवार (कुटुम्ब) स्त्री, इनकेद्वारा क्लेश उत्पन्न होवै

और सुखसे रहितहो, तथा वह मनुष्य बुद्धि और धनसे हीन हो-जावै ॥ ९ ॥

वैभवंहिलभतेक्षितिपालात्कामिनीविपुलके
लिविलासम् ॥ शत्रुवर्गविजयोधनवृद्धिर्वैरि-
मन्दिरगतस्सवितऽब्दे ॥ २१० ॥

अर्थ—यदि वर्षमें सूर्य वैरिमन्दिर (छठेघर) मेंहो तो राजासे ऐ-श्वर्य प्राप्तहो, स्त्रीसे भोगविलासादि सुख, शत्रुओंसे विजय और धन-को वृद्धिहोवै ॥ २१० ॥

बस्तिलोचनशिरः परिपीड़ा यानमागमनमत्र
विचित्रम् ॥ हायनेदिनपतौमदसंस्थे कामिनी
जनमनःपरितापः ॥ ११ ॥

अर्थ—यदि सूर्य सप्तमस्थानमें हो तो पेडू, नेत्र, शिर, इनमें पीडाहो और विचित्र यान (अच्छीसवारी) प्राप्त होवै, तथा स्त्रियोंका मन दुःखित रहै ॥ ११ ॥

पित्तसम्भवविकारशरीरे नेत्ररुक्परिभवेनचदुःखम् ॥
भूमिपालगरलज्वलनाद्यैर्व्यालतोऽपिभयमष्टमगेऽर्के॥१२॥

अर्थ—यदि सूर्य आठवें स्थानमें प्राप्तहो तो शरीरमें पित्तजनित विकार हो, नेत्ररोगहो, परिभव (अनादर) से दुःखहो और राजा, विष, अग्नि व सर्पसेभी भय होवै ॥ १२ ॥

धर्मकर्मविगताभिरुचित्वं चिन्तयाचविमतित्त्वमतीव ॥
संस्थितेनवमधाम्निचमित्रे मित्रपुत्रककलत्ररतिस्स्यात्॥१३॥

अर्थ—यदि मित्र (सूर्य) नवमधाममें स्थितहो तो धर्मकर्मसे रुचि-जाती रहै, अर्थात् बुद्धि धर्म कर्मसे विरुद्ध होजावै, चिन्ताके कारण मति महामन्द होजावै, और मित्र पुत्र व स्त्रीमें लड़ाई होवै ॥ १३ ॥

राजगौरवयशस्सुखवित्तन्नित्त्यमेवचयतामुपयाति ॥
कार्यसिद्धिरपिबुद्धिविधानादम्बरेऽम्बरमणौरमणीये ॥१४॥

अर्थ–यदि अम्बरमणि (सूर्य) अम्बर (दशम) भवनमें रमण करता (स्थित) हो तो राजासे मान, बडाई, यश, सुख और धन इनकी नित्यही वृद्धि होवै और वृद्धिके प्रभावसे सम्पूर्ण कार्य सिद्धिहोवै ॥ १४ ॥

दद्यात्सम्यग्भाग्यमारोग्यपूर्वं हर्षोत्कर्षंपौरुषंशत्रुनाशम् ॥
क्षोणीपालात्प्राप्तिमर्थागमञ्च प्राप्तिप्राप्तस्सप्तसप्तिर्द्धनाप्तिम् ॥१५

अर्थ–यदि सप्तसप्ति (सूर्य) प्राप्ति (लाभ) स्थानमें प्राप्तहोवे भाग्यका उदय, आरोग्यता, हर्ष, उत्साह, पौरुष, शत्रुनाश, राजासे प्राप्ति और कामनाओंकी सिद्धि तथा धनलाभ अवश्य होवै ॥ १५ ॥

वैरम्मित्रैर्नेत्रपीडातिगाढां पित्तोत्पत्तिःस्या
द्विपत्तिर्धनस्य ॥ नप्राशस्त्यस्यापिवाप्तिःकदा-
चिद्वर्षावेशेद्वादशे द्वादशात्मा ॥ १६ ॥

॥ इति सूर्यभावफलानि ॥

अर्थ–यदि वर्षप्रवेशसमय द्वादशात्मा (सूर्य) द्वादशस्थानमें पडै तो मित्रोंसे वैर, नेत्रपीडा और गाढ पित्तकी उत्पत्ति होवै तथा धनका नाशहो, प्रशंसासे रहित होजावै कि जिससे दुःखही दुःख जानपडै ॥१६॥

॥ यह सूर्यका भावफल लिखा ॥

चंद्रभावफल.

किरणपूरणताहियथायथा भवतिशीतकरेशुभतातथा ॥
अथतथैवमयूखविहीनता हिमकरेऽतितरांपरिदुष्टता ॥ १७ ॥

अर्थ–चन्द्रमा जैसे जैसे अंशोंमें बढता जाताहै वैसे वैसे शुभ फल

करताहै, पूर्ण शुभ फल करताहै, और जैसे जैसे क्षीण होताहै, वैसेही दुष्ट फल करताहै, ऐसा सर्वत्र जानना ॥ १७ ॥

श्वासाऽरिबाधाबहुधानराणां तथाविकारन्नयनाननेषु ॥
द्रव्यागमंचान्यतमंकृशत्त्वं होरागतश्शीतकरः करोति ॥१८॥

अर्थ–जो चन्द्रमा लग्नमें होतो श्वासरोग, प्रायः शत्रुबाधा तथा नेत्र व मुखमें विकार उत्पन्न करताहै द्रव्यका आगम और शरीरमें दुर्बलताभी करताहै ॥ १८ ॥

स्वजनगौरवतांविमलामतिः प्रतिदिनंसितवस्तुसमागमम् ॥
धनगतःकुरुतेधनसंचयं हिमकरोनकरोतिरिपूदयम् ॥ १९ ॥

अर्थ–यदि हिमकर (चन्द्रमा) धन भावमें पडै तो आत्मीयजनोंको बडाई मिलै, मतिनिर्मलहो, प्रतिदिन श्वेतवस्तुकी प्राप्तिहो, धनका संचय और शत्रुका नाशहोवै ॥ १९ ॥

द्रव्यलाभविविधोत्सवपूर्वं गर्वितारिपरिहारविभुत्वम् ॥
धर्मकर्मणिरतिंसहजस्थः सम्प्रयच्छतिनृणांहरिणाङ्कः ॥२२०॥

अर्थ–यदि चन्द्रमा तीसरे स्थानमें होतो द्रव्यलाभ, विविध प्रकारके उत्सव, अहंकारी शत्रुका नाश, अधिकारप्राप्ति, धर्मकर्ममें प्रीतिहोवै ॥ २२० ॥

तुरगयुवतिसौख्यं गोमहिष्यादितोवा निजजनमथलाभंक्षेत्रपुत्रोन्नतिंच ॥ जनयतिमनुजानां नूनमानन्दपूरं हरिणकिरणमाली भूतलस्थानशाली ॥ २१ ॥

अर्थ–यदि हरिणकिरणमाली (चन्द्रमा) भूतल (चतुर्थ) स्थानमें हो, तो अश्व (घोडाके सवारीका) सुख, स्त्रीसुख, गौ

व भैंसोंसे (दुग्ध आदि पदार्थ) सुख, बन्धुलाभ, क्षेत्र और पुत्रकी वृद्धि तथा नाना प्रकारसे आनन्द उत्पन्न होवै ॥ २१ ॥

भूमिपालकुलतोविपुलाप्तिं कामिनीविलसि-
तानिनितान्तम् ॥ बुद्धिगौरवजयोत्सववृद्धिं स-
म्प्रयच्छतिसुतेऽमृतरश्मिः ॥ २२ ॥

अर्थ-यदि अमृतरश्मि (चन्द्रमा) सुत (पंचम) स्थानमें होतो राजकुलसे बहुत लाभहो और नितान्त स्त्री विलाससुख प्राप्तहो, तथा वृद्धिगौरव, जय, उत्सवको वृद्धि होवै ॥ २२ ॥

श्लेष्मवातजनितांमतिबाधां बान्धवैश्चविदधा-
तिविवादम् ॥ तस्कराश्चनृपतेर्दृढपीडां वैरिवेश्म-
निनिशापतिरेषः ॥ २३ ॥

अर्थ-यदि निशापति (चन्द्रमा) वैरि (षष्ठ) भवनमेंहो, तो श्लेष्मा व वातकी अति बाधाहो, और बान्धवजनोंसे विवाद होवै, चौर और राजासे बहुत भय होवै ॥ २३ ॥

राजमानजनगौरवयुक्तं विक्रयक्रयकलत्रजसौख्यम् ॥
द्रव्यलाभसुलभामपिलक्ष्मीमिन्दुरिन्दुवदनासदनस्थः ॥ २४ ॥

अर्थ-यदि चन्द्रमा इन्दुवदना (सप्तम) स्थानमें हो तो राजासे मान गौरव प्राप्तहो और विक्रय (बेचने) क्रय (खरीदने) से लाभहो, स्त्रीसे सुखहो, द्रव्यका लाभहो तथा लक्ष्मी थोडेही परिश्रमसे प्राप्त होवै ॥ २४ ॥

नानाऽनर्थोऽर्थव्ययोव्यर्थएव स्वल्पाऽऽनन्दोम
न्दबुद्धित्त्वमत्र ॥ गात्रेकार्श्यन्नेत्ररुक्श्लेष्मबा-
धारन्ध्रेचन्द्रेप्रोक्तमेतन्मुनीन्द्रैः ॥ २५ ॥

अर्थ-यदि चन्द्रमा रन्ध्र (अष्टम) स्थानमें हो तो नानाप्रकारके

अनर्थहो, व्यर्थ धनहानिहो, आनन्द थोडी मिलै, बुद्धि मन्द होजावै तथा शरीरमें दुर्बलता, नेत्रोंमें रोग, श्लेष्माको बाधा होवै, यह श्रेष्ठ मुनियोंने कहाहै ॥ २५ ॥

सुकृतवृद्धिसमृद्धिविवर्द्धनं ननुधनागमनादिकमा
दिशेत् ॥ कुमुदकाननजीवनदानदे नवमधा-
मसमागममागते ॥ २६ ॥

अर्थ-कमलवनको जीवनदान देनेवाला चन्द्रमा यदि नवम धाममें आकर प्राप्तहो तो सत्कर्ममें बुद्धिकी वृद्धिहो, धन आदिकका लाभ होवै ॥ २६ ॥

लाभोभवेद्भूमिपतेस्सकाशात्कलत्रमित्रान्वितमत्रसौख्यम् ॥
विपक्षपक्षक्षयदक्षएव वर्षेहिमांशुर्दशमाश्रितश्चेत् ॥ २७ ॥

अर्थ-वर्षमें यदि हिमांशु (चन्द्रमा) दशम स्थानमेंहो तो राजाके आश्रयसे (धनादि) लाभ होवै, मित्रसहित स्त्रीद्वारा सुख होवै और वह शत्रु पक्षके क्षय करनेको दक्ष होजावै ॥ २७ ॥

श्वेतवस्तुकृतलब्धिमनूनां सन्मतिंवितनुतेतनुनि-
त्यम् ॥ कुंजराम्बरतुरङ्गमलाभं लाभवेश्मनि
निशाकरएषः ॥ २८ ॥

अर्थ-यदि निशाकर (चन्द्रमा) लाभ (एकादश) भवनमें विराजमानहो तो श्वेत वस्तु (मोती आदि पदार्थ) का लाभहो, बुद्धिकी नित्य वृद्धिहो और हाथी, वस्त्र, घोड़ा आदिककी प्राप्ति होवै ॥२८॥

नेत्ररुग्रिपुभयंधनव्ययं नित्यमेवकलहन्निजा-
लये ॥ चञ्चलंकिलमनस्समादिशेद्द्वादशेशशि-
निवेश्मनिस्थिते ॥ २९ ॥

॥ इतिचन्द्रभावफलानि ॥

अर्थ-जो चन्द्रमा बारहवें स्थानमें स्थित होतो नेत्ररोग, शत्रुभय, धनहानि और घरमें नित्यही कलह होवै तथा चित्त चंचलरहै ॥२९॥

॥ यह चन्द्रमाका भावफल कहा ॥

भौमभावफल.

मौलेवक्त्रेनेत्रयोश्चापिबाधा हानिर्नूनंस्वालये वाक्कलिःस्यात् ॥ रक्तात्पित्ताद्देहिनोदेहकार्श्यं धात्रीपुत्रोमूर्तिवर्तीयदाहि ॥ ३० ॥

अर्थ-जो धात्रीपुत्र (मंगल) मूर्ति (लग्न) में हो तो शिर, मुख और नेत्रमें पीडाहो, हानिहो घरमें कलह हो और रक्त व पित्तके विकारसे मनुष्यका शरीर दुर्बल होजावै ॥ ३० ॥

भूपालचौराऽनलभीतिरुग्रा व्यग्रामनोवृत्तिरपीष्टकृष्टा ॥ दृशोश्चबाधाबहुधानराणांमुक्तंपुराणैर्धरणीसुतेऽर्थे ॥ ३१ ॥

अर्थ-जो धरणीसुत (मंगल) अर्थ (द्वितीय) स्थानमें हो तो राजा, चौर, और अग्निसे बहुत भय होवै, चित्त चंचलरहे, कोईभी मनोरथ पूर्णनहो, नेत्रोंमें बहुतपीडा होवै ॥ ३१ ॥

मानंधनंशत्रुविनाशनंच महोत्सवारोग्यनृपप्रसादम् ॥ वदेन्मनीषीविशदंविशेषात्पृथ्वीतनूजे सहजेनराणाम् ॥ ३२ ॥

अर्थ-यहि पृथ्वीतनूज (मंगल) सहज (तृतीय) स्थानमें पडै तो मान बढै, धनलाभहो, शत्रुका नाशहो, कोई बडा उत्सवहो, शरीर आरोग्यरहे, राजा (अपनास्वामी) प्रसन्नहो, बुद्धिवान् पण्डित इस प्रकार भलीभांति फल कहै ॥ ३२ ॥

सङ्कष्टदेशाटनकंकुटुम्बाद्वादःसुहृद्भ्योहृदयेविषादः ॥
चतुष्पदानान्निधनम्प्रणीतं क्षोणीसुते भूतलभावयाते ॥३३॥

अर्थ—यदि क्षोणीसुत (मंगल) भूतल (चतुर्थ) भावमें प्राप्तहोतो कुटुम्बसे दुःख,परदेशभ्रमण, मित्रोंसे विवाद, मनमें खेद, गाय, घोडा आदि चौपायोंका मरण होवै ॥ ३३ ॥

क्रोडेपीडादुर्मतिर्वैमनस्यं स्थैरं वैरम्बन्धुवर्गेण सार्द्धम् ॥
अर्द्धाङ्गादेर्मानसेचापिदुःखं पुत्रक्षेत्रे भूमिपुत्रेविचि-न्त्यम् ॥ ३४ ॥

अर्थ—यदि भूमिपुत्र (मंगल) पुत्र (पंचम) क्षेत्र (स्थान) में हो तो क्रोड (छाती) में पीडाहो मतिमन्दहो जावै, चित्त उदास रहै, बन्धुजनोंके बहुत वैरभाव बढजावै, देहमें अर्धांग रोग उत्पन्नहो और मनमेंभी दुःख होवै ॥ ३४ ॥

भूपात्प्राप्तिंशत्रुवर्गे विपत्तिम्बुद्धेर्वृद्धिम्मित्रसम्वर्द्धनञ्च ॥
हर्षोत्कर्षंवर्षकालेबलीयान्धात्रीपुत्रःशत्रुसंस्थःकरोति।३५।

अर्थ—वर्षकालमें यदि धात्रीपुत्र (मंगल) शत्रु (षष्ठम) स्थानमें स्थितहो, तो राजासे प्राप्तिहो, शत्रुवर्गमें विपत्तिहो, बुद्धिकी वृद्धिहो और मित्र बढैं, तथा महान् आनन्दहो, ॥ ३५ ॥

देहेपीडागेहिनीनामसौख्यं हानिर्देशभ्रंशता-स्यान्नितान्तम् ॥ शत्रोर्भीतिर्नीतितोवैपरीत्य-न्द्यूनस्थानेनन्दनेभूतधात्र्याः ॥ ३६ ॥

अर्थ—यदि भूनन्दन (मङ्गल) द्यून (सप्तम) स्थानमें स्थित होतो देहमें पीडा, स्त्रियोंको दुःख, हानि, नितान्तदेशका छूटना, शत्रुसे भय और अनीति प्रगट होवै ॥ ३६ ॥

परिजनपरिपीडारक्तपित्तप्रकोपो निजजनधन

मानेस्वल्पताऽनल्पचिन्ता ॥ विकलतरशरीर-
न्दीनताधीरतास्यान्निधनसधनसंस्थे लोहिता-
ङ्गेनराणाम् ॥ ३७ ॥

अर्थ–यदि लोहिताङ्ग (मङ्गल) निधनसदन (अष्टमस्थान) में स्थित होतो आत्मीयजनोंको पीडा रक्तपित्तका प्रकोप, अपने जन, धन और मानकी न्यूनता, तथा महाचिन्ता, शरीरमें विकलता, दीनता और अधीरता होवै ॥ ३७ ॥

पापेरतिस्स्यात्कलहःस्वकीयैरुद्विग्नतावैभववैपरीत्यम् ॥
कान्तिक्षयश्चापिभवेन्नराणाम्भूनन्दनेधर्म्मनिकेतनस्थे ॥३८॥

अर्थ–यदि भूनन्दन (मंगल) धर्म (नवम) भवनमें विराजमान होतो पापमें प्रीति होवै, अपने जनोंसे कलह होवै, मनमें उद्वेग होवै, ऐश्वर्यकी हानि होवै और कान्तिकाभी क्षय होवै ॥ ३८ ॥

प्रसन्नताभूमिपतेश्चलाभो व्यापारसौभाग्यसुखानिनित्यम् ॥
आरोग्यताऽतीवपशुप्रवृद्धिर्धरात्मजेराज्यपदोपपन्ने ॥ ३९ ॥

अर्थ–यदि धरात्मज (मंगल) राज्यपदोपपन्नहो अर्थात् दशमस्थानमें विराजमानहो, तो राजाकी प्रसन्नता, व्यापारमें लाभ, भाग्योदय, नित्य सुख, आरोग्यता, पशुओंकी महावृद्धि होवै ॥ ३९ ॥

प्रतापतेजोविजयाभिवृद्धिश्शत्रुक्षयोभूमिपतेःप्रसादः ॥
नित्त्यंसुहृत्पुत्रकलत्रसौख्यं लाभालयेमंगलनामधेये॥४०॥

अर्थ–यदि मंगल लाभ ११ स्थानमें होतो प्रताप, तेज और विजयकी वृद्धिहो, शत्रुका नाशहो, राजाकी कृपादृष्टिहो, मित्र, पुत्र, स्त्रीको नित्य सुखहो ॥ ४० ॥

धनक्षयस्स्यात्क्षितिपालभीतिर्दृग्दोषयोषाद्यसुखैर्विषादः ॥
वादस्सदामन्दजनेननूनम्भूनन्दनेप्रान्त्यनिकेतनस्थे ॥ ४१ ॥

अर्थ-यदि भूनन्दन (मंगल) प्रान्त्यनिकेतन (द्वादशस्थान) में स्थितहो तो धनका क्षयहो, राजासे भयहो, नेत्रमें रोगहो, स्त्री आदिसे दुःख व विषाद प्राप्तहो और मूर्खजनोंसे सदैव वाद होवै, अर्थात् असज्जनोंसे लडाई होवै ॥ ४१ ॥

॥ यह मंगलका भावफल लिखा ॥

बुधभावफल.

शरीरसौख्यंनृपतेःप्रसादम्बुद्धेःप्रवृद्धिन्द्रविणागमञ्च ॥ गाम्भीर्यवीर्योपचयम्प्रदत्तेमृगाङ्कसूनुस्तनुभावसंस्थः ॥ ४२ ॥

अर्थ-यदि मृगांकसूनु अर्थात् चन्द्रपुत्र (बुध) तनु (लग्न) भावमें स्थितहो तो शरीरको सुखहो, राजाकी प्रसन्नताहो, बुद्धिकी वृद्धिहो, द्रव्यका आगमहो, गम्भीरता तथा वीर्यकी वृद्धि होवै, पराक्रमसे युक्त होवै ॥ ४२ ॥

स्वमित्रपुत्रोन्नतिनीतिवृद्धिर्द्रव्यागमोभूमिपतेःप्रसादः ॥ आरोग्यतातीवशरीरसौख्यंचेद्रौहिणेयोद्रविणाधिसंस्थः ४३

अर्थ-यदि रौहिणेय (बुध) द्रव्य (धन) भावमें स्थितहो तो अपने मित्र व पुत्रकी उन्नति (बढती) होवै, नीतिकी वृद्धिहो, द्रव्यका आगमहो, राजाकी कृपादृष्टिहो, आरोग्यताहो, शरीरको अत्यन्त सुखहो ॥ ४३ ॥

लाभोप्यलाभश्चसुखञ्चदुःखम्मित्रन्त्वमित्रंसमानम्प्रयाति ॥ यथास्थितंस्यात्सकलन्तृतीये द्विजाधिराजात्मजभावसंस्थे ४४

अर्थ-यदि द्विजाधिराजात्मज (बुध) तृतीय भावमें स्थितहो तो लाभ, हानि, सुख, दुःख, मित्र, शत्रु ये सब समान भावसे यथायोग्य स्थित रहैं ॥ ४४ ॥

पृथ्वीपतेर्गौरवसम्प्रवृत्तिन्धनागमम्मित्रसमागमञ्च ॥
कलत्रसौख्यंबहुधाविधत्ते कलानिधेस्सूनुरिलातलस्थः॥४५॥

अर्थ–यदि कलानिधिसूनु अर्थात् चन्द्रपुत्र (बुध) रसातल (चतुर्थ) स्थानमें स्थित होतो राजासे मान होवै. धनका अगमन और मित्रसे समागम (मिलाप) होवै, स्त्रीको सुख होवै. प्रायः यह फल बुध करैहै४५

सुहृज्जनात्पुत्रकलत्रतश्च सुखानिभूपात्प्रभवेन्मनीषा ॥
भाग्यंनरेशाच्चयशश्चपुत्रे पुत्रोत्रनक्षत्रपतेर्यदिस्यात् ॥४६॥

अर्थ–यदि नक्षत्रपतिपुत्र (बुध) पुत्र (पंचम) स्थानमेंहो तो मित्र पुत्र, स्त्रीसे सुख प्राप्त होवै, राजासे मनोरथकी सिद्धि होवै, भाग्यका उदय और यशका लाभ होवै ॥ ४६ ॥

विपक्षपक्षप्रचयम्प्रमादंवादन्निजैःकान्तिपरीक्षणाञ्च ॥
शरीरपीडांचजडांशुसूनुश्शत्रुस्थितस्संजनयत्यवश्याम्॥४७॥

अर्थ–यदि जडांशुसूनु (बुध) शत्रुभावमें स्थितहो तो शत्रुपक्षमें उन्मादहो, अपने जनोंमें विवाद रहे, कान्ति मलीन होजावै और शरीरमें पीडा अवश्य होवै ॥ ४७ ॥

अतियुवतिविलासम्मार्गलाभंजनानां जनयतिधनसौ-
ख्यंसद्वणिक्कर्ममार्गात् ॥ प्रतिदिनमनुवृत्तिन्धर्मकार्येषु-
नूनम्मदनसदनसंस्थःशीतभानोस्तनूजः ॥ ४८ ॥

अर्थ–यदि चन्द्रपुत्र (बुध) मदनसदन (सप्तमस्थान) में स्थितहो तो स्त्रीसे अतिसुख, उत्तम व्यापारद्वारा सुखपूर्वक धनका लाभ होवै, और धर्मकार्यमें निरन्तर मनुष्योंका मन लगै ॥ ४८ ॥

वैरिव्रातोन्मूलनम्भूमिपालात्सौख्यंहर्षोत्कर्षतासन्मति-
त्वम् ॥ नित्यंशास्त्राभ्यासतोगौरवंस्यादायुस्थानेचन्द्रदे-
होद्भवोयम् ॥ ४९ ॥

अर्थ-यदि चन्द्रदेहोद्भव (बुध) आयु (अष्टम) स्थानमें स्थितहो तो शत्रुओंका नाशहो, राजासे सुखहो, मनमें महान् आनन्दहो, सुन्दर बुद्धि होजावै, नित्य शास्त्रोंके अभ्याससे मान प्राप्त होवै ॥ ४९ ॥

धर्म्मेबुद्धिःकार्य्यसिद्धौप्रलापश्चित्तोद्वेगःकामिनीवर्गपीडा ॥ दैन्यङ्कान्तिक्षीणताप्राणिनांस्याद्भाग्यागारेचेत्तुषारांशुजन्मा ॥ ५० ॥

अर्थ-यदि तुषारांशुजन्मा (बुध) भाग्यअगार (नवमस्थान) में हो तो धर्ममें बुद्धि, कार्यसिद्धिमें विघ्न, चित्तमें उद्वेग, स्त्रियोंको पीडा होवै और उस मनुष्यको दीनता, कान्तिकी क्षीणता होवै ॥५०॥

द्रव्यप्राप्तिर्भूणिपालोद्यमाभ्यांसभ्यत्त्वंस्याद्देहसौख्यंस्वगेहात् ॥ कान्तिस्सारोयातिविस्तारमुच्चैःकर्म्मस्थानेसोमसूनौप्रपन्ने ॥ ५१ ॥

अर्थ-यदि सोमसूनु (बुध) कर्म (दशम) स्थानमें हो तो राजासे व उद्यमसे द्रव्य प्राप्तिहो, प्रतिष्ठितजनोंमें सत्कारहो, अपने घरसे देहको सुखहो, कान्ति (शोभा) की वृद्धि होवै ॥ ५१ ॥

नित्त्यारोग्यंकान्तिवृद्धिस्सुबुद्धिःपृथ्वीपालाद्गौरवंसर्वथास्यात् ॥ स्वल्पायासैरुद्यमाद्द्रव्यलाभो लाभस्थानेसिन्धुसूनोस्तनूजे ॥ ५२ ॥

अर्थ-यदि सिन्धुसूनु अर्थात् चन्द्रमाका पुत्र (बुध) लाभ ११ स्थानमें हो तो नित्य आरोग्यताहो, भाग्यवृद्धिहो, सुन्दर बुद्धिहो, राजासे सर्वथा मान प्राप्तहो और थोडेही उद्यमसे धनका लाभ होवै ॥ ५२ ॥

लाभस्स्वल्पोव्यग्रतास्याज्जनस्यक्षोणीपाला-

त्साध्वसंदुर्व्ययश्च ॥ बुद्धेशान्ध्यंविग्रहःस्वीयवर्गे
प्रान्त्यस्थानेबोधनेवर्तमाने ॥ ५३ ॥

॥ इति बुधभाव फलानि ॥

अर्थ–यदि बोधन (बुध) प्रान्त्य (द्वादश) स्थानमें वर्तमान हो तो थोडा लाभहो, धनकी न्यूनताहो, राजासे वैरहो, व्यर्थ धनहानिहो, बुद्धिकी मन्दता और आत्मीय जनोंमें कलह होवै ॥ ५३ ॥

॥ यह बुधका भावफल कहा ॥

गुरुभावफल.

सौख्यम्पुत्रान्मित्रवर्गात्कलत्रादारोग्यंस्याच्छ्रा
द्धयभाग्योदयश्च ॥ प्राप्तिर्भूयात्सन्मतिश्चाप्यव
श्यंवागीशश्चेन्मूर्तिवर्तीतिचिन्त्यम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–अब बृहस्पतिका भावफल लिखतेहैं, यदि वागीश (बृहस्पति) मूर्तिमें स्थितहो तो पुत्र, मित्रवर्ग और स्त्रीसे सुखहो, शरीर आरोग्य रहै भाग्यकी वृद्धि हो, राजासे प्राप्तिहो और उत्तम मति होवै, यह फल अवश्य जानना चाहिये ॥ ५४ ॥

अर्थप्राप्तिंसंयतिंमित्रवर्गेनानावस्तुग्राहकत्वन्नितान्तम् ॥
सद्भिस्संगम्पुष्टिमंगेप्रकुर्याद्वाचामीशःकोशसंस्थोयदिस्यात् ५५

अर्थ–यदि वागीश (गुरु) कोश (धन) स्थानमें होतो अर्थप्राप्तिहो, मित्रवर्गमें मिलाप हो और निरन्तर नानाप्रकारकी वस्तुओंकी ग्राहकीहो, सज्जनोंसे संगतिहो, शरीरमें पुष्टि होवै, यह फल करै ॥ ५५ ॥

सुराणामाचार्यो गतवतियदाविक्रमगृहं विद्वाद्धिकार्या-
णांभवतिपरिसेवाभिरधिका ॥ सुसौख्यंस्यान्मित्रो-
न्नतिरथधनाप्तिश्चविपुलाभवेद्धर्मोदाराजननिसुखमारा-
दनुभवे ॥ ५६ ॥

अर्थ–जो देवाचार्य (बृहस्पति) विक्रम (तृतीय) घरमें आकर-प्राप्त होवै तो कार्योंकी वृद्धि होवै, सेवा अधिक होवै सुन्दर सुख होवै, मित्रकी उन्नति (वृद्धि) होवै और बहुत धन प्राप्ति होवै, धर्ममें प्रीति होवै, स्त्री व माताको सुख प्राप्त होवै ॥ ५६ ॥

कामिनीसुतसुखेतसमेतो भूमिवाहनधनागमनाद्यैः ॥
राजमानविनयैस्सुखभावे देवदेवसचिवेमनुजस्स्यात् ॥५७॥

अर्थ–यदि देवदेवसचिव (बृहस्पति) सुख (चतुर्थ) भावमें स्थित होतो मनुष्य स्त्री व पुत्रके सुखसे युक्त होवै, भूमि, वाहन और धन आदिका लाभ होवै, राजासे मान और विनयसे सुख प्राप्त होवै ॥५७॥

सन्तानसौख्याप्तिमतिप्रकाशं सुखानिमित्रोन्न
तिसंयुतानि ॥ सन्मंत्रविद्याभ्यसनानिकुर्या
त्पुत्रस्थितश्चित्रशिखण्डिसूनुः ॥ ५८ ॥

अर्थ–यदि चित्रशिखण्डिसूनु (बृहस्पति) पुत्र (पंचम) स्थानमें स्थित होतो सन्तान सुखलाभ, मतिका प्रकाश, मित्रकी वृद्धिसहित सुख और उत्तमसम्मति व विद्यामें अभ्यास करै ॥ ५८ ॥

बलक्षयश्चापिविपक्षवृद्धिस्सार्द्धंविरोधोबहुधास्व
कीयैः ॥ व्ययोऽतिचिन्ताप्रभवेन्नराणांचेद्गीष्प
तिर्वैरिनिकेतनस्थः ॥ ५९ ॥

अर्थ–यदि गीष्पति (बृहस्पति) वैरि (शत्रु) निकेतन (स्थान) में स्थितहो, तो बलका नाशहो, शत्रुकी वृद्धिहो, अपने कुटुम्बके साथ बहुधा विरोध होवै और धनहानि तथा अतिचिन्ता बनीरहै ॥ ५९ ॥

वणिग्विधानेनधनागमःस्यान्मार्गप्रसंगेनचमा
नवानाम् ॥ स्त्रीवर्गसौख्यंनृपतेश्चचित्रशिखण्डि-
सूनौमदनालयस्थे ॥ ६० ॥

अर्थ-जो चित्रशिखण्डिसूनु (बृहस्पति) मदन (सप्तम) स्थानमें होतो वैश्यवृत्ति (व्यापार) से धनका आगमहो और मार्गप्रसंगसे अर्थात् परदेशजानेसेभी द्रव्यालाभहो और स्त्री व राजासे सुख होवै ॥ ६० ॥

मित्रैस्साकंवैमनस्याभिवृद्धिर्बुद्धिभ्रंशोद्रव्यनाशः
प्रवासः ॥ विश्लेषस्स्यात्स्वीयवर्गेणपुण्यंक्षीणं
जीवेजीवितस्थानसंस्थे ॥ ६१ ॥

अर्थ-यदि जीव (बृहस्पति) जीवित (अष्टम) स्थानमें स्थित-हो तो मित्रोंके साथ उदासीनताकी वृद्धिहो, बुद्धि भ्रष्ट होजावै, द्रव्यका नाशहो, परदेश जानापडै, आत्मीय वर्ग अर्थात् अपने जनोंसे वियोगहो और पुण्य क्षीण होवै ॥ ६१ ॥

बुद्धेर्विवृद्धिर्द्रविणोपलब्धिःकान्ताविलासोमन
सःप्रसादः ॥ प्रवीणताचैवभवेच्चपुण्यंपुण्येनि
षण्णेधिषणेप्रणीतम् ॥ ६२ ॥

अर्थ-यदि धिषण (बृहस्पति) पुराय (नवम) धाममें विद्यमानहो तो बुद्धिकी वृद्धिहो, द्रव्यका लाभ हो, स्त्रीविलास, मनकी प्रसन्नता, चातुर्य और पुण्यकी वृद्धि होवै ॥ ६२ ॥

पृथ्वीपतेःप्रीतिरतीवकीर्तिर्मानोन्नतिर्नीतिमति
प्रवृद्धिः ॥ नित्त्योत्सवानन्दभरोनराणांराज्ये
सुरेज्येविजयोद्गमस्स्यात् ॥ ६३ ॥

अर्थ-जो सुरेज्य (बृहस्पति) राज्य (दशम) स्थानमें हो तो राजाकी प्रसन्नताहो, कीर्तिकी वृद्धिहो, मानकी उन्नति हो नीति और मतिकी अधिकताहो, तथा मनुष्य नित्य उत्सव और आनन्दसे परिपूर्णहो, विजय प्राप्त होवै ॥ ६३ ॥

आरोग्यतावैभववाहनानीकलत्रपुत्रादिसुखैर्युतानि ॥
नानाधनाप्तिंखलुलाभवर्ती बृहस्पतिर्यच्छतिमानवानाम् ६४

अर्थ—लाभ (एकादश) स्थानमें स्थित बृहस्पति मनुष्योंको आरोग्यता, विभव, वाहन, स्त्री, पुत्र आदि सुखसे युक्त नानाप्रकारके धनकी प्राप्ति करै है ॥ ६४ ॥

मित्रैर्वैरम्भूपतेर्भीतिरुग्रा दुःखंचिन्तानेकधार्थव्ययश्च ॥
नूनंस्थानभ्रंशतास्यान्नराणां वाचामीशेद्वादशस्थानसंस्थे ६५

अर्थ—यदि बृहस्पति द्वादशस्थानमें स्थितहो तो मित्रोंसे वैर, राजासे अग्रभय, दुःख, अनेक प्रकारकी चिंता व्यर्थ धन हानि, स्थानभ्रंश होवै ॥ ६५ ॥

शुक्रभावफल.

अत्यर्थंस्यादर्थलाभःक्षितीशाद्वंशस्योच्चैस्सञ्च-
यस्सौख्यलब्धिः ॥ हर्षोत्कर्षावेशपूर्वंसगर्वन्दै-
त्यामात्योमूर्तिवर्तीयदीह ॥ ६६ ॥

अर्थ—यदि दैत्यामात्य (शुक्र) मूर्तिवर्ती हो अर्थात् लग्नमेंहो तो राजासे अधिक द्रव्यलाभ, वंशवृद्धि, सुखप्राप्ति, अधिक उत्सव और गर्ववृद्धिहो ॥ ६६ ॥

सुहृद्विवृद्धिर्बहुधार्थलाभः शत्रुक्षयस्सत्वरमेव-
कार्य्यम् ॥ कान्तासुचित्तस्यभवेत्प्रवृत्तिर्दैत्या-
र्चितेवित्तगतेनराणाम् ॥ ६७ ॥

अर्थ—यदि दैत्यार्चित (शुक्र) वित्त (द्वितीय) स्थानमें हो तो मित्रोंकी वृद्धि, बहुधा धनप्राप्ति, शत्रुनाश, शीघ्रही कार्यसिद्धिहो और स्त्रीमें चित्तकी प्रवृत्ति रहै ॥ ६७ ॥

द्रव्यव्ययोपद्रवमित्रवैरं सौख्याल्पतानल्पविक-
ल्पचिन्ता ॥ पराक्रमोमध्यमतः प्रकामंभृगो-
स्तनूजेऽनुजभावसंस्थे ॥ ६८ ॥

अर्थ–यदि भृगुसुत (शुक्र) अनुज (तृतीय) भावमें स्थितहो तो धनव्यय (वेफायदा खर्च) उपद्रव, मित्रोंसे वैर, थोडासुख, भ्रान्तियुक्त चिन्ता और मध्यमभावसे पराक्रमकी वृद्धि होवै ॥ ६८ ॥

आरोग्यंस्याद्वैभवंभूमिपालान्मित्रक्षेत्रोद्यानसौ-
ख्यानिनूनम् ॥ नानामानैश्चापियोगोपलब्धि-
र्दैत्त्याचार्य्येतुर्यभावोपपन्ने ॥ ६९ ॥

अर्थ–यदि दैत्त्याचार्य (शुक्र) तुर्य (चतुर्थ) स्थानमें प्राप्तहो तो आरोग्यता, राजासे ऐश्वर्यप्राप्ति, मित्र घरमें उद्यान (बगीचा आदिक का) सुख, और अनेक प्रकारके मानसे योगकी वृद्धि होवै ॥ ६९ ॥

कलत्रपुत्रोद्भवसौख्यविद्याविज्ञानकौशल्यम-
तिप्रवृद्धिः ॥ विचित्रमंत्रागमसंगमःस्याद्भृगो-
स्तनूजेतनुजेऽधिसंस्थे ॥ २७० ॥

अर्थ–यदि शुक्र तनुज (पंचम) स्थानमें स्थितहो तो स्त्री पुत्रजनित सुख, विद्या, विज्ञान, कौशल्यता, बुद्धिकी वृद्धि, विचित्र (अनेक प्रकारके) मंत्र और शास्त्रमें संगम (अभ्यास) होवै ॥ २७० ॥

अनिलभीतिरनीतिमतिर्ध्रुवं रिपुचयोपिचयोऽपिधनस्यच ॥
गृहसुखंनकदापिशरीरिणामुशनसिद्विषिसम्प्रविशत्यलम् ॥ ७१ ॥

अर्थ–यदि उशनस् (शुक्र) का द्विषि (षष्ठम) भावमें प्रवेशहो तो अग्निसे भय, अनीतिमें बुद्धि, शत्रुवृद्धि और धनकीभी वृद्धि होवै, तथा शरीरधारियोंको घरसे सुख कदापि न होवै ॥ ७१ ॥

कामिनीतनयहर्षतोभवेद्देश्मपुष्टिरतिलब्धिरुद्यमात् ॥
मानवाहनधनानिभार्गवे पञ्चमार्गणगृहाङ्गणस्थिते ॥७२॥

अर्थ–यदि भार्गव (शुक्र) पञ्चमार्गणगृहाङ्गण (सप्तम) स्थानमें स्थितहो तो स्त्रीपुत्रके हर्षसे सुख होवै, गृहपुष्टि होवै, उद्यमसे अति लाभ, मान, वाहन और धनप्राप्ति होवै ॥ ७२ ॥

अल्पारोग्यङ्कामिनीसूनुचिन्ता चित्तभ्रंशोरोष-
दोषप्रकारः ॥ शश्वत्कार्य्यंस्याच्छरीरेनराणामा-
युर्भावेपूर्वदेवाधिदेवे ॥ ७३ ॥

अर्थ–यदि पूर्वदेवाधिदेव (शुक्र) आयु (अष्टम) स्थानमें हो तो आरोग्यता थोडी हो अर्थात् कुछरोग हो, स्त्रीपुत्रकी चिन्ता हो, मति भ्रष्टहो और क्रोध व दोषकी उत्पत्तिहो, प्रवास अर्थात् परदेश जानाहो, कार्यकी निरन्तर चिन्ता होवै ॥ ७३ ॥

आरोग्याप्तिर्धर्म्मकर्म्माभिवृद्धिर्बुद्धिःशस्ताविस्तृताचोन्नतिःस्यात् ॥ पुत्रान्मित्राच्चापिसन्तो-
षलब्धिः पुण्यस्थानेदानवैर्वन्द्यमाने ॥ ७४ ॥

अर्थ–दानवपूज्य (शुक्र) पुण्य (नवम) स्थानमें होतो आरोग्यता, धर्मकर्मकी वृद्धि, निर्मलबुद्धिका विस्तार और उन्नतिहो, तथा पुत्र व मित्रसेभी सन्तोषका लाभ होवै ॥ ७४ ॥

भूमिभर्तुरपिगौरवलब्धिः शत्रुपक्षकपरिक्षययु-
क्ता ॥ कार्य्यसिद्धिरपिचिन्तितकाले राज्य-
भाजिदनुजव्रजपूज्ये ॥ ७५ ॥

अर्थ–यदि दनुजव्रजपूज्य (शुक्र) राज्य (दशम) स्थानमें विराजमानहो, तो राजासे मान प्राप्तहो, शत्रुगणोंका क्षयहो, अभीष्ट समयपर कार्यभी सिद्धि होवै ॥ ७५ ॥

नीरसञ्चरणसद्धविणाप्तिर्विक्रयक्रयविधेरपि लाभः ॥
वैभवोन्नतिरतीवविलासो लाभवेश्मनि भृगुर्यदि संस्थः ॥७६॥

अर्थ–यदि भृगु (शुक्र) लाभ (एकादश) स्थानमें स्थित होतो समुद्रयानसे उत्तम धनलाभ, क्रय (खरीदेने) विक्रय (बेचने) से लाभ और ऐश्वर्यवृद्धि, तथा अती व सुख होवै ॥ ७६ ॥

साधुमार्गविभवक्षयमुच्चैस्स्वीयवर्गकलहंकिलयाति ॥
स्वालयाच्चचलनेफलहानिर्देववैरिसचिवेन्तिमभावे ॥७७॥

॥ इति शुक्रभावफलानि ॥

अर्थ–यदि देववैरिसचिव (शुक्र) अन्तिम (द्वादश) भावमें हो तो अच्छे काममें धनव्यय होवै, अपने जनोंमें कलह और अपने घरसे चलनेमें फलहानि होवै ॥ ७७ ॥

॥ यह शुक्रका भावफल कहा ॥

शनिभावफल.

प्रजायतेवातकफप्रकोपैःशिरस्थलोरःस्थलपीडनञ्च ॥
स्वकीयमित्रैःकलहोनराणाम्पुत्रस्त्रिमूर्तेर्यदिमूर्तिवर्ती ॥७८॥

अर्थ–अब शनैश्चरका भावफल लिखतेहैं, कि–यदि त्रिमूर्ति (सूर्य) पुत्र (शनि) मूर्ति (लग्न) वर्ती हो तो वात और कफके विकारसे शिर व छातीमें पीडा होवै, और अपने मित्रोंसे कलह होवै ॥ ७८ ॥

वक्राक्षिपीडाप्रभवेन्नराणान्धनव्ययोभूमिपतेर्भयञ्च ॥
चिन्ताप्रभूतारमणीसुतादेश्चेद्भानुसूनुर्धनधामसंस्थः ॥७९॥

अर्थ–यदि भानुसूनु (शनि) धनधाम (द्वितीयस्थान) में स्थित हो तो मुख, नेत्रमें पीडाहो, धनव्ययहो, राजासे भयहो, स्त्रीपुत्र आदिकोंकी चिन्ता होवै ॥ ७९ ॥

समग्रचिंताविकलःखलुस्यात्कुधरापालकमा-

नसौख्यम्॥ धनस्यलाभोऽतितरान्नराणां भानो
स्तनूजेसहजाधिसंस्थे ॥ २८० ॥

अर्थ–यदि भानुतनूज (शनि) सहज (तृतीय) स्थानमें स्थितहो तो बहुतसी चिन्ताओंसे चित्त विकल रहै, राजासे मान, सुख, धनका लाभ अधिकतासे होवै ॥ २८० ॥

प्रवासचिन्ताद्रविणव्ययस्स्यात्कान्ताचितिन्ताकु
लचित्तवृत्तिः ॥ पक्षेजनन्याःपरिपीडनञ्चरसा
तलस्थेनलिनीशसूनौ ॥ ८१ ॥

अर्थ–यदि नलिनीशसूनु (शनि) रसातल (चतुर्थ) स्थानमें होतो परदेशजानेकी चिन्ता, द्रव्य व्यय (धनका खर्च) स्त्रीकी अधिक चिन्तासे मनको दुःखहो, माताके पक्षमें (मातुलादिकको) पीडा होवै ॥ ८१ ॥

कान्तासुहृत्सूनुजनेषुपीड़ा कोडाप्रपीडापवन-
प्रकोपात्॥ बुद्धिर्विरुद्धाधनसङ्क्षयस्स्याद्भानो-
स्तनूजेतनुजेऽधिसंस्थे ॥ ८२ ॥

अर्थ–यदि भानुतनूज (शनि) तनुज (पंचम) स्थानमें स्थितहो तो स्त्री, मित्र, पुत्रजनोंमें पीडा हो, वातविकारसे छातीमें पीडा हो बुद्धि भ्रष्ट और धनका नाश होवै ॥ ८२ ॥

सामर्थ्यंस्याद्भूमिभर्तुः प्रसादस्सद्भिस्सङ्गोवीर्य्य-
वृद्धिस्समृद्धिः॥ जायापुत्रप्रीतिसम्प्राप्तिरत्र श-
त्रुक्षेत्रेमित्रपुत्रोयदिस्यात्॥ ८३ ॥

अर्थ–यदि मित्र पुत्र (शनि) शत्रुक्षेत्र (छठेघर) में हो तो सामर्थ्यहो, राजाकी कृपादृष्टिहो, सज्जनोंका संगहो, पराक्रमकी अधिक वृद्धिहो, स्त्रीपुत्रमें अधिक प्रेम बढ़ै ॥ ८३ ॥

मित्रकष्टमपिपुष्टिहीनता स्थानहानिधननाश-
नन्दिशेत् ॥ शत्रुभीतिमपिनीतिविच्युतिम्मी-
नकेतननिकेतनेशनौ ॥ ८४ ॥

अर्थ-यदि शनि मीनकेतन (सप्तम) निकेतन (स्थान) में हो तो मित्रको कष्ट, पुष्टिकी हीनता, स्थानहानि, धनका नाश, शत्रुसे भय और अनीतिको उत्पन्न करताहै ॥ ८४ ॥

अनेकधाव्याधिसमुद्भमःस्याज्जायासुतानामपि
वित्तनाशः ॥ मान्द्यञ्चबुद्धेर्व्यसनोपलब्धिः का-
र्यंयमश्चेद्यमधामसंस्थः ॥ ८५ ॥

अर्थ-यदि यम (शनैश्चर) यम धाम (अष्टमस्थान) में तहो तो अनेक प्रकारकी व्याधिकी उत्पत्तिहो, स्त्री, और पुत्रोंकोभी क्लेशहो, धनका नाशहो, रोग उत्पन्न हो, बुद्धि मन्द हो, चित्त दुःखी रहे, कार्यसिद्धि नहो ॥ ८५ ॥

धनविनाशनदेशभयान्वितं सुतहितप्रमदापरि-
पीडनम् ॥ मतिविपर्ययतांकुरुतेयमो नवमधा-
मसमागममागतः ॥ ८६ ॥

अर्थ-यदि यम(शनि) नवमधाममें आकर प्राप्तहो, तो देशभय सहित धननाश, पुत्र, मित्र और स्त्रीको पीडा, बुद्धिमें विपरीतता करै ॥ ८६ ॥

पृथ्वीभर्तुर्भीतिरर्थच्युतिःस्यात्स्वव्यापारेव्यग्र-
तास्थानहानिः ॥ दुःखंदैन्यं जायतेमानवानां
मानेभानोर्नन्दनेवर्त्तमाने ॥ ८७ ॥

अर्थ-यदि भानुनन्दन (शनि) मान (दशम) स्थानमें स्थित-

होतो राजासे भय, धनहानि, अपने व्यापारमें व्याकुलता, स्थानहानि, दुःख और दरिद्रता होवै ॥ ८७ ॥

योषातोषम्मानवेसद्विशेषादाशापूर्तिः स्फुर्ति-
कीर्तिप्रसादम् ॥ शौर्य्यंवीर्य्यञ्चापिधैर्य्यम्प्रकु-
र्य्यात्प्राप्तौप्राप्तःसप्तसप्तिप्रसूतः ॥ ८८ ॥

अर्थ–यदि सप्तसप्तिप्रसूत (शनि) प्राप्ति (एकादश) स्थानमें प्राप्त होतो उस मनुष्यकी स्त्रीको विशेष सुखहो, कीर्ति दिशाओंमें व्याप्तहो, चित्त प्रसन्नरहै, शौर्य्य, वीर्य्य और धैर्य्यकी वृद्धि करै॥८८॥

विलोचनक्रोडपदेषुपीडा दृढाभवेन्मित्रजनैर्वि-
वादम् ॥ भीतिर्नृपाद्द्रव्यहतिर्नितान्तं व्ययाल-
येचेन्नलिनीशजन्मा ॥ ८९ ॥

॥ इतिशनिभावफलानि ॥

अर्थ–यदि नलिनीशजन्मा (शनि) व्यय (द्वादश) स्थानमें होतो नेत्र, छाती, चरण इनमें पीड़ाहो, मित्रजनोंसे बहुत विवाद होवै, राजासे भय और नितान्त द्रव्यहानि होवै ॥ ८९ ॥

॥ यह शनिभावफल कहा ॥

राहुभावफल.

देहेपीडाजायतेवातजन्याचिन्तापत्त्वैर्विभवंवैप-
रीत्यम् ॥ वादंकैश्चित्कामिनीसूनुचिन्तासिं-
हीसूनुश्चेत्तनुस्थानसंस्थः ॥ ९० ॥

अर्थ–अब राहुका भाव फल लिखतेहैं, यदि सिंहीसूनु (राहु) तनु (लग्न) स्थानमें होतो शरीरमें वातविकारसे पीड़ा उत्पन्नहो, चिन्ता, आपत्ति और विभवकी हानि होवै, किसीसे वादहो, स्त्री-पुत्रकी चिन्ता होवै ॥ ९० ॥

वदनलोचनपीडनकंतथा कथमपिप्रकरोतिच-
नीचतः ॥ द्रविणलाभमनुत्सवमङ्गतद्रविणधा-
मसमागमकृत्तमः ॥ ९१ ॥

अर्थ–यदि तम (राहु) द्रविण (द्वितीय) धाममें प्राप्तहो तो मुख तथा नेत्रमें पीडाहो, किसी प्रकारभी नीचसे धनका लाभहो, चित्तमें वारंवार खेद उत्पन्नहोवै ॥ ९१ ॥

सम्यक्सुखंभूमिपतेर्नितान्तंसम्मुन्नतिःकायसु-
खानिनित्यम् ॥ सुहृत्समाजोपचयोजयस्स्या-
त्सिंहीतनूजेऽनुजधामसंस्थे ॥ ९२ ॥

अर्थ–यदि सिंहीतनूज (राहु) अनुज (तृतीय) धाममें स्थित होतो राजद्वारा अच्छे प्रकार नितान्त सुख प्राप्तहो, ऐश्वर्यकी वृद्धिहो, नित्यही शरीरको सुखहो, मित्रसमाजकी वृद्धिहो और जयप्राप्ति होवै ॥ ९२ ॥

चिन्तादुःखंवाग्विवादःस्वकीयैर्नूनंपानंवाहना
दिक्षयश्च ॥ कार्श्यंशश्वज्जायतेमानवानान्तुर्य्य-
स्थाने नंदनेसिंहिकायाः ॥ ९३ ॥

अर्थ–यदि सिंहिकानन्दन (राहु) तुर्य (चतुर्थ) स्थानमें स्थित होतो चिन्ता, दुःख, अपने जनोंसे वादविवाद (बातचीत अर्थात् कलह) हो, स्थान और वाहन आदिकका क्षयहो, तथा उस मनुष्यके शरीरमें निरन्तर दुर्बलता होवै ॥ ९३ ॥

बुद्धेर्मान्द्यन्निन्दविद्वेषिवादंगाढंपीडांक्रोडदेशे
विशेषात् ॥ पुत्रात्सौख्यंयच्छतिप्राप्तिवर्जं सिं-
हीसूनुर्नन्दनस्थानसंस्थः ॥ ९४ ॥

अर्थ–यदि सिंहीसुनु (राहु) नन्दन (पंचम) स्थानमें स्थितहो,

तो बुद्धिकी मन्दता, निन्दा, वैर, विवाद, छातीमें महापीडा, पुत्रसे सुख, और मानिकी हानि होवै ॥ ९४ ॥

आरोग्यंस्याद्भाग्यवृद्धिर्नरेशाद्वैरिध्वंसोमानसो-
त्पन्नसौख्यम् ॥ जायापुत्रैःप्रीतिमत्यन्तमब्दे
शत्रुक्षेत्रेपुत्रकास्सिंहिकायाः ॥ ९५ ॥

अर्थ-यदि सिंहिकासुत (राहु) शत्रुक्षेत्र (छठेघर) में पडै तो शरीर रोगरहित हो, राजासे भाग्यकी वृद्धिहो, शत्रुका विध्वंसहो, मनमें सुख उत्पन्न हो, स्त्री और पुत्रसे अत्यन्त प्रीति होवै ॥ ९५ ॥

स्थानात्स्थानंयानमंगेतिकार्श्यंकान्ताचिन्ताचं
चलाचित्तवृत्तिः ॥ कट्यांवस्तौवातसंजातबा
धा स्वर्भानुश्चेत्कामिनीस्थानसंस्थः ॥ ९६ ॥

अर्थ-यदि स्वर्भानु (राहु) कामिनी (सप्तम) स्थानमें स्थितहो तो एक स्थानसे दूसरे स्थानको जाना पडै. शरीरमें अत्यन्त दुर्बलहो, स्त्रीकी चिन्ताहो, चित्तवृत्ति चंचल हो जावै, कटि (कमर) और बस्ति (पेडू) में वातविकारसे पीडा उत्पन्न होजावै ॥ ९६ ॥

जायाक्लेशोबान्धवाविद्विषस्स्युर्द्रव्यावाप्तिःस्या
त्क्षितेश्चप्रवासः ॥ कान्तिर्हीनामानवानांहिवर्षे
सिंहीसूनुर्नैधनस्थानवर्ती ॥ ९७ ॥

अर्थ-यदि सिंहीसूनु (राहु) नैधन (अष्टम) स्थानवर्ती हो, तो स्त्रीको क्लेशहो बन्धुजनोंसे वैर हो द्रव्यप्राप्ति और द्रव्यक्षय होवै, परदेश जाना पडै तथा उस वर्षमें उस मनुष्यकी कान्ति जाती है ॥ ९७ ॥

पीडनंहिवपुषोऽपिचरोषोयोषयासहकृशत्त्वविशेषः ॥
पुण्यकर्मणिघृणामणुबुद्धिर्यमंधामसमवर्तिनमश्नेत् ॥ ९८ ॥

अर्थ-यदि तम (राहु) धर्म (नवम) धाममें स्थितहो तो शरीरमें पीडा, स्त्रीके साथ विरोध, शरीरमें विशेष दुर्बलता, सत्कर्ममें बुद्धिकी न्यूनता होवै ॥ ९८ ॥

अवनिनायकतोभयमद्भुतन्निजजनैस्सहदेहनिपीडनम् ॥ धनविनाशनमादिशतेभृशंबततमोदशमोदयसंस्थितः ॥ ९९ ॥

अर्थ-यदि तम (राहु) दशमस्थानमें स्थितहो तो राजासे अद्भुत भयहो, अपने जनोंकरके सहित देहमें पीडा हो और वारंवार धनका विनाशहो ॥ ९९ ॥

आरोग्यतावैभवबुद्धिवृद्धिर्नीचाज्जनाच्चापिभवेद्वाप्तिः ॥ सुखानिनित्त्यंखलुकामिनीनांसिंहीसुतेलाभगतेनितान्तम् ॥ ३०० ॥

अर्थ-यदि सिंहीसुत (राहु) लाभ (एकादश) स्थानमें हो तो आरोग्यता, वैभव और बुद्धिकी वृद्धि हो, नीच जनसेभी लाभहो, तथा स्त्रीको नित्त्य सुख होवै ॥ ३०० ॥

धनव्ययस्स्वीयजनेषुपीडा रिपूदयोभूपभयोपलब्धिः ॥ कान्तातिचिन्ताकुलचित्तवृत्तिर्व्ययेऽधिवासस्तमसोयदिस्यात् ॥ १ ॥

॥ इति राहु भावफलानि ॥

अर्थ-यदि तम (राहु) व्यय (द्वादश) स्थानमें निवास करता होतो धनका नाश, बन्धुजनोंमें पीडा, शत्रुओंकी वृद्धि, राजासे भयप्राप्ति, स्त्रीसम्बन्धी अतिचिन्तासे चित्तमें व्याकुलता होवै ॥ १ ॥

॥ यह राहुका भावफल कहा ॥

केतुभावफल.

शिखीलग्नगःस्यात्स्वयंयत्रतत्ररिपोर्भीश्चचिन्ता-

भवेद्राजकष्टम् ॥ शिरोर्तिस्तथामानभंगोज-
नस्य करोत्येवनेत्रेचयोषित्सुपीडा ॥ २ ॥

अर्थ-जो शिखी (केतु) लग्नमें स्थितहो तो मनुष्यको भय और विकलता हो और शत्रुसे भयहो, मनमें चिन्तारहे, राजासे कष्ट होवै, शिरमें पीडा तथा मानभंग, नेत्र और स्त्रीको पीडा होवै, केतु यह फल करताहै ॥ २ ॥

कुटुम्बगश्चेद्यदिकेतुरब्देभूपाद्भयंहानिकरोधना-
नाम् ॥ नेत्रोदरव्याधिभयार्तिदोषाञ्जनाप-
वादंप्रकरोतिदुःखम् ॥ ३ ॥

अर्थ-वर्षमें यदि केतु कुटुम्ब (धनस्थान) में होतो राजासे भय और धनकी हानि करताहै, नेत्र और उदरमें रोग, भय, दुःख, मनुष्योंमें अपवाददुःख प्रगट करताहै ॥ ३ ॥

यदिशिखीचतृतीयगृहस्थितः प्रकुरुतेपशुवाहनजंसुखम् ॥
धनसुतंनरराजसमंजनं स्वजनपीडनमाशुकरोतिवै ॥ ४ ॥

अर्थ-यदि शिखी (केतु) तीसरे घरमें स्थितहो तो पशु (गौ आदि, वाहन (घोडा आदि सवारी) का सुख करताहै, और धन व पुत्रका सुख देताहै, तथा मनुष्यको राजाके समान करताहै, और अपने बन्धुजनोंमें पीडा शीघ्र उत्पन्न करताहै ॥ ४ ॥

चतुर्थेशिखीमानसेव्यग्रतास्यात्कफार्तिस्तथा-
वायुपीडाचदुःखम् ॥ भयंवाहनेभ्यस्तथाभूप-
पक्षाद्विदेशभ्रमंवत्सरेऽसौकरोति ॥ ५ ॥

अर्थ-यदि चौथे घरमें शिखी (केतु) विद्यमानहो तो मनमें दुःख हो, कफसे पीडा हो, तथा वातप्रकोपसे पीडा और दुःख होवै, वाहनसे भय, तथा राजपक्षसे भय, विदेशमें भ्रमण, उस वर्षमें होवै केतु यह फल करताहै ॥ ५ ॥

सुबुद्धेर्विनाशंसुतस्थानगश्चेच्छिखीसन्ततेःपीड
नंहायनेऽस्मिन् ॥ तथासर्वदाक्लेशचिन्तांभया-
प्तिं स्वकीयोदरेवायुभीतिंविधत्ते ॥ ६ ॥

अर्थ–यदि शिखी (केतु) पंचम स्थानमें होवो उस वर्षमें सुबुद्धि-का विनाशहो, सन्ततिको पीडाहो, तथा सर्वदाक्लेश, चिन्ता, भय होवै और अपने उदर (पेट) में वातविकारसे क्लेश होवै ॥ ६ ॥

केतुर्यदाषष्ठगतस्तदास्याद्रिपोर्विनाशोनृपतुल्य-
कारी ॥ गोभूहिरण्याम्बरलाभदायीधना-
प्तिकृद्दुःखसमूहहारी ॥ ७ ॥

अर्थ–जो केतु छठे स्थानमें प्राप्तहो तो शत्रुका विनाश करैहै. राजाके तुल्य उस मनुष्यको करैहै और गौ, भूमि, सुवर्ण, वस्त्र तथा धनकी प्राप्ति करैहै, दुःखके समूहको नाश करैहै ॥ ७ ॥

केतुर्यदासप्तमगेहसंस्थो वातप्रमेहादिविषाग्निपी-
डाम् ॥ गुह्येन्द्रियार्तिंभयमङ्गनानांकरोतिपुंसां-
स्वदशांगतेऽपि ॥ ८ ॥

अर्थ–जो केतु सप्तम घरमें स्थित होवो वात, प्रमेह, विष और अग्निसे पीडा करताहै, तथा उस वर्षमें गुदा व इन्द्रियमें पीडा और स्त्रियोंको भय, यह फल अपनी दशामें करताहै ॥ ८ ॥

मृत्युस्थितोमृत्युसमंमनुष्यं केतुर्यदाभूपभयंकरो-
ति ॥ ज्वरातिसारंचकफार्तिदोषं विषूचिकांवा-
युभयंनराणम् ॥ ९ ॥

अर्थ–जो केतु मृत्यु (अष्टम) स्थानमें स्थितहो तो मनुष्यको मृत्युके समान और राजासे भय करताहै, तथा ज्वर, अतीसार और कफकी पीडा, विषूचिकादोष व वातविकारसे भय करताहै ॥ ९ ॥

धर्म्मस्थितोधर्म्मविनाशकारी जयंनृपाच्छत्रुवि-
नाशनंच ॥ करोतिपीडांपशुबान्धवेषु भाग्यो-
दयंधान्यसमागमञ्च ॥ ३१० ॥

अर्थ-यदि केतु धर्म (नवम) स्थानमें स्थितहो वो धर्मका विनाश करै, राजासे जय और शत्रुका विनाश करै, पशु और बन्धूजनोंमें पीडा करै, भाग्यका उदय और धान्यका समागम करै ॥ ३१० ॥

शिखीयदाराज्यगृहेस्थितःस्याद्व्यापारलाभं
चकरोतिवर्षे ॥ कीर्तिर्भवेद्वाहनहानिकारी
भूपाज्जयंमङ्गलमाशुकुर्य्यात् ॥ ११ ॥

अर्थ-जो शिखी (केतु) राज्यगृह (दशम स्थान) में स्थितहो तो उस वर्षमें व्यापारसे लाभ और कीर्ति प्राप्त होवै, वाहनकी हानि होवै, भूप (राजा) से जय और शुभ मङ्गल शीघ्र होवै ॥ ११ ॥

लाभस्थितश्चेत्खलुकेतुखेटोनरंनरेन्द्रेणसमंकरोति ॥
शत्रुक्षयंपुत्रभयंतथास्याद्धिरण्यगोभूधनसंचयंच ॥ १२ ॥

अर्थ-यदि केतु गृह लाभ (एकादश) स्थानमें स्थितहो तो मनुष्यको राजाके समान करताहै, शत्रुका क्षय, तथा पुत्रभय और सुवर्ण, गौ, भूमि, धन इनका संचय करताहै ॥ १२ ॥

व्ययस्थःशिखीव्यग्रतांसम्प्रधत्तेभयंशत्रुतोका-
मिनीनाञ्चपीडा ॥ भवेत्पीडनंकर्णनेत्रोदरेषु
विवादंजनैस्सार्द्धमब्देकरोति ॥ १३ ॥

अर्थ-जो व्यय (द्वादश) स्थानमें शिखी (केतु) स्थितहो तो उस वर्षमें विकलता हो, शत्रुसे भयहो, स्त्रियोंको पीडा हो और कान, नेत्र (आंख), उदर (पेट) में पीडा होवै, मनुष्योंके साथ विवाद (झगडा) होवै ॥ १३ ॥

स्वोच्चस्ववेश्मास्तगनीचशत्रुहद्दादिवर्गस्थितखेचरा-
णाम् ॥ बलाबलत्त्वादिविचार्य्यसम्यक् प्रोक्ताऽनु-
सारेणफलं वदेत्तु ॥ १४ ॥ खेचारिणांभावफला-
नियानितानीहकल्प्यानिदशासुतेषाम् ॥ १५ ॥

अर्थ-अपने उच्च, अपनी राशि, अस्त, नीचराशि, शत्रुराशि और अपने हद्दा आदि वर्गमें स्थित ग्रहोंका बलत्त्व निर्बलत्त्व आदि विचारकर उसके अनुसार भलीभांति (न्यून अधिक) फल कहै ॥ ॥ १४ ॥ ग्रहोंका जो जो भावफल कहा गया सो फल उन उन ग्रहोंकी दशामें कहना, यहां यहां इस ग्रन्थमें मुद्दादशाको प्रधान माना है, इस कारण यहां मुद्दादशामें फल कहना ॥ १५ ॥

अरिष्टविचार.

वृथाफलंहायनजंचयस्मान्नजीवनंहायनरिष्टयोगात् ॥
रिष्टानितस्मादिहसम्प्रवक्ष्ये पूर्वैर्विधिज्ञैःकथितानियानि॥१६॥

अर्थ-जिस अरिष्ट फलसे वर्षका शुभफल वृथा होजाताहै, और जिस अरिष्टयोगसे जीवनमें सन्देह उत्पन्न होजाताहै, उस अरिष्ट फलका विचार करना परमावश्यकहै, इस कारण यहां (इस-ग्रन्थमें) पूर्वाचार्योंनें जिन अरिष्टाको कहाहै उन्हीं अरिष्टफलोंकों मैं भलिभांति वर्णन करताहै ॥ १६ ॥

देवेज्यासुरपूजितौहतरुचौ नीचेऽथचेच्चन्द्रमाना
नारोगभयंवियोगबहुलं स्याद्वर्षकालेनृणाम् ॥
आयुःस्थानपतिस्तनौतनुपतिःसंस्थोयदानैधने
नन्वेतौखलखेचरेक्षितयुतौशस्त्रेणमृत्त्युप्रदौ ॥ १७ ॥

अर्थ-यदि वर्षकालमें बृहस्पति और शुक्र बलहीनहों, चन्द्रमा नीचराशिका हो, तो अनेक रोगोंका भयहो, और वियोगहो और

यदि आयु (अष्टम) स्थानका स्वामी लग्नमेंहो, लग्नका स्वामी निधन (अष्टम) स्थानमें हो, पापग्रहकी दृष्टिहो अथवा पापग्रहयुक्तहो तो शस्त्रसे मृत्यु जानना ॥ १७ ॥

दिनकरकरलुप्तौजन्मलग्नेन्थिहेशौदिनपतियुतदृ
ष्टौरिष्टदौतौभवेताम् ॥ जननसमयलग्नादष्टमंवर्ष
लग्नं युतमथमुथहेशेनेक्षितंरिष्टहेतुः ॥ १८ ॥

अर्थ-यदि लग्नका स्वामी और मुंथाकास्वामी ये दोनों सूर्यके कारणसे अस्तहों अथवा सूर्यकी दृष्टिमें हों तो अरिष्टकारक होतेहैं, और यदि जन्मलग्न वर्षलग्नसे आठवें स्थानमें पडै और मुंथहास्वामीसे युक्त अथवा उसकी दृष्टिमें हो तोभी अत्यन्त अरिष्ट जानना ॥ १८ ॥

निधनतनुमदारिप्रान्त्यगश्शीतरश्मिर्नहिगुरुयु-
तदृष्टोरिष्टकृत्सम्प्रदिष्टः ॥ यदिकुजयुतदृष्टःकष्ट
दोवह्निशस्त्रैर्दिनकरतनयेनात्यन्तवातप्रकोपः ॥ १९ ॥

अर्थ-यदि शीतरश्मि (चन्द्रमा) निधन (अष्टम) तनु (लग्न) मद (सप्तम) अरि (षष्ठ) प्रान्त्य (द्वादश) इनमेंसे किसी स्थानमें हो और बृहस्पतिसे युक्त अथवा दृष्ट नहीं होवै, तो अरिष्टफल करनेवाला कहना और यदि मंगलसे युक्त वा दृष्टहो तो अग्नि और शस्त्रसे कष्टदायक जानना और यदि शनिसे युक्त वा दृष्टहोतो अत्यन्त क्लेशदायक वातपीडा होवै ॥ १९ ॥

क्ष्मासुतेक्षितयुतस्तनुभर्तास्यान्मृतिस्थितिकरो
मृतिकर्ता ॥ सूर्यलिप्तकिरणौधिषणश्चौशस्त्रपी
डनकरौहिनराणाम् ॥ ३२० ॥

अर्थ-यदि मंगलकी दृष्टि वा मंगलसे युक्त होकर लग्नका स्वामी अष्टमस्थानमें हो तो मृत्युयोग जानना और यदि सूर्यके कारण

अस्त होकर बुध वा गुरु अष्टम स्थानमें होवै तो श[illegible]पीडा होवै ॥ ३२० ॥

होराक्रूराभ्यन्तरेचान्तरेयंकुर्याद्दारागारमप्येवम
त्र ॥ रिष्फारिस्थैरर्थरन्ध्रोपगैर्वापापैरिष्टंश्रेष्ठधी
भिःप्रदिष्टम् ॥ २१ ॥

अर्थ-यदि होरा (लग्न) क्रूरग्रहोंके अन्तरमेंहो अर्थात् पापकर्तरी योग, और सप्तमस्थानभी पापग्रहोंके अन्तरमें हो तो गृह और स्त्री विषयक विघ्न होवै, और यदि पापग्रह रिष्फ (द्वादश) अरि (षष्ठ) अर्थ (द्वितीय) रन्ध्र (अष्टम) स्थानमेंहो तो भी अरिष्ट जानना॥२१॥

चेदिन्थिहापापयुताषडष्टव्ययोपगाहेतिहुताश
भीतिम् ॥ करोतिवर्षेरविनन्दनेनयुतेक्षितावाप
वनप्रकोपम् ॥ २२ ॥

अर्थ-यदि मुंथा पापग्रहसे युक्त होकर षष्ठ, अष्टम और व्यय (द्वादश) स्थानमें स्थितहो तो शस्त्र और अग्निसे भयहो और यदि शनैश्चरसे युक्त वा दृष्टहो तो उस वर्षमें वातप्रकोप अवश्य होवै ॥२२॥

मदननिधनबन्धुप्रान्त्यशत्रुस्थितावाजननसमय
लग्नादिन्थिहाऽब्देष्टमस्था ॥ खलगगनतलस्थै
र्युक्तदृष्टातिरिष्टं जनयतिशुभदृष्टोत्पन्नरिष्टाल्प
तास्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ-यदि जन्मलग्नसे मदन (सप्तम) निधन (अष्टम) बन्धु (चतुर्थ) प्रान्त्य (द्वादश) शत्रु (षष्ठ) स्थानमें स्थितहो और अब्द (वर्ष) में अष्टमस्थानहो, और पापग्रहोंसे युक्त दृष्टहो तो अत्यन्त अरिष्टफल उत्पन्न करताहै और यदि शुभग्रहोंसे दृष्ट हो तो उत्पन्न अरिष्ट न्यून जानना ॥ २३ ॥

कामिनीभवनगस्तुहिमांशुर्लग्नपोमृतिपतिर्यदि-
संस्थः ॥ द्वादशेद्विषितथायुधिरिष्टंस्यान्मृतौ
चतनुपोमुथहेशः ॥ २४ ॥

अर्थ–यदि हिमांशु (चन्द्रमा) कामिनीभवन (सप्तमस्थान) में हो और यदि लग्न स्वामी और अष्टमस्वामी द्वादश (बारहवें) तथा द्विषि (छठे) स्थानमें स्थितहो युद्धमें अरिष्टहो और यदि लग्नेश व मुथहेश अष्टम होतो अरिष्ट जानना ॥ २४ ॥

लग्नेश्वरोवामुथहेश्वरोवा रन्ध्रेश्वरोगौरकरात्त-
नोर्वा ॥ षष्ठाष्टमान्त्योपगतःकरोति रिष्टम्पु-
राणैर्गणकैःप्रदिष्टम् ॥ २५ ॥

अर्थ–लग्नस्वामी वा मुथहास्वामी वा चन्द्रमा अथवा लग्नसे अष्टमस्थानका स्वामी यदि षष्ठ, अष्टम वा द्वादशस्थानमें स्थित होतो आरिष्ट फल करताहै. यह प्राचीन गणकोंने कहाहै ॥ २५ ॥

रात्रीश्वरेभास्करमण्डलस्थे षष्ठव्ययेवामृतिभा-
वसंस्थे ॥ त्रिदोषतोऽसौबहुभिःप्रकारैः करोति-
रिष्टं विविधन्दशायाम् ॥ २६ ॥

अर्थ–यदि रात्रीश्वर (चन्द्रमा) भास्करमण्डलस्थहो अर्थात् अस्तंगतहो और छठे, बारहवें अथवा आठवें स्थानमें स्थितहो, तो ऐसा चन्द्रमा अपनी दशामें त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) द्वारा बहुत प्रकारसे अनेक अरिष्ट करताहै अर्थात् नाना प्रकारके कष्ट देताहै ॥ २६ ॥

लग्नाधिनाथेमृतिभावसंस्थे भौमेक्षितेतस्यच
भावसंस्थे ॥ अस्तङ्गतेवाभृगुजेबुधेवा शस्त्राभि-
घातोबहुधापदश्च ॥ २७ ॥

अर्थ-यदि लग्नाधिनाथ (लग्नस्वामी) मृत्युभाव (अष्टमस्थान) में स्थितहो और मंगलकी दृष्टिहो और उसके भावमें स्थित अथवा अस्तंगत शुक्र वा बुध हो तो शस्त्रसे अभिघात (पीडा) और बहुत प्रकारकी आपदा होवै ॥ २७ ॥

वर्षलग्नपरन्ध्रेशौ चतुर्थानिधनान्त्यगौ ॥
मुथहासंयुतौयत्र तद्वर्षेमरणप्रदौ ॥ २८ ॥

अर्थ-वर्षलग्नस्वामी, अष्टमस्वामी, यह दोनों मुंथासहित चौथे, आठवें वा बारहवें स्थानमें हों, जिस वर्षमें यह योगहो उस वर्षमें मरण होवै ॥ २८ ॥

चेज्जन्मनाथोविबलोमृतीशो लग्नङ्गतोभास्कर
दृष्टिमूर्ति ॥ शस्त्राभिघातोबहुधाचकष्टं कुष्ठंशरी-
रेमरणेनतुल्यम् ॥ २९ ॥

अर्थ-यदि जन्मलग्नका स्वामी बलहीन हो और अष्टमस्वामी लग्नमें हो, लग्नपर सूर्यकी दृष्टिहो तो शस्त्र लगनेसे बहुत कष्टहो और शरीरमें मरणसमान कष्टदायक कुष्ठहोवै ॥ २९ ॥

मुथहालग्ननाथौचेत्सूर्यमण्डलमागतौ ॥
दृष्टौतौसूर्यपुत्रेणसर्वनाशकरौमतौ ॥ ३३० ॥

अर्थ-यदि मुंथा और लग्नस्वामी ये दोनों सूर्यमण्डलमें प्राप्तहों अर्थात् अस्तंगतहों और दोनोंपर सूर्यपुत्र (शनि) की दृष्टिहो तो सर्व नाश करनेवाले जानने ॥ ३३० ॥

जन्माधिपःक्रूरयुतस्तदानीम्महार्थनाशम्मरणेनतुल्यम् ॥
बलोत्करक्रूराखगाबलेनहीनायदासौम्यगृहास्तदानीम् ॥
दुःखंमहाव्याधिकृतंचवैरम्परस्परंशत्रुविमर्दनञ्च ॥ ३१ ॥

अर्थ-जन्मलग्नस्वामी यदि पापग्रहयुक्तहो तो धनकी महा-

हानिहो, मरणतुल्य क्लेशहो और यदि क्रूर ग्रह पूर्ण बलवान् हो और शुभ ग्रह बलहीनहों, तो दुःख और महाव्याधि करै, परस्पर वैर और शत्रुनाश करै ॥ ३१ ॥

दैत्येन्द्रपूज्योयदिनीचसंस्थः सुरेज्यपूज्योरिपुभागवर्ती ॥
स्वप्नेऽपिसौख्यंनहिवर्षमध्येवृथाफलंहायनजन्तदानीम् ॥३२॥

अर्थ–यदि दैत्येन्द्र पूज्य (शुक्र) नीच राशिमें स्थितहो और सुरेज्यपूज्य (गुरु) शत्रुराशिमें होवो उस वर्ष बीच स्वप्नमेंभी सुख नहींहो और वर्षसे उत्पन्न शुभ फलभी उस समय वृथा होजावै ॥३२॥

अस्तंगतौभार्गवसोमपुत्रौ नीचस्थितोरात्रिपतिर्यदास्यात् ॥
तदावियोगंमरणं च कष्टं शरीरपीडामतुलांकरोति ॥३३॥
जन्मलग्नाद्वर्षलग्नमष्टमंयदिजायते ॥ तस्मिन्वर्षेभवेत्पीडा मृत्युःपापयुतेक्षणात् ॥ ३४ ॥

अर्थ–जो भार्गव (शुक्र) सोमपुत्र (बुध) अस्तंगतहो और रात्रिपति (चन्द्मा) नीच राशि (वृश्चिक) मेंहो तो वियोग, मरण और कष्ट, शरीरको महापीडा करैहै ॥ ३३ ॥ यदि जन्म लग्नसे वर्षलग्न आठवेंहो और पापग्रहयुक्त वा दृष्ट होतो उस वर्षमें मृत्युसदृश पीडा होवै ॥ ३४ ॥

हद्देश्वरोहायनलग्ननाथः सप्तान्त्यगःक्रूरयुतःकरोति ॥
मृतिंदशायांशुभयुक्तदृष्टिः फलंतदर्धंप्रतिमंकरोति॥३५॥
नीचेत्रिराश्याधिपतिःपरस्य गेहेऽथपापेनविलोकितश्च॥
कार्य्यस्यनाशंकुरुतेह्यकस्माद्वैरंचकष्टं परतस्सदैव ॥ ३६ ॥

अर्थ–हद्दास्वामी और वर्षलग्नस्वामी पापग्रहयुक्त सातवें वा बारहवें स्थानमें स्थितहो तो मृत्यु करताहै, शुभयुक्त वा दृष्ट हो तो अपनी दशामें आधा फल करताहै ॥ ३५ ॥ त्रिराशिपति नीचमें अथवा

शत्रुघरमें हो और पापग्रह देखताहो तो अकस्मात् कार्यका नाश करताहै और वैर व शत्रुद्वारा सदैव कष्ट देताहै ॥ ३६ ॥

परेन्थिहेशोरविमण्डलस्य यदातदेवंप्रवदन्ति-
सन्तः ॥ षष्ठाष्टमस्थेनतुवर्षनाथे महाभयंभूतकृ-
तंचकष्टम् ॥ ३७ ॥ क्रूरःखगोयोऽस्तमितोऽथ-
वक्रीक्रूरस्यवर्गेयदिलग्ननाथः ॥ क्रूरस्तदाभग्न-
मुशन्तितज्ज्ञाः पुरंचवैरंपुरतोविनाशम् ॥ ३८ ॥

अर्थ–मुंथा स्वामी यदि शत्रुघरमें हो और रविमंडलमें (अस्तंगत) होतो भी पूर्वोक्त फल कहना, वर्षस्वामी छठे, आठवें स्थानमें स्थितहोतो प्राणियोंद्वारा महाभय और कष्ट होवै ॥ ३७ ॥ जो क्रूर ग्रह अस्तहो, वक्री हो अथवा क्रूर ग्रहके वर्गमें यदि लग्न स्वामी हो तो वह क्रूर ग्रह रोग करताहै और पुरसे शत्रुता व पुरसे विनाश करताहै ऐसा पण्डितजन वर्णन करतेहैं ॥ ३८ ॥

लग्नेशोऽष्टमगेऽष्टेशतनुस्थेवाकुजेक्षिते ॥ ज्ञजीव-
योरस्तगयोः शस्त्रघातोविपन्मृतिः ॥ ३९ ॥
अब्दलग्नेशरन्ध्रेशौव्ययाष्टहिबुकोपगौ ॥ मथु-
हासंयुतौमृत्युप्रदौतद्धातुकोपतः ॥ ४० ॥

अर्थ–लग्नेश आठवें हो वा अष्टमेश लग्नमें हो मंगलकी उसपर दृष्टिहो और बुध, गुरु अस्तंगतहो तो किसी हथियारके लगनेसे विपत् और मृत्यु प्राप्त होवै ॥ ३९ ॥ वर्षलग्नेश और अष्टमेश ये दोनों बारहवें, आठवें वा चौथे घरमें हो और मुंथायुक्त होतो जो ग्रह अरिष्टजनकहों उनके धातुकोपसे मृत्यु होवै ॥ ४० ॥

यहां सम्बन्ध पापग्रहोंकी कुछ संज्ञा व वर्णन करतेहैं ॥

भार्गवेन्दूजलचरौज्ञजीवौग्रामचारिणौ ॥ राहुक्षितिज-

मन्दार्कान्बुवतेऽरण्यचारिणः॥ ४१॥ प्रभातमिन्दुज-
गुरूमध्याह्नंरविभूमिजौ ॥ अपराह्णंभार्गवेन्दू सन्ध्या-
म्मन्दभुजङ्गमौ॥ ४२॥ पित्तंप्रभाकरक्ष्माजौ श्लेष्मा-
भार्गवशीतगू ॥ ज्ञगुरूसमधातूचपवनौराहुमन्दगौ ॥
॥ ४३॥ कुजार्कौकटुकौजीवोमधुरस्तुवरोबुधः ॥ क्षा-
राम्लौचन्द्रभृगुजौ तीक्ष्णौसूर्यार्कनन्दनौ॥ ४४॥ स्थू-
लइन्दुःसितः खण्डश्चतुरस्रौकुजोष्णगू॥ वर्तुलौसौम्य-
धिषणौ दीर्घौशनिभुजंगमौ॥ ४५॥ (खण्डोर्धचन्द्रा-
कारः)॥ विप्रौशुक्रगुरूक्षत्री कुजाऽर्कौशूद्रइन्दुजः॥ इ-
न्दुर्वैश्यस्स्मृतोम्लेच्छौ सैंहिकेयशनैश्चरौ ॥ ४६॥ र-
क्तवर्णःकुजःप्रोक्तो धिषणःकनकद्युतिः ॥ शुकपिच्छ-
समस्सौम्यो गौरकान्तिरनुष्णगुः॥ ४७॥ युवाकुज-
श्शिशुस्सौम्यश्शशिशुक्रौचमध्यगौ॥ मार्तण्डमन्ददेवे-
ज्यफणिनःस्थविराग्रहाः ॥४८॥ जीवमंगलमार्तण्ड
मुशन्तिपुरुषान्बुधाः ॥ सोमसोमजमन्दाहिभृगुपुत्रा-
स्त्रियोषितः॥ ४९॥ शुक्रेचन्द्रेभवेद्रौप्यं बुधेस्वर्णमुदाहृ-
तम् ॥ गुरौरत्नयुतंहेमसूर्येमौक्तिकमुच्यते ॥ ३५०॥
भौमेत्रपुशनौलौहंराहावस्थीनिकीर्तयेत् ॥ जीवेन्दु-
सौम्यशुक्राःस्युः सौम्याःक्रूराग्रहाःपरे॥ क्षीणेन्दुःक्रूर-
युक्तोज्ञो राहुःक्रूराःप्रकीर्तिताः॥ ५१॥ त्वङ्मांसरो-
म्णांमन्दोथ मज्जास्थ्नांभास्करःप्रभुः॥ कुजोरक्तस्यशु-
क्रस्य भार्गवोमेदसःशशी॥ ५२॥ रविशुक्रौधरासूनुः
स्वर्भानुःसूर्यनन्दनः॥ चन्द्रोबुधःसुरगुरुः प्रागादिदि-

गधीश्वराः ॥ ५३ ॥ सूर्येन्दुजीवाःसत्त्वाख्या ज्ञशुक्रौ-चरजोगुणौ ॥ स्वर्भानुभौमरविजास्तमोगुणमयाः-स्मृताः ॥ ५४ ॥

अर्थ-शुक्र, चन्द्रमा जलचारी, बुध, गुरु ग्रामचारी और राहु, मंगल, शनि, सूर्य ये वनचारी कहेहै ॥ ४१ ॥ बुध, गुरु ये दोनों प्रातःकालमें सूर्य, मंगल ये दोनों मध्यान्हमें, शुक्र, चन्द्र ये दोनों अपराण्ह कालमें, शनि, राहु ये दोनों सन्ध्यासमयमें बली जानना ॥४२॥ सूर्य, मंगल पित्तधातुके और शुक्र, चन्द्रमा श्लेष्म (कफ) धातुके तथा बुध, गुरु सम धातु (वात, पित्त, कफ) के, व राहु, शनि वात-धातुके स्वामी जानना ॥ ४३ ॥ मंगल, सूर्य कटुक रसके और बृहस्पति मधुर रस, तथा बुध कसैला रस और चन्द्रमा, शुक्र, क्षार (खारो), अम्ल (खट्टा) रस और सूर्य, शनि तीव्ररसके स्वामी हैं ॥ ४४ ॥ चन्द्रमा स्थूल, शुक्र खंड, मंगल, सूर्य चौकोन,बुध, बृहस्पति वर्तुलाकार, शनि, राहु दीर्घाकार हैं ॥ ४५ ॥ खण्ड अर्ध चन्द्राकारको कहतेहैं, शुक्र, गुरु ब्राह्मण और मंगल, सूर्य क्षत्री, बुध, शूद्र और चन्द्रमा वैश्य, तथा राहु, शनैश्चर म्लेछ्रसंज्ञक जानना ऐसा कहाहै ॥ ४६ ॥ लालरंग मंगलका कहाहै, बृहस्पतिका सुवर्णकी झलककेसमान और बुधका सुआकी पुच्छके समान, तथा चन्द्रमाकी गोरी कांति कही है ॥ ४७ ॥ मंगल युवा और बुध बालक, चन्द्रमा, शुक्र मध्यम, सूर्य, शनि, गुरु, राहु ये ग्रह वृद्धअवस्थावाले जानना ॥ ४८ ॥ गुरु, मंगल, सूर्य इनको पण्डित जन पुरुषग्रह कहतेहैं और चन्द्र, बुध, शनि, शुक्र स्त्रीग्रहहैं ॥ ४९ ॥ शुक्र, चन्द्रमें चांदीका, बुधसे सुवर्णका विचार करना। गुरूसे रत्नसहित सुवर्ण, सूर्यसे मोतीका विचार कहाहै ॥ ३५० ॥ मंगलसे रांगा, शनि से लोहा, राहुसे हड्डीका विचार करना, गुरु,चन्द्र,बुध, शुक्र ये ग्रह शुभसंज्ञकहैं, शेप सूर्य, मंगल, शनि, क्रूर ग्रहहैं और क्षीण चन्द्रमा,क्रूर ग्रहयुक्त बुध,राहु येभी क्रूर ग्रह कहेहैं॥ ५१॥त्वचा,मांस,रोम

इनका शनि स्वामी है. मज्जा हड्डीका सूर्य प्रभुहै. रक्तका मंगल, वीर्यका शुक्र, मेदाका चंद्रमा स्वामीहै॥५२॥सूर्य पूर्व दिशाका,शुक्र अग्निकोणका, मंगल दक्षिण दिशाका और राहु नैर्ऋत्यकोणका और शनि पश्चिम दिशाका, तथा चन्द्रमा वायव्य दिशाका, बुध उत्तर दिशाका, बृहस्पति ईशान दिशाका स्वामी जानना ॥५३॥ सूर्य, चन्द्र, गुरु ये सतोगुणी, बुध, शुक्र ये दोनों रजोगुणी, तथा राहु, मंगल, शनि ये तीनों तमोगुणमय कहेहैं ॥ ५४ ॥ इस प्रकार ग्रहोंकी संज्ञा वर्णन करी, जहां जैसा प्रयोजन बुद्धि अनुसार जानपडै वहां सूक्ष्मबुद्धिसे विचार करलेना. विस्तारभयसे प्रयोजनको सविस्तर नहीं लिखा ॥

जन्मलग्नाधिपोऽवीर्यो मृतीशोऽब्देऽद्रिगोयदा ॥
सूर्यदृष्टोमृतिंदत्ते कुष्ठंकण्डूंतथापदः ॥ ५५ ॥
अस्तगौमुन्थहालग्ननाथौमन्देक्षितौयदा ॥
सर्वनाशोमृतिःकष्टमाधिव्याधिभयंरुजः ॥ ५६ ॥

अर्थ–जन्मलग्नस्वामी वर्षकालमें निर्बलहो, और वर्षलग्नसे अष्टम स्थानका स्वामी जो वर्षमें सातवें घरमेंहो, सूर्यकी दृष्टिहो तो प्राणीको मृत्यु, कुष्ठ, खाज, तथा आपदाको देताहै ॥ ५५ ॥ जो मुथहास्वामी वर्षलग्नस्वामी ये दोनों अस्तंगतहों और शनिकी दृष्टिहो तो सर्व (स्त्री धन पुत्रादिकका) नाश, मृत्यु, कष्ट, आधि (चिन्ता) व्याधि (रोग) भय, रोग ये होतेहैं ॥ ५६ ॥

क्रूरवीर्याधिकाःसौम्या निर्बलारिपुरन्ध्रगाः ॥
तदाधिव्या धिभीतिःस्यात्कलिर्हानिस्तथावि
पत् ॥ ५७ ॥ नीचेशुक्रोगुरुःशत्रुभागेसौरव्ल
वोऽपिन ॥ लग्नेशेऽष्टमगेष्टेशे तनौवामृतिमादि
शेत् ॥ ५८ ॥

अर्थ-जो क्रूरग्रह अधिकबलीहों और शुभग्रह बलहीनहों, छठे, आठवें स्थानमें स्थितहो तो आधि, व्याधि, कलह, हानि, तथा विपत् यह अशुभफल होवैहैं ॥ ५७ ॥ शुक्र नीच राशिमें हो, गुरु, शत्रु, नवांशकमें हो तो लवमात्रभी सुख नहीं मिलै, तथा वर्षलग्नस्वामी आठवें हो अथवा आठवें घरका स्वामी लग्नमें हो तो उस प्राणीकी मृत्यु कह देवै ॥ ५८ ॥

निर्बलौधर्म्मवित्तेशौ दुष्टखेटास्तनौस्थिताः ॥ लक्ष्मीश्चिरार्जितानश्येद्यदिशक्रोऽपिरक्षिता ॥ ५९ ॥ नीचेचन्द्रेऽस्तगाःसौम्या वियोगःस्वजनैस्सहः ॥ शरीरपीडामृत्युर्वासाधिव्याधिभयंद्रुतम् ॥ ३६० ॥ जन्मन्यष्टमगःपापो वर्षलग्नेरुगाधिदः ॥ चन्द्राऽब्दलग्नपौनष्टबलौचेत्स्याचदामृतिः ॥ ६१ ॥

अर्थ-वर्षमें नवम और द्वितीय भावकास्वामी, यदि बलहीनहों, पापग्रह लग्नमें स्थितहोवै, तो बहुतकाल की संचय कीहुई लक्ष्मीका नाशहो यदि इन्द्रभी रक्षा करै तोभी उस लक्ष्मीकी रक्षानहीं होसकतीहै ॥ ५९ ॥ चन्द्रमा नीच राशिमें हो और शुभग्रह अस्तंगतहो, तो अपने जनोंसे वियोग होवै, अथवा शरीरपीडासे मृत्यु होवै, अथवा वह प्राणी चिन्ता व रोगयुक्त होकर शीघ्र भयको प्राप्त होवै ॥ ३६० ॥ जन्मकालमें जो पाहग्रह आठवें स्थितहो वह पापग्रह वर्षलग्नमें होनेसे रोग और चिन्ताको देताहै और चन्द्रमा तथा वर्षलग्नस्वामी होन बली हो अथवा चन्द्रराशि और वर्षलग्नस्वामी ये दोनों पंचवर्गी बलसे नष्ट बलीहों तो उस प्राणीकी मृत्यु होवै ॥ ६१ ॥

अब्दलग्नाद्व्ययनृजूव्ययार्थस्थौरुजातदा ॥ एवंवर्षाब्दलग्नेशजन्मेशैरपिबन्धनम् ॥ ६२ ॥ क्रूरान्वितेक्षितयुतो शनिनेन्थिहाभिव्याधिमदाजतुषिरिष्फसुखारिरन्ध्रे ॥

द्यूनेचवर्षतनुनैधनगामृतिंसादत्तेखलेक्षितयुतेत्यपिचि
न्त्यमार्यैः ॥ ६३ ॥

॥ इत्यरिष्टविचारः ॥

अर्थ-वर्षलग्नसे मार्गी व वक्रीग्रह वर्षलग्नसे बारहवें व दूसरे हों अर्थात् बारहवें मार्गी पापग्रहहो और दूसरे स्थानमें वक्री पापग्रहहो तो शरीरमें रोगोंकी उत्पत्ति होतीहै, इसी प्रकार वर्षस्वामी और वर्षलग्नस्वामी, व जन्मलग्नस्वामी ये पापी होकर दूसरे बारहवें स्थितहों तो बन्धन (जेलखाना) होवै ॥ ६२ ॥ अब एकश्लोकसे मुथहाकृत अरिष्टयोग कहतेहैं, कि जिसके वर्षमें पापग्रहयुक्त मुंथाको शनि देखताहो वा युक्तहो तो उसको चिन्ता व रोग करतीहै, तथा मुंथा जन्ममें बारहवें, चौथे, छठे, आठवें और सातवें इनमेंसे कहीं होकर वर्षलग्नसे आठवें घरमें होवै और विशेपकरके उसको पापग्रह देखतेहों वा युक्तहों तो वह मुंथा उस प्राणीकी मृत्युको देतीहै, यहभी श्रेष्ठ पण्डितों करके चिन्तवन करना ॥ ६३ ॥ यह अरिष्टफलविचार कहा आगे अरिष्टभंगयोग लिखतेहैं ॥

अरिष्टभंगविचारः

रिष्टानिचेद्वर्षफलेभवन्ति तदावृथावर्षविचार-
णास्यात् ॥ सभङ्गरिष्टस्यविनिर्णयोतशिष्या-
वबोधायनिरूप्यतेत्र ॥ ६४ ॥

॥ अब अरिष्टभंग लिखतेहैं ॥

अर्थ-यदि वर्ष फलमें अरिष्ट ग्रह होतेहैं तो वर्ष विचार वृथा होताहै इस कारण यहां शिष्योंके बोध निमित्त अरिष्ट भंगका निरूपण किया जाताहै ॥ ६४ ॥

केन्द्रत्रिकोणोपगताश्शुभास्यास्सलग्ननाथा-

निधनंनिहन्युः ॥ केन्द्रैसुरेन्द्रस्यगुरुर्बलीया
नमङ्गलम्मङ्गलमातनोति ॥ ६५ ॥

अर्थ-जो शुभग्रह केन्द्र १।४।७।१० अथवा त्रिकोण ५।९ स्थानमें हों और लग्नस्वामी साथमें होतो सम्पूर्ण अरिष्ट दोष नाशकरै. और बृहस्पति यदि केन्द्रमें हो और बलवान्हो तो अमंगलको दूर करके मंगल (शुभफल) का विस्तार करैहै ॥ ६५ ॥

होरायाश्चनिशाकराद्द्विविचरःक्रूरस्त्रिलाभारिगो नूनंपापमपाकरोतिबहुलंवालग्नपालीबली ॥ सौम्यैस्सम्मिलितःकरोतिदलनं रिष्टस्यदृष्टस्तथा सौम्यैर्जन्मनिदेवदेवसचिवोवाभार्गवःकेन्द्रगः ॥ ६६ ॥

अर्थ-यदि लग्न वा चन्द्रमासे क्रूरग्रह तीसरे, ग्यारहवें, छठे स्थित होतो निश्चय अरिष्टका नाश करताहै, अथवा लग्नस्वामी बलीहो तोभी अरिष्टका नाश जानना, अथवा शुभ ग्रहों करके युक्तहो, तथा शुभ ग्रहोंसे दृष्टहो अथवा जन्ममें बृहस्पति, शुक्र केन्द्र १।४।७।१० में हो तोभी अरिष्टका नाश जानना, ॥ ६६ ॥

विलग्नपे सौम्ययुतेक्षितेतद्विलीयतेयत्खलुदिष्टमुक्तम् ॥ बलोपपन्नेनतनुस्थितेन निहन्यतेवाक्पतिनापिरिष्टम् ॥ ६७ ॥

अर्थ-यदि वर्षलग्नका स्वामी शुभग्रहों करके युक्तहो अथवा शुभग्रहों करके देखा जाताहो तो पूर्वोक्त अरिष्ट फलको नाश करताहै और बलवान् बृहस्पति लग्नमें स्थितहो तोभी अरिष्ट फलको दूर करताहै ॥ ६७ ॥

वर्षप्रवेशेवचसामधीशे लग्नेविलग्ने जनिलग्ननाथः ॥ पराक्रमायाम्बुगतःकरोति क्षितिंरिपूणांद्रविणोपलब्धिम् ॥ ६८ ॥

अर्थ-यदि वर्षप्रवेशसमय गुरु वर्षलग्नमेंहो और जन्मलग्नका स्वामी लग्नमेंहो, अथवा तीसरे, ग्यारहवें चौथे स्थानमेंहो तो शत्रुनाश और द्रव्यलाभ करैहै ॥ ६८ ॥

लग्नाधिपोबलयुतः शुभेक्षितयुतोपिवा ॥ केन्द्रत्रिकोणकोऽरिष्टं नाशयेत्सुखवित्तदः ॥ ६९ ॥ गुरुःकेन्द्रेत्रिकोणेवापापादृष्टःशुभेक्षितः ॥ लग्नचन्द्रेन्थिहाऽरिष्टं विनाश्यार्थसुखंदिशेत् ॥ ३७० ॥

अर्थ-यदि लग्नस्वामी बलीहो और शुभ ग्रहसे दृष्ट वा युक्तहो, केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ में प्राप्तहो तो सम्पूर्ण अरिष्टताको नाशकरै और सुख व धनको देवै ॥ ६९ ॥ गुरू केन्द्र १।४।७।१० वा त्रिकोण ५।९ में हो उसको पापग्रह न देखताहो, और शुभग्रह देखताहो तो ऐसा गुरु, लग्न चन्द्रमा व मुंथा इन तीनोंसे उत्पन्न अरिष्ट फलको नाशकरके पीछेसे धन व सुखको देताहै ॥ ३७० ॥

सुखंस्वामियुतंसद्भिर्दृष्टंसौख्ययशोऽर्थदम् ॥ लग्नेतृतीयेऽथगुरुर्जन्मेट्सौख्याऽर्थदःसुखे ॥ ७१ ॥ शुक्रज्ञजीवाहद्देस्वे पापाख्यायगतायदि ॥ स्वबाहुबलतोहेमसुखकीर्तिंनरोऽश्नुते ॥ ७२ ॥

अर्थ-यदि चतुर्थ स्थान अपने स्वामीसे युक्तहो, और शुभ ग्रहोंकरके देखा जाताहो, तो सौख्य, यश व धनका देनेवाला होताहै, तथा बृहस्पति लग्नमें अथवा तीसरे स्थानमेंहो, वा चतुर्थस्थानमें जन्मलग्नका स्वामी विद्यमानहो तो सौख्य व धनका देनेवाला होताहै ॥७१॥ यदि शुक्र, बुध, गुरु, अपने हद्दामेंहो, और पापग्रह तीसरे, ग्यारहवें स्थानमें स्थितहों तो मनुष्य अपने बाहुबलसे सुवर्ण, सुख, कीर्तिको प्राप्त होताहै ॥ ७२ ॥

लग्नद्युनेशस्तनगःसुरेज्यः क्रूरैरदृष्टः शुभमित्रदृ-

ष्टः ॥ रिष्टंनिहन्त्यर्थयशःसुखाप्तिं दिशेत्स्वपा-
केनृपतिप्रसादम् ॥ ७३ ॥

अर्थ-वर्षलग्नमें सप्तम स्थानका स्वामी स्थितहो, उसी लग्नमें गुरुहो और दोनौं (सप्तमेश व बृहस्पति) को पापग्रह न देखतेहों किंतु शुभग्रह व मित्रग्रह देखतेहों तो अरिष्ट दूर करके अपनी दशामें राजाकी प्रसन्नतासे धन, यश व सुखकी प्राप्ति इन सब शुभ फलोंको देतेहैं ॥ ७३ ॥

बलान्वितोधर्म्मधनाधिनाथौ क्रूरैरदृष्टौतनुगौ-
यदास्ताम् ॥ राज्यंगजाश्वाम्बररत्नपूर्णं रिष्ट-
स्यनाशोन्यतुलंयशश्च ॥ ७४ ॥ यदासवीर्य्यौ
मुथहाऽधिनाथो लग्नाधिपोजन्मविलग्नपोवा ॥
केन्द्रत्रिकोणायधनस्थितास्ते सुखार्थहेमाम्बर
लाभदाःस्युः ॥ ७५ ॥

अर्थ-जिसके वर्षमें नवम व धनस्थानका स्वामी बली होकर पापग्रहों करके नहीं देखते हुये लग्नमें स्थितहों तो वह मनुष्य हाथी, घोडे, कपडे व रत्नोंसे परिपूर्ण राज्यको प्राप्तहो और अरिष्टनाश होकर लोकमें अतुल यशको प्राप्त होवे ॥ ७४ ॥ तथा जो मुंथास्वामी वा वर्षलग्नस्वामी, जन्मलग्नस्वामी ये तीनौं बलिष्ठ होकर केन्द्र १।४।७। १० त्रिकोण ५।९ ग्यारहवें और दूसरे इन स्थानोंमेंसे किसी स्थान में स्थितहों तो सुख, धन, सुवर्ण और वस्त्रको देतेहैं ॥ ७५ ॥

त्रिषष्ठलाभोपगतैरसौम्यैःकेन्द्रत्रिकोणायगतैश्चसौम्यैः ॥
रत्नाम्बरस्वर्णयशस्सुखाप्तिर्नाशोप्यरिष्टस्यतनोश्चपुष्टिः॥७६॥

अर्थ-जो तीसरे, छठे, ग्यारहवें पापग्रहहों और केन्द्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ ग्यारहवें शुभग्रहहों, तो रत्न, वस्त्र, सुवर्ण, यश, सुखकी प्राप्तिहो, अरिष्टका नाशहो और शरीरकी पुष्टिहो ॥ ७६ ॥

मुथहायाउपचये सूर्योवाधरणीसुतः॥ तस्मिन्वर्षे शुभंसर्वं सफलं भद्रदायकम् ॥ ७७ ॥ चन्द्रराशीश्वरोलग्नराशिपश्चखलैर्वियुक् ॥ रिष्टंतदा लयंयाति यथान्याधिस्सदौषधैः ॥ ७८ ॥

अर्थ–मुंथासे उपचय ३।६।१०।११ स्थानमें सूर्य अथवा धरणीसुत (मंगल) हो तो उस वर्षमें सम्पूर्ण शुभफल मंगलदायक जानना ॥ ७७ ॥ चन्द्रमाकी राशिका स्वामी और लग्नराशी ये दोनों पापग्रहोंसे रहितहों तो अरिष्टफल नाशहोजाताहै, जैसे रोग औषधियोंसे दूर हो जाताहै ॥ ७८ ॥

यदिशुभाशुभकण्टककोणगा यदथवाङ्गपतिर्बलिकेन्द्रगः ॥ हरतिरिष्टगणङ्गणपार्चनं तनुभृतान्नमतामिवविघ्नजम् ॥ ७९ ॥

अर्थ–यदि वर्षमें शुभग्रह पापग्रह केन्द्र १।४।७।१० कोण ५।९ हों अथवा लग्नस्वामी बलवान् होकर केन्द्र १।४।७।१० में हो, तो अरिष्टफलको नाश करनेवाले जानने, जैसे गणेशजीका पूजन व नमन मनुष्योंके समस्त विघ्नोंको नाश करैहै ॥ ७९ ॥

जीवेविलग्नेतनुपस्सएव त्रैराशिकेशोनभवत्यरिष्टम् ॥ मन्दस्तनोःकेन्द्रगतस्सएव मुशल्लहेशस्त्वशुभंविनश्येत् ।३८०।

अर्थ–गुरु वर्षलग्नमेंहो और वही वर्षलग्नेशहो, और त्रैराशिपहो, तो अरिष्ट नहीं होताहै और शनि वर्षलग्नसे केन्द्र गतहो वही नवांशेशहो तो अशुभफलको विनाश करताहै ॥ ३८० ॥

यदिखलोऽद्तनोश्शशिनोऽथवा त्रिरिपुलाभगतःसबलःशुभैः ॥ बलिभिरीक्षितयुक्चतथाहरेदशुभमामयमायजंभयम् ॥ ८१ ॥

अर्थ–यदि पापग्रह वर्षलग्नसे अथवा चन्द्रमासे तीसरे छठे, ग्यार-

१२वें स्थानमें हो और शुभग्रह बलवान् हो और बलवान् ग्रहोंकरके दृष्ट तथा युक्तहों तो वह पापग्रह अथवा शुभग्रह सम्पूर्ण अरिष्टफल और रोग व रोगसे उत्पन्न भयको हरण करताहै ॥ ८१ ॥

तनुपतिर्यदिवाऽब्दपतिःशुभश्शुभविलोकितयुग्यदिकेन्द्रगः ॥ भृगुसुतोऽथहरेदशुभंबहु कुलमशीलमिवार्यजनैस्तुतम् ॥ बलिभिसौम्यखगेप्यबलेऽशुभेभवतिसर्वशुभन्तनुधारिणाम् ॥ ८२ ॥

॥ इत्यरिष्टभंगविचारः ॥

अर्थ—यदि लग्नस्वामी वा वर्षस्वामी शुभग्रहहो और शुभग्रहसे दृष्ट व युक्त होकर केन्द्र १।४।७।१० स्थानमें प्राप्तहो अथवा शुक्र शुभग्रह दृष्ट युक्त होकर केन्द्रमें हो तो बहुत अरिष्टको नाश करताहै जैसे श्रेष्ठ जनोंकरके प्रशंसित दुःशील कुल सुधर जाताहै और शुभग्रह बली व पापग्रह बलहीनहों तो तनुधारियोंके शुभफल होताहै ॥ ८२ ॥

॥ यह अरिष्टभंगविचार लिखा ॥

मासप्रवेशदिनप्रवेशसाधन.

मासप्रवेशेऽतिशयेनसूक्ष्मंफलंप्रवक्तुन्नहिशक्यतेऽत्र ॥
तेनाऽधुनासद्गुणकोपयुक्तंतत्साधनेऽहंकथयाम्युपायम् ॥ ८३ ॥

अर्थ—मासप्रवेशमें अतिशय करके सूक्ष्म फल विनामास स्पष्ट किये नहीं कहा जासकता है, इस कारण अब सज्जनपण्डितोंके उपकार हेतु मैं मासप्रवेशसाधनोपाय वर्णन करता हूं ॥ ८३ ॥

एकैकभान्वितजनुर्भवभानुतुल्ये भानौऽभवत्स्फुटतरःखलुमासवेशः ॥ एकैकभागयुतभानुसमानभागैःघस्रप्रवृत्तिरथतन्नयनंवदामः ॥ ८४ ॥

अर्थ—अब मासप्रवेश दिनप्रवेश साधनवर्णन करतेहैं एकएकराशि जोडनेसे जन्मकालीन सूर्यके समान सूर्यमें स्पष्ट मास प्रवेश होताहै,

अर्थात् वर्षप्रवेश समयमेंही पहले मासका प्रवेश होताहै, वहां जन्मकालीन सूर्यके समान सूर्य रहतेहैं, यदि दूसरे मासका प्रवेश बनाना होवै, तो उसमें एकराशि जोड़ देवै, उसीसे अंश, कला विकलाओंका समत्व रहेगा, राशिके युक्त होनेपर उस पूर्वके बराबर सूर्य जिस समयमेंहो तभी दूसरेमासका प्रवेश होताहै, ऐसेही एकएक बढ़ानेपर आगेआगेके मासोंका प्रवेश जानो और एकएक अंश जोडनेसे सूर्य समान अंश कला, विकलाओंसे दिनप्रवेश होताहै, अर्थात् अंशोंमें एकएक जोडता जावै, उसीसे कला, विकलाओंका समत्व जिस समयमें हो तभी दिनका प्रवेश होताहै, अब मासप्रवेश, दिनप्रवेशके ल्यावनेका प्रकार कहतेहैं ॥ ८४ ॥

मासप्रवेशजदिवाकरयोस्समीपंपक्तिस्थसूर्यविव
रस्यकलाजवाप्ता ॥ लब्धंदिनाद्यवधिवारमुखे
धनर्णहीनेऽधिकेऽवधिरवौसमयःस्फुटःस्यात् ॥८५॥

अर्थ–मासप्रवेश और दिनप्रवेशसे उत्पन्न सूर्यके समीप पंक्तिमें स्थित सूर्यके अंतरकी कला ओंकोसूर्यकी कलात्मक गतिसे भाग लेनेपर लब्ध दिनादिकको अवधि (पंक्ति) स्थ वारादिमें धन ऋण चालनके अनुसार घटाने बढानेपर मासप्रवेश व दिनप्रवेश होताहै, इसका उदाहरण आगे लिखते हैं ॥ ८५ ॥

मासप्रवेश दिनप्रवेश साधनोदाहरण.

अब मासप्रवेश और दिनप्रवेशका उदाहरण लिखते हैं.

वर्षप्रवेश समय स्पष्ट सूर्य राश्यादि ६।२२।१९।३३ यही प्रथम मासप्रवेश रहा, अब दूसरा मासप्रवेश बनानाहै तो एकराशि जोडनेसे दूसरे मासके प्रवेशका सूर्य राश्यादि ७।२२।१९।३३ यह भया, इसके समीपवर्ती मार्ग शुक्ल तृतीया भौमवारकी अवधि (पंक्ति) में स्थितसूर्य राश्यादि ७।२०।५१।५२ है, यहां पंक्तिस्थ सूर्यसे मास सूर्य आगेहै इस-

कारण पंक्तिस्थ सूर्यको घटाया अर्थात् दोनोंका अन्तर किया, तो धनात्मक अंशादि १।२७।५१। हुये, अव १ अंशको ६० से गुणके २७ जोड दिये तो कलात्मक अंक ८७ हुये, ८७ को ६० से गुणा तो ५२२० विकलात्मक अंक हुये ५१ विकला जोड दिये तो ५२७१ विकलात्मक भाज्य अंक जानना और पंक्तिस्थ सूर्यकी गतिविगति ६१। ११ यहां ६१को ६० से गुणाकर ११ जोडदेनेपर विकलात्मक ३६७१ यह भाजक हुआ, इसी करके भाज्यमें भाग लिया तो लब्ध १ इसको वार समझो, शेष १६०० को ६० से गुणा तो ९६००० हुये इसमें भाजकसे भाग लिया तो लब्ध २६ घडी जानो, शेष ५५४ को ६० से गुणा करनेपर ३३२४० हुये इसमें भाजकसे भाग लेनेपर लब्ध ९ पल जानो, अव यह विचार करोकि मासप्रवेशके सूर्यसे पंक्तिस्थ सूर्य कमतीहै इस कारण लब्ध वारादि १।२६।९ को धन चालन समझकर, पंक्तिस्थ वार आदि ३।४२।५९ में जोड दिया तो ५।०९।८ हुये यह मासप्रवेश वारादि भया, अर्थात् मार्ग शुक्ल पंचमी गुरुवार ९ घटी ८ पलपर द्वितीयमासका प्रवेश संसिद्ध हुआ, इसी प्रकार अन्य तीसरा चौथा आदि मास वनाना, और ऐसेही एक एक अंश वढाते जाना, और कला समान रहें पूर्वोक्त घटी पलको संसिद्ध करते जाना, तो दिनप्रवेश वनते जावेंगे, मासप्रवेश दिनप्रवेश, कालमें ग्रहों और भावोंको साधन करे और पंचवर्गीवल साधन करके पंचाधिकारी रखकर मासपति दिनपतिभी जानकर पूर्वोक्त अनुसार फल कहना, मासप्रवेश व दिनप्रवेशका सविस्तर फलग्रन्थ विस्तार भयसे यहां नहीं लिखागया, और मासदशा प्रकार पूर्व लिखचुके हैं यहां अन्य प्रकारभी लिखदेतेहैं ॥

अर्कघ्नागताऽब्देस्वीयजन्मभागतमासयोःसंख्या॥
ह्यूनांसंयोज्य नन्दतष्टेक्रमान्मासेदशास्यात्॥ ८६ ॥

अर्थ—वारहसे गुणा किये हुये गताब्दमें अपना जन्मनक्षत्र व गत-

मास संख्यामें दो घटाकर जोडदेनेसे नवका भाग लेनेपर शेष मास दशा सूर्यादि गणनासे होती है, यहां दूसरे मासमें दशा ल्यावनाहै तो गताब्द संख्या ३६ को बारहसे गुणा किया, ४३२ हुये फिर गतमास १ जन्मनक्षत्र उत्तराफाल्गुनीकी संख्या १२ मिलाय १३ में २ घटाय ११ को पूर्वोक्त ४३२ में जोड दिया तो ४४३ हुये इसमें ९ का भाग दिया तो शेष २ से दूसरी चन्द्रमाकी मासदशा हुई ॥ यह क्रम मासदशाका कहा, मासदशा प्रमाण आदि पूर्व लिख चुके हैं, दिनदशाका क्रम यहां ग्रन्थ बढ जानेके कारण नहीं लिखाहै ॥ ८६ ॥

द्वितीय मास प्रवेशलग्नम्.

श्री सम्वत् १९५६ शाके १८०१ मार्गेमासि शुक्के पक्षे पंचम्यां तिथौ गुरुवासरेष्टम घट्यादि ९।८ सूर्यराश्यादि ७।२२।१९।३३ तदामकर लग्नोदयेंशगत १५ सप्तत्रिंशति तमे वर्षे द्वितीयमासप्रवेशः २ गतमासः ॥ १ ॥
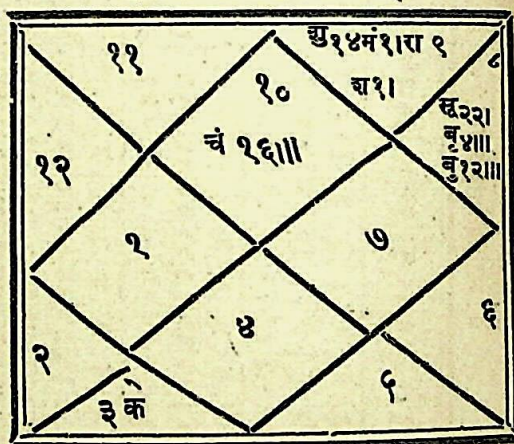
मासप्रवेश साधन करनेके उपरोक्त रीति बहुत श्रेष्ठ है और यद्यपि गणितसे सिद्ध करनेकी रीति सर्व मान्य है, तथापि जिन व्यक्तियोंको विशेष गणित नहीं आता, उनके लिये आगे मासप्रवेशसारणी लिखतेहैं, यह मासप्रवेश सारणी एकदेशीय पंचांगपरसे मासप्रवेश साधन रीत्यनुसार बनाकर लिखीगई है, इस कारण पलोंमें कुछ अन्तर आवेगा सो विद्वानजन अपनी सूक्ष्म बुद्धिसे विचारकर हमारी इस अशुद्धिकी ओर ध्यान नदेंगे और हमारे अपराध को क्षमाकरेंगे, क्योंकि साधारणश्रेणीके पण्डितोंकी प्रार्थनासे यह सारणी बनाकर लिखी गई है, किजिनको गणितमें बहुतही कम अभ्यास है ॥

मासप्रवेशसारणी.

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	५७	५८	४९	०	१	२	३	४	५	७	८	८	९	१०	११
	१३	२२	४१	५६	३१	२७	२५	५५	७	१९	५४	४९	४२	३६	५०
वृषभ	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	२६	२६	२७	२७	२८	२९	३०	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३४
	३	२४	७	५०	३१	१७	२	४४	३	३५	१२	४८	२६	४६	८
मिथुन	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३७	३६	३६
	३८	२७	२८	२६	२६	२७	७	४७	४१	३३	२६	४६	२६	२८	३
कर्क	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	२७	२७	२६	२६	२५	२५	२५	२३	२२	२१	२	१	१०	१९	१८
	५८	१५	३२	३६	६	१५	२२	२५	४०	५२	४	१९	१७	२०	३३
सिंह	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	०	५८	५७	५६	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४८	४७	४६	४४	४३
	२५	४१	१०	५७	५२	५३	५४	४२	३४	१९	१५	९	३	५७	१७
कन्या	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०
	४८	२७	२६	२४	२२	२०	५८	३३	३२	३१	२०	१९	१८	५८	४०

अंशाः	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	१२	१६	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	२१	२२	२३	२४	२५
	५५	०	४०	१८	१६	१७	१६	१३	५५	४३	३१	१८	०	८	६
वृषभ	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३९	३९	३९	३९
	३५	५४	२०	४६	५२	१४	३१	४८	५२	५	१७	२७	०	०	०
मिथुन	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	३६	३५	३५	३५	३४	३४	३४	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२८	२९
	३७	१३	५२	२६	०	२६	४९	२	३२	३१	३१	३१	२५	३९	०
कर्क	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	७	६	५	४	३
	१८	१४	५३	५	५५	४०	४५	५	१	५७	३	८	१	४०	३३
सिंह	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	४२	४१	३९	३९	३७	३६	३५	३४	३२	३१	३०	२९	२९	२	७
	५६	५७	५३	४९	४५	२१	२१	४६	४१	३५	३३	३१	३१	५	०
कन्या	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१
	८	८	७	६	५	४	१	१	०	०	५९	५८	५७	५५	५४
	३४	३०	२६	१२	१८	५७	४६	५६	४	५	१०	१५	४०	३१	४४

तुला	१ ५१ ५०	१ ५१ ५६	१ ५१ ५	१ ५० ७	१ ४८ ४६	१ ४८ २	१ ४७ ११	१ ४६ २	१ ४५ २९	१ ४४ ३९	१ ४३ ५०	१ ४२ ५०	१ ४१ २६	१ ४० ४४	१ ३८ २
वृश्चिक	१ २८ ३३	१ २७ ५५	१ २७ १५	१ २६ २४	१ २६ १०	१ २५ ४१	१ २५ ४३	१ २४ ४३	१ २४ १४	१ २३ ४५	१ २३ ५	१ २२ २६	१ २२ ५	१ २१ ४१	१ २१ ५१
धन	१ १८ २९	१ १८ २६	१ १८ ३४	१ १८ ४८	१ १८ ४१	१ १८ ५४	१ १८ ५७	१ १९ ०	१ १९ ३	१ १९ २३	१ १९ २४	१ १९ ३६	१ १९ ४९	१ २० १२	१ २० १५
मकर	१ २६ ५६	१ २७ ३६	१ २८ ३	१ २८ ३८	१ २९ १४	१ २९ ४९	१ ३० २३	१ ३१ ५८	१ ३२ ५४	१ ३३ २४	१ ३४ ४	१ ३४ ४४	१ ३५ २४	१ ३६ २१	१ ३७ २०
कुंभ	१ ५० २५	१ ५१ १८	१ ५२ १२	१ ५३ ६	१ ५४ ०	१ ५५ ७	१ ५६ १७	१ ५७ १६	१ ५८ १६	१ ५९ १४	२ ० १३	२ १ १२	२ २ २७	२ ३ ४०	२ ४ ३२
मीन	२ २२ ३४	२ २३ ३८	२ २४ ४४	२ २५ ४८	२ २७ ३०	२ २८ ३७	२ २९ ४१	२ ३० ४६	२ ३१ ४८	२ ३२ ५३	२ ३३ ५७	२ ३५ ३८	२ ३६ ४४	२ ३७ ५१	२ ३८ ४९

तुला	१ ३९ २	१ ३८ २०	१ ३७ ५८	१ ३८ ६	१ ३६ ३१	१ ३५ ४६	१ ३४ १	१ ३४ ९	१ ३३ ३१	१ ३२ ३०	१ २९ ३१	१ ३० २७	१ ३० ४८	१ २२ ११	१ २५ ०
वृश्चिक	१ २० ५३	१ २० २९	१ २० ५	१ १९ ४१	१ १९ १८	१ १९ ५६	१ १९ ३२	१ १९ ४८	१ १९ ४	१ १८ ५७	१ १८ ४७	१ १८ ४३	१ १८ ४२	१ १९ ३९	१ १९ ३५
धन	१ २० २८	१ २० ४७	१ २१ १५	१ २१ ३६	१ २१ ५१	१ २२ १८	१ २२ ३८	१ २३ २०	१ २४ ३०	१ २४ ४८	१ २४ ३५	१ २५ २	१ २५ २६	१ २५ ५६	१ २६ ४
मकर	१ ३८ ६	१ ३८ ५०	१ ३९ ३४	१ ४० १८	१ ४० २	१ ४३ ७	१ ४३ ६	१ ४३ ५१	१ ४५ ४१	१ ४५ ४१	१ ४६ ३१	१ ४७ ११	१ ४८ १७	१ ४८ ३३	१ ४९ ३३
कुंभ	२ ५ ३३	२ ६ ३५	२ ७ ३७	२ ८ ३९	२ १० २८	२ ११ २२	२ १२ २४	२ १३ २६	२ १४ २६	२ १५ ३०	२ १६ ३२	२ १७ ३९	२ १८ २४	२ २० १९	२ २१ ०
मीन	२ ४० ५०	२ ४१ १२	२ ४२ १८	२ ४४ ५१	२ ४५ ४७	२ ४७ ५६	२ ४८ ५	२ ४९ १४	२ ५० २३	२ ५२ ३७	२ ५३ ५	२ ५३ ५२	२ ५४ ५६	२ ५६ ५५	२ ५६ ४४

सारणीपरसे मासप्रवेशसाधन.

सारणीपरसे मासप्रवेशसाधनकी रीती यह है, कि तीस अंश और मेषादि बारहराशि लिखी हैं, जिस राशिके जितने गतांश सूर्यके वर्षप्रवेशहों, उनके नीचेके वार घटी पलोंमें वर्षप्रवेशसमय वार घटी पलको जोडनेसे द्वितीयमासप्रवेश वार घटी पल जानना, जैसे वर्षप्रवेश वारादि ३।३४।५९ में तुलाके सूर्यके २२ गत अंशके नीचेके वारादि १।३४।९ को युक्त किया तो ५।९।८ बृहस्पतिवारको घटी ९ पल ८ पर द्वितीय मास जानना ॥

जन्मलग्नाद्वर्षलग्नज्ञान.

समाख्यात्रिनिघ्नाद्विधाशून्यरामैरवाप्तंफलं
चार्कराशीषुयुक्तम् ॥ ततोभानुभिर्भक्तशेषेण
वाच्यं ततोजन्मलग्नाद्भवेदब्दलग्नम् ॥ ८६ ॥

अर्थ—जन्मलग्नसे वर्षलग्नज्ञान वर्णन करते हैं, वर्तमान वर्षसंख्याको तीनसे गुणाकरके दो स्थानमें स्थापित करना, प्रथम स्थानवालेमें तीसका भाग देकर लब्ध फल द्वितीय स्थानवाले अंकोंमें युक्त करदेना और बारहका भाग देकर शेष जो अंकहो उस संख्याकी लग्न जन्मलग्नसे गणना करनेपर होती है, अर्थात् शेष अंक जन्मलग्नसे गिनकर जो हो वह वर्षलग्न कहाना, जैसे वर्तमान वर्ष ३७ को ३ से गुणाकिया तो १११ हुये इसको दो स्थानमें रक्खा, पहले वालेमें ३० का भाग देकर लब्ध फल ३ को दूसरे स्थानवाले १११ में युक्त करनेपर ११४ हुये इसमें १२ का भाग दिया तो शेष ६ यहां जन्मलग्न मकर है, मकरसे छठी मिथुन वर्षलग्न हुई ॥ ८६ ॥ परन्तु यह रीती सामान्य है, क्योंकि अंशोंकी न्यूनता व अधिकतासे एकराशि आगे पीछेभी हो जाती है ॥ ८६ ॥

पूर्ववर्षादग्रिमवर्षप्रवेशसाधन.

शशीबाणचन्द्रैः कुरामैः खरामैर्युतं पूर्ववर्षोद्भवं वासराद्यम् ॥
भवेदग्रिमो वर्षवेशस्तदानीं तिथिर्योजितं शंकरैर्जायतेऽत्र ॥८७॥

अर्थ–अब पूर्ववर्षसे आगेके वर्षप्रवेशका साधन करतेहैं, पूर्ववर्षके वार आदिकमें १।१५।३१।३० जोडनेसे आगेवाली वर्षका वारादि होताहै, अर्थात् वारमें १ और घटीमें १५ और पलोंमें ३१ और विपलोंमें ३० जोडदेना, तिथिमें ११ जोडना, यहां योगमें १० नक्षत्रमें १० और लग्नमें ३॥ जोडनेका मत किसी किसी पण्डितका है ॥ ८८ ॥

उदाहरण— पूर्ववर्ष वारादि ३।३४।५९ है, अब आगेका वर्ष इसीपरसे ल्यावनाहै वो वारादि १।१५।३१।३० युक्त करदिये, युक्त करनेपर ४।५०।३०।३० यह आगेका वर्षप्रवेश वारादि हुआ, अर्थात् सम्वत् १९५७ मार्गकृष्ण प्रतिपदा बुधवारको घटी ५० पल ३० विपल ३० पर आगेवाला वर्षप्रवेश हुआ, पूर्ववर्ष चतुर्थीगत पंचमीमें प्रवेश हुआथा तो ५ में ११ जोडनेसे १६ सोलहवी तिथि शुक्क प्रतिपदासे गणनापर प्रतिपदा कृष्ण पक्षकी हुई, इसी दिन तुलाके सूर्यके २२ अंशगतहैं, योग आदिमें अंक जोडनेका मत सामान्यै॥८७॥

प्रश्नोपरिवर्षप्रवेशसाधन.

जननसमयलग्नाज्ञातभावेसुधीभिर्विधिवदमल-
पृच्छाकाललग्नं प्रसाध्यम् ॥ शुभफलमशुभंवा
कीर्तयेत्सर्वमस्मान्निगदितवदुदाराच्छास्त्रबुद्धे-
र्विचारात् ॥ ८८ ॥

अर्थ–अब जिसका जन्मसमय ज्ञात नहो उसका वर्षसाधन प्रश्नपरसे लिखते हैं, कि यदि जन्मसमयका लग्न अज्ञातहो, तो विधिपूर्वक

प्रश्नसमयकी लग्नको स्पष्ट करै, उसीके द्वारा शास्त्रके अनुसार अपनी उदारबुद्धिसे शुभफल अथवा अशुभफल भलीभाँति वर्णनकरै ॥ ८८ ॥

यत्प्रश्नलग्नंप्रथमेप्रदिष्टं वर्षप्रवेशस्यतदेवलग्नम् ॥
तस्माच्चतुर्थाधिपतिश्चजन्मविलग्ननाथःकथि-
तोबलार्थम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–जो प्रश्नलग्न प्रथम कहीगई वही वर्षप्रवेशको लग्न कहीहै, उससे चतुर्थस्थानका स्वामीबल जाननेके अर्थ जन्मलग्नका स्वामी कहाहै ॥ ८९ ॥

पृच्छाविलग्नस्यविहायराशीन्विभाजयेदंशकलाकला-
पम् ॥ खबाणचन्द्रैरिहराशिपूर्वंफलंविलग्नान्मुथहा-
स्थितिः स्यात् ॥ ९० ॥ ॥ अथवा ॥ तत्कालप्रश्न-
लग्नस्यकलिकाःखाक्षभू १५० हृताः ॥ लब्धारा
श्यादिकामुन्थाप्रश्नपत्रेभवेत्स्फुटा ॥ ९१ ॥

अर्थ–प्रश्नलग्नकी राशिको छोडकर अंश, कलाके कलाओंके समूहको १५० से विभाजित करै अर्थात् भागलेवै लब्धराश्यादिक फल प्रश्नलग्नसे मुथहाकी स्थिति होतीहै ॥ ९० ॥ अथवा तत्काल प्रश्नलग्नकी कला करके १५० का भागदेवै लब्ध राश्यादिक अर्थात् जो लब्ध होगा वही मेषादिक्रमसे तात्कालिक मुंथा प्रश्नपत्रमें स्फुट होतीहै ॥ ९१ ॥

प्रश्नाऽर्कतुल्योऽग्रिमवर्षभानुर्यदातदाऽब्दस्य
भवेत्प्रवेशः ॥ तत्कालहोराखचराऽनुसारंवर्षे
विचारंविदधीतधीमान् ॥ समीक्ष्यकेषांचि

दिदम्मतंवामयाहिसंसूचितमत्रसम्यक् ॥ ९२ ॥

अर्थ–जब प्रश्नसमयके सूर्यके तुल्य अग्रिम वर्षभानु हों उसी समय वर्षका प्रवेश होता है. तात्कालिक लग्न और ग्रहोंके अनुसार वर्षमें विचार कर बुद्धिवान् शुभाशुभ फलका निर्देश करै, यह मैंने कुछ आचार्योंका मत देखकर यहां भलीभाँति सूचित किया है॥९२॥ यहां उदाहरण विस्तार होनेके कारण नहीं लिखाहै ॥ ९२ ॥

ग्रन्थसमाप्तिसमय.

वर्षेसप्तशराङ्कभूपरिमिते पौषेदशम्यांसिते
सोमे श्रीधरसूनुसद्गुणयुतश्रीकृष्णलालाज्ञया ।
एतद्वर्षप्रदीपकंप्रगटितंनारायणेनादरात्
सत्सोदाहरणंप्रमोदजनकंभाषान्वितंवृत्तिदम् ॥ ९३ ॥

अर्थ–श्रीमन्महाराजा विक्रमादित्यके सम्वत् १९५७ में पौषशुक्ल दशमी सोमवारके दिन पण्डित श्रीधरजीके पुत्र समीचीनगुणयुक्त श्रीकृष्णलालजी (जो बम्बईमें ज्ञानसागर छापखानाके अध्यक्षयहैं तिन) की आज्ञासे ज्योतिर्वित्पण्डित नारायण प्रसादमिश्रजीने आदरपूर्वक सुन्दरभाषाटीका व सरल उदाहरणोंसहित आनन्दको प्रगट करनेवाला तथा वृत्ति (जीविका) को देनेवाला यह वर्षदीपक प्रकाशित किया ॥ ९३ ॥

प्रार्थना.

अशुद्धंयत्किञ्चित्प्रविलिखितमत्राल्पकुधिया
बुधैस्तत्संशोध्यंपरमकृपयाद्रोहरहितैः ।
यतोयाचेसर्वानखिलगुणविज्ञान्सुविबुधान्
कृपांयूयंदद्धं पदकमलसेवाऽनुशरणः ॥ ९४ ॥

अर्थ- यहां (इस पुस्तकमें) मेरी अल्पबुद्धिकरके लिखा भया जो कुछ अशुद्ध रहगयाहो सो विद्वज्जन द्रोहरहित होकर अपनी परम दयालुतासे कृपापूर्वक शुद्ध करलेवैं, इसीसे समस्त गुणोंके ज्ञाता सम्पूर्ण बुधजनोंके चरणकमलोंकी शरणहूं, आपलोग मुझपर कृपा करैं यह मेरी प्रार्थना है ॥ ९४ ॥

भावार्थ यह कि यह ग्रन्थ अविशीघ्रतापूर्वक लिखा गया इस कारण जहां मनुष्यधर्मानुसार त्रुटि रहगई हो उसको पण्डितजन सुधारलेंगे और मेरे अपराधको क्षमा करेंगे ॥

ग्रन्थसमर्पण.

लक्ष्मीपुरे वरेल्यां च नारायणमुकुन्दकौ।
ताभ्यां ज्योतिषग्रन्थोऽयं श्रीधराय समर्पितः ॥ ९५ ॥

अर्थ-लखीम पुर (खीरी अवध) तथा बांसवरेलीमें संस्कृत पुस्तकालयके स्वामी पण्डित नारायण प्रसाद मुकुन्दरामजी तिन दोनोंने यह 'वर्षपत्रीदीपक' नाम ज्योतिषग्रन्थ भाषाटीका उदाहरणसहित बम्बईमें श्रीधर शिवलाल ज्ञानसागर छापाखानाके अर्थ सर्वाधिकारसहित समर्पण किया ॥ ९५ ॥ मूल श्लोकसंख्या ३९५॥

॥ इति श्रीमद्वंशावरेल्यां तथा लखीमपुरस्थ संस्कृतपुस्तकालयस्वामी ज्योतिर्वित्पण्डित नारायण प्रसादेन लिखितं वर्षपत्रीदीपकं समाप्तम् ॥

॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

वर्षपत्रीदीपकका शुद्धाशुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
४	२१	रुण्डालं	शुण्डालं
६	६	वर्षप्रवेश	वर्षवेश
७	६ गतवर्ष	०।३३।८।००	००।३३।९।००
८	९५ गतवर्ष	१।५८।३७।३०	१।५९।३७।३०
१०	२२	विष्कम्भादि	विष्कुम्भादि
१०	२६	सम्वत् १८२०	सम्वत् १९२०
११	१	योगः	योग
११	९	सम्वत् १८५६	सम्वत् १९५६
११	१०	सम्वत् १८२०	सम्वत् १९२०
११	१८	तीनेसे	तीनसे
११	२३	३९८।१९	३९८।१०
१२	५	पांचमीं	पांचवीं
१२	१५	वीसवा	वीसवां
१२	१७	विष्कम्मं	विष्कुम्मं
१२	१९	विष्कम्भ	विष्कुम्भ
१९	८	क्रमपूर्वक	क्रमपूर्व
२०	२४	नक्षत्र	नक्षत्रे
२०	२५	योग	योगे
२०	२५	धृतियोगः	धृतियोगे
२३	१३	मं. कं. वि.	मं. क. वि.
२३	२२	लिखेगे	लिखेंगे
२४	१	निजक्ष	निजक्षे
२४	२२	गुणेहुत	गुणेहुये
२७	१८	दोसौं	दोसौ
२८	१२	सातवी	सातवीं
३१	२३	वा तस्मरणं	वात स्मरणं
३३	८	ठीकहे	ठीकहै
३३	१२	शषे	शेष
३३	१४	अर्थः	अर्थ—
३४	१	भोग्यां शोपरसें	भोग्यांशों परसे
३४	६	गुणादिया	गुणाकिया
३४	९।१०	३०३।३०३	३२३।३२३
३४	२७	द्वितीभावमें	द्वितीयभागमें
३७	३	अवश्यमें व	अवश्यमेव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३९	९	१०।२७।२९।४९	१०।२७।२९।१८
४२	१३	अंविहा	अंथिहा
४२	२२	तो यहां	यहां
४३	४	इष्ट	दृष्ट
४५	७	सप्तेमे	सप्तमे
५०	१	सातवी	सातवीं
५१	२०	घटे	घटे
५२	१०	श २	श ६
५६	१८	तुलाक	तुलाके
६१	१५	वर्षेशमाहात्म्य	वर्षेशफलमाहात्म्य
६१	१९	तर्भेमेंदै	तैमेंभेंदै
६२	८	स्थाता	स्थाना
६२	१३	मुमि	भूमि
६२	१९	मनुष्योंका	मनुष्योंको
६३	४	लढाई	लडाई
६६	१	पूर्णा	पूर्ण
६८	१०	वो	तो
६८	२	कलाय	कलाप
७२	२०	एकादश	अष्टम
७५	५	श्व	श्व
७८	७	रति	रीति
७८	२०	रहैं	रहे
८०	१२	गताद्वा	गताब्दा
८०	१४	मद्दे	मब्दे
८०	१५	खिशति	खिंशति
८१	५	नवका भाग देवै	दोघटाकरन.९काभागदेवै
८४	७	लिख देते हैं	लिखेदेतेहैं
८५	३	सर्वज्ञ	सर्वक्ष
८५	४	याद्दसं	यदाप्तं
८५	७	स्वगस्य	खगस्य
८५	११	गताद्वा	गताब्दा
८७	१२	बहुतैंहै	बहुतैहै
९०	८	न्याघं	न्यार्घ
९०	१२	सर्वाकी	सर्वाको

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९८	११	त्रिसे	त्रीसे
१०१	७	साथहो	साथहों
१०२	५	आनन्द बुद्धि	आनन्द वृद्धि
१०२	८	वढाई	वडाई
१०३	१०	रोपणां	रोपणं
१०५	६	(द्रुतीय)	(द्वितीय)
१०५	६	स्थत	स्थित
१०७	७	दद्यात्सम्य भाग्य	दद्यात्सम्यग्भाग्य
१११	१२	नराणाः	नराणा
११५	११	परीक्षणांच	परीक्षणंच
११५	१२	जनयत्य वश्याम्	जनयत्यवश्यम्
११७	४	प्रान्त	प्रान्त्य
११७	९	च्छ्रा	च्छला
११८	५	सुनसुखेत	सुतसुखेन
११९	१	(सप्तन)	(सप्तम)
११९	३	द्रव्यालाभहो	द्रव्य लाभहो
१२०	१	वाहनानी	वाहनानि
१२०	९	अग्रभय	उग्रभय
१२०	१९	चितस्य	चित्तस्य
१२१	२२	उशनसू	उशनसि
१२३	४	(खरीदेने)	(खरीदने)
१२३	५	अती व	अतीव
१२४	६	चितिन्ता	तिचिन्ता
१२४	१३	कोड़ा	क्रोडा
१२५	११	तहो	हो
१२६	३	स्फुर्ति	स्फूर्ति
१२८	१३	शरीरमें	शरीर
१२८	२१	जाती है	जातीरहै
१२९	१	स्थितहो	स्थितहो
१३१	२	चिन्तां	चिन्ता
१३१	१४	पुंत्सां	पुंसां
१३१	१७	आग्नि	अग्नि
१३३	१७	अरिष्टाको	अरिष्टोंको
१३४	६	मुथहशे	मुथहेशे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	१३	आरिष्टं	अरिष्ट
१३८	२३	सम्बन्ध पाप	सम्बन्ध पाय
१३८	२३	व वर्णन	वर्णम
१४१	५	कहे है	कहेहैं
१४१	१६	म्लेछ्र	म्लेच्छ
१४२	२२	ल्ल	ल
१४५	१७	निह्युयते	निह्नूयते
१४६	५	कोऽरिष्टं	गोऽरिष्टं
१४८	७	लग्नराशी	लग्नराशि
१४८	२४	यजंभयम्	मयजंभयम्
१४९	१३	धनुधारियोंके	तमुधारियोंको
१४९	१७	सद्गुणकोपयुक्त	सद्गुणकोपयुक्तं

पं० श्रीधर शिवलाल
ज्ञानसागरछापाखाना
मुम्बई.